सूर्यपुत्र

सूर्यपुत्र

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

सूर्यपुत्र

(उपन्यास)

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-344-2779-0

दाम : 400 रूपया

सर्वाधिकार सुरक्षित © : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पहिल संस्करण :2025

लेखक :रबीन्द्र नारायण मिश्र

प्रकाशक:श्रीमती आशा मिश्र

House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave

Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida

District: Gautam Buddha Nagar

UP: 201315

M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

Suryaputra(**सूर्यपुत्र**); A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra. एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि । कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति एवम् रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि ।

समर्पण

स्वर्गीय चन्द्रधर मिश्र(काका)क

स्मृतिमे ई पोथी सादर सप्रेम हुनके समर्पित

लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

जन्म तिथिः२ जनबरी १९५४(प्रमाण पत्र)

२४ अगस्त १९५२(जन्मपत्र)

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह

मातृक : सिन्धिआ ड्योढ़ी

वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)/

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे

प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रकाशित कृति :

मैथिलीमे:-

प्रकाशन वर्ष:2017

१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा),२.'प्रसंगवश' (निवंध)३.'स्वर्ग एतहि अछि'(यात्रा प्रसंग),

प्रकाशन वर्ष:2018

४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2019

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2020

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

प्रकाशन वर्ष:2021

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2022

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३. संयोग(कथा संग्रह) २४. नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2023

२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास) २६.ठेहा परक मौलायल गाछ(उपन्यास) २७.पटाक्षेप(उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2024

२८ माटि बजा रहल अछि(यात्रा प्रसंग) २९ जयतु जानकी(उपन्यास)

३० यज्ञसेनी(उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2025

३१.कथा अखन बाँकी अछि(संस्मरण) ३२. गाछ बजैत छैक(कथा संग्रह)
३३.सूर्यपुत्र(उपन्यास)

In English: -

Year of publication:2018

1. The Lost House (Collection of short stories)
2. Life is an art

3.The Ganges Whispers (English translation of my Maithili Novel,Ham Aabi Rahal Chhee (हम आबि रहल छी)

हिन्दी में –

प्रकाशन वर्ष:2019
१.न्याय की गुहार

सूर्यपुत्र ,उपन्यास साहित्यिक कृति थिक। एहि उपन्यासमे उद्धृत कैकटा प्रसंग,कथानक जनश्रुतिपर आधारित अछि, जकर ऐतिहासिकता प्रमाणित नहि कएल जा सकैत अछि। एहिमे लेल गेल कैकटा नाम,ठाम आ कथानक काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

सूर्यपुत्र

१

युगान्तक कथा

ई कथा अछि एकटा एहन महापुरुषक, जिनकर जीवन विद्रोहक गीत छल, जिनकर मौन शंखनादसँ बेसी गुंजित होइत छल, आ जिनकर पतन दुर्बलतासँ नहि, अपितु धर्म-अधर्मक सुविधाजनक व्याख्याक दुखद परिणति छल। हुनकर हृदय स्वयं एक युद्धभूमि छल—जतए बाह्य संग्रामक संग-संग, अंतरात्माक द्वंद्व निरंतर चलैत रहल। जन्मक रहस्य,माता द्वारा परित्याग आ समाजक पक्षपातपूर्ण व्यवहार हुनकर आत्मा पर अनन्त घाओ उत्पन्न करैत रहल। तथापि, ओ घाओसभ हुनकर शौर्य आ पुरुषार्थकेँ दुर्बल नहि कए सकल,अपितु तेज, तप आ संकल्पक प्रतीक बनि गेल। ओ जीवन भरि अपमानक विष पीबि कए उदारताक अमृत बटैत रहलाह। ओ सदिखन शत्रुकेँ सेहो उचित सम्मान देबाक धर्मक निर्वाह केलनि। सही मानेमे हुनकर जीवन एकटा अनुत्तरित प्रश्न छल, जे न्याय आ अन्यायक रेखकेँ बहुत पातर कए दैत अछि।

प्रभातक पूर्व निस्तब्ध क्षणमे—जखन समस्त सृष्टि निद्रामे निमग्न छल, ताहि परम एकान्तमे एक दिव्य पुरुष—भाग्यक द्वारि पर निश्चल भावेँ उपस्थित भेलाह। राजसी आभूषणसँ नहि, अपितु देवगण प्रदत्त दिव्य कवच,कुण्डल आ तिरस्कारक पीड़ासँ आवृत, ओ महान आत्मा छलाह—सूर्यक संतान,महायोद्धा कर्ण, जे प्रतिकूल परिस्थितिओमे आत्मगौरवक दीप

सदैव प्रज्वलित रखने रहलाह। जनमितहि ओ क्षितिज दिस दृष्टि गड़ौने रहथि, जतए विधाता हुनकर भाग्यक रेखा अंकित कए रहल छलाह। सूर्यपुत्र होइतहु, हुनकर जीवन दुर्भाग्यक गहन अंधकारमे डूबल छल। मानवीय अन्यायक अंधकारमे विसर्जित, हुनकर आत्मा निष्ठा, गर्व आ विषादसँ भरल छल— जे हुनकर अन्तर्मनकेँ सतत उद्वेलित करैत रहलनि।

भगवान कृष्ण हुनका अपन जन्मक रहस्यसँ अवगत करओलखिन आ आग्रह केलखिन जे ओ पाण्डवक पक्षमे आबि जाथि। मुदा ओ अपन वचनकेँ तोड़ि नहि सकलाह। दुर्योधन संग संबंध हुनकर जीवनक एक अटल स्तंभ छल—निष्ठाक एहन प्रतिमान, जकरा इतिहासक न्यायो पूर्ण रूपेँ नहि चिन्हि सकल। मित्रता हुनका लेल मात्र सामाजिक संधि नहि,अपितु आत्मिक समर्पणक गाथा छल। ओ जनैत छलाह—कौरव पक्षक नीति संदेहास्पद अछि,मुदा हुनकर व्रत, वचन आ मित्रता—एहि सभसँ ऊपर छल।

इतिहास हुनका सूर्यपुत्र कहलक, मुदा जनमानस हुनका हृदयपुत्र मानलक—एकटा एहन योद्धा, जे पराजयक मध्य अपन गौरवकेँ सदिखन जीवन्त रखलाह। कर्णक जीवन एकटा दीपक समान छल—जे सभकेँ इजोत दैत रहल, मुदा स्वयं तेलमे सदिखन जरैत रहल। अन्ततः, ओ रणभूमिमे हारलाह नहि, अपितु मित्रताक अपन संकल्पक रक्षार्थ जीवनकेँ उत्सर्ग कए देलाह।

२

कुंती-दुर्वासा प्रसंग

दूपहर रातिक समय,ऊपरसँ भयाओन मेघ लागल। आकाशमे रहि रहि कए बिजलौका चमकि रहल छल। चारू कात निस्तव्ध वातावरण छल। कतहु,केओ नहि देखा रहल छल। मुदा राज महलक एक भागमे अखनहु

चहल -पहल छल। कुंतीक पिता ई सोचि प्रसन्न छलाह जे साल भरिक बाद कािल्ह अन्हरोखे ऋषि दुर्वासा हुनका ओहिठामसँ प्रस्थान करथिन। राज महल एहि अवसरपर विशेष रूपसँ सतर्क छल जाहिसँ सभकिछु ठीक-ठाक रहए। ऋषिवर सुखद वातावरणमे ओहिठामसँ चलि जाथि।

कुंती आइ भोरे सँ सजि-धजि रहल छलीह। ऋषि दुर्वासाक संग हुनकर आइ अंतिम भेंट छनि। साल भरिसँ कुंती हुनका संगे दिन-राति लागल रहलीह। ऋषिक कोनो वंधन नहि छलनि। कखन की आदेश दए देथि। कुंती बिना कोनो संकोचकेँ हुनका लग पहुँचि जाइत छलीह। बेसक ओ दुपहर राति होइक । आइ अंतिम दिन सेहो हुनका संतुष्ट कए बिदा करबाक चिंता कुंतीकेँ परेसान केने छलनि। ताहि लेल ओ बहुत नीकसँ सजल-धजल छलीह। हरियर-पियर साड़ी आ गुलाबी रंगक ब्लाउज पहिरने ,ऊपरसँ नीचाँ धरि अनेक प्रकारक स्वर्णाभूषणसँ सुसज्जित, गौर वर्ण ,पैघ-पैघ आँखि,हृष्ट-पुष्ट देह कुंती अद्भुत सुंदर लागि रहल छलीह। एतेक रातिमे ओ दुर्वासा ऋषिक लेल भोजन बना रहल छलीह।

“हम अहाँक समर्पण आ सेवासँ बहुत प्रसन्न छी।”

“अहाँ ई की कहि रहल छी। ई तँ हमर कर्तव्य छल। हम अपन पिताक आदेशक पालन कए रहल छलहुं।”

“की अहाँकेँ हमरा संग नीक नहि लागल?की अहाँकेँ मोनमे आनन्द नहि भेल?”

कुंती समर्थन आ स्वीकृतिमे मुड़ी हिला देलीह। हुनकर आननपर परम प्रसन्नता छलनि।

ऋषिवर भरिपोख भोजन केलनि। बड़ी काल धरि ओ कुंतीक संग गप्प-सप्प करैत रहलथि। आब हुनकर जएबाक समय लगीच छलनि। जाइत-जाइत ओ कुंतीकेँ आशीर्वाद दैत कहलखिन—

“हम अहाँकेँ एकटा विशिष्ट मंत्र दैत छी। एकरा नीकसँ राखब,बिसरब नहि। बेर पर बहुत काज आओत अहाँकेँ।”

“एहि मंत्रक की विशेषता छैक महर्षि?”

“एकर प्रयोगसँ अहाँ अपन पसिंदक कोनो पुरुषक आवाहन कए सकैत छी,ओकर संतानक माता बनि सकैत छी।”

महर्षिक बात सुनि कुंती लाजे कठौत भए गेलीह। हुनकर परेसानी साफे झलकि रहल छलनि। से बात बुझि महर्षि हँसि देलखिन। कहलखिन-

“अहाँ परेसान नहि होउ। अहाँ चाहबैक तखने एहि मंत्रक बलेँ केओ अहाँ लग आबि सकत। यदि अहाँ ककरो बजा लेबैक तँ बाते आओर।”

कुंती की बजितथि? महर्षिकेँ प्रणाम केलनि आ चुपचाप अपन भवन दिस चलि गेलीह। दुर्वासा ऋषि सेहो अपन गंतव्य दिस चलि गेलाह।

ऋषि दुर्वासा द्वारा कुंतीकेँ देल गेल ई वरदान अचूक छल । संपूर्ण महाभारत ओहिसँ प्रभावित भेल। एक मानेमे भारतक भविष्ये बदलि गेल।

३

कर्णक जन्म

दुर्वासा ऋषि द्वारा देल गेल मंत्रक बारेमे कुंतीक उत्सुकता बढ़िते जा रहल छलनि। ओ सदिखन ओकरे बारेमे सोचैत रहथि। बात एहन छलैक जे ओकरा बारेमे ककरो कहलो नहि जा सकैत छल। मंत्र आ ओकर अमोघ शक्तिक जानकारी गोपनीय छल। कुंती छलीह अपरिपक्व, जीवनक उठा-

पटकसँ एकदम अनभिज्ञ। अपना भरि जतेक प्रयास करथि जे मंत्रपर सँ ध्यान हटनि,ततबे जोरसँ मोन ओहीपर चलि जानि। किछु फुरेबे नहि करनि जे की करी। केना एहि संकटसँ जान बँचाबी।

एक दिन अहल भोरे कुंती अपन कोठरीसँ बाहर प्रकृति दर्शन कए रहल छलीह। भगवान भास्कर क्षितिजसँ ऊपर उठि रहल छलाह। हुनकर रश्मि शनैः-शनैःपृथ्वीपर पसरि रहल छलनि। माहौल अत्यंत सुरम्य आ शांत छल। सम्पूर्ण दिशामे एकटा स्वर्णिम आभा दृष्टिगत भए रहल छल। गाछ-वृक्षक पातसभपर ओसक बुन्नीसभ चमकि रहल छल, लगैत छल जेना प्रकृति नूतन दिवसक स्वागतमे अपन नेत्र सजओने अछि। आकाशमे उड़ैत पंछीक पाँतिसभ जीवनमे नव आशाक संचार कए रहल छल। कोइलीक मधुर ध्वनि आ चिड़ै-चुनमुनक कलरव वातावरणकेँ संगीतमय बना देने छल। राजमहलक प्रांगणमे हरियर दूभिपर पड़ैत सूर्यक किरण लगैत छल जेना ओ सोनाक चद्दरि ओढ़ने होइक। लोकसभ धिरे-धिरे अपन दिनचर्या आरम्भ कए रहल छल—कोनो गोटे पोखरिमे स्नान करैत, कोनो गोटे तुलसीक चौरा पर दीप जरबैत छल। प्रातःकालक समय शुद्धता, नूतनता आ जीवनक उत्सवक प्रतीक सन लागि रहल छल। लोकसभक मोन स्फूर्तिसँ भरल छल। लागि रहल छल जेना प्रकृति अपन समस्त सौंदर्यसँ पृथ्वीवासीक जीवनमे उमंग भरि रहल छथि।

प्रातःकालक एहन स्वर्णिम दृश्यक रचनाकार भगवान भास्करक तेजस्विता देखि कुंती मोहित भए गेलीह। ओहि समयमे ओ एसगरि रहथि। लाख प्रयास करथि मोन ओहि दृश्यसँ हटबे नहि करनि। घंटा भरिसँ बेसीए बीति गेल,ओ ओतहि टहलैत रहि गेलीह। ओहने समयमे कतहु फटकी केओ मधुर रागमे गीत गाबि रहल छल। एहने मे कुंतीक मोनमे तरह-तरहक विचार उत्पन्न होमए लगलनि। हुनकर ध्यान दुर्वासा ऋषि द्वारा देल गेल मंत्रपर चलि गेलनि।

“किएक ने एकरा एक बेर जाँचिए लेल जाए?”

“यदि ई सही साबित भेल ,मंत्रक प्रभावसँ आहूत व्यक्ति आबिए गेलाह,तखन. . .?”

“तखन के तखन देखल जेतैक. . .।”

कुंती कोठरीमे पलंगपर बैसि गेलीह ।तकर बाद विधिवत ओहि मंत्रक उच्चार करैत सूर्य भगवानक स्मरण केलनि। परिणाम तुरंत सामने छल। भगवान भास्कर अद्भुत स्वरुपमे ओहि एकान्त भवनमे उपस्थित भए गेलाह। ओहिठाम अचानक एकटा अद्भुत ,तेजोमय,संस्कारसंपन्न युवककेँ देखि कुंती सकपका गेलीह। बुझेबे नहि करनि जे की करथि। हुनका अस्तव्यस्त देखि भगवान सूर्य स्वयं आगू बढ़ि प्रणय निवेदन केलखिन। हुनकर बात सुनि कुंती बहुत अधिक परेसान भए गेलीह। ओ घबड़ा कए बजैत छथि-

“हम तँ मात्र प्रयोग कए रहल छलहुँ।”

“मुदा हम तँ आमंत्रित कएल गेल छी, वापस नहि जा सकैत छी।”

“हम तँ कुमारि छी। हम ई सभ केना कए सकैत छी। यदि हम गर्भवती भए गेलहुँ तँ अनर्थ भए जाएत। राजकुलक प्रतिष्ठा माटिमे मिलि जाएत। अहीं कहू हम एहन हालतिमे की करू?”

“आब से सभ सोचबाक समय नहि बाँचल अछि। हम एतबहि कहि सकैत छी जे अहाँक संतान बहुत प्रतापी होअताह। एकर बादो अहाँक कौमार्य अक्षुण्ण रहत। अहाँक यश,प्रतिष्ठामे कोनो कमी नहि होएत। आब देरी नहि करू।”

“मुदा हम तँ एहि सभ लेल कदापि तैयार नहि छी।”

“अहाँ द्वारा आमंत्रित केलाक बादे हम एहिठाम उपस्थित भेल छी। समस्त देवतागण हमरा देखि रहल छथि आ हमरापर हँसि रहल छथि। आब

यदि अहाँ मना करब तखन परिणाम भोगब। अहाँ सभक विनाश निश्चित अछि। हम अहाँकेँ,दुर्वासाकेँ आ अहाँक पिताकेँ श्राप देबाक लेल वाध्य भए जाएब।"

"हमरा कारण हमर पिताक अनिष्ट होनि से कदापि उचित नहि होएत।"

आखिर भगवानसूर्य कुंतीक संपर्कसँ कुंती गर्भवती भए गेलीह। भगवान सूर्य कुंती दिस एक बेर फेर देखलनि,हुनका फेरसँ आशीर्वाद देलनि आ संतुष्टभावसँ चलि जाइत रहलाह।

ओमहर कुंतीक हाल-बेहाल छलनि। भगवान भास्करक चलि गेलाक बाद ओ दिन भरि परेसान रहलीह। ओ रातिओ मे सुति नहि सकलीह। आगन्तुक शिशुक कल्पनासँ हुनकर मोन रहि-रहि कए रोमांचित होइत रहलनि।

"जकरा जे कहबाक होउ से कहओ,हम एहि आनन्दकेँ बिसरि नहि सकैत छी।"

"भगवान सूर्यसँ संपर्क कोनो मामुली बात थोड़े छल।"

"अद्भुत अछि दुर्वासा ऋषिक देल मंत्र।"

"मुदा समाजकेँ की कहबैक?कोना बुझेबैक जे ई संतान हमरे अछि जकर पिताक चुनाओ हम स्वयं केने छी?"

"अहाँ बिसरि रहल छी जे अहाँ कुमारि कन्या छी। यदि ई बातसभ पिताकेँ पता चललनि तखन की होएत?ओ कतेक अपमानित हेताह?"

"संतान अपन भाग्य लए कए जन्म लैत अछि। ओकरा केओ कम-बेसी नहि कए सकैत अछि। पहिने ओकर जन्म तँ होउक। फेर देखल जेतैक। ओकर प्रतापी पिता निश्चित रूपसँ ओकर भावी जीवनक व्यवस्था करथिन।"

इएहसभ सोचैत-सोचैत भोर भए गेल। चारू कात लोकसभ अपन-अपन काजमे लागि गेल। मुदा कुंती अखनहु असगरे अपन कोठरीमे करौट बदलि रहल छलीह। कुंतीक माताकेँ चिंता भेलनि। ओ धायकेँ कुंतीक कक्षमे पठओलखिन।

“कुंती अखन धरि उठल नहि। ओ तँ भोरे अपन नित्यकर्म कए पूजामे लागि जाइत छलि। कहि नहि,आइ ओ अखन धरि किएक सुतले अछि? कनी जा कए देखही तँ।”

धाय नहु-नहु कुंतीक केबाड़केँ खटखटबैत छथि। मुदा भीतरसँ कोनो उत्तर नहि अबैत छनि। ओ कनी काल ओतहि ठाढ़ रहि जाइत अछि। तथापि ओहि कोठरीसँ किछु संकेत नहि अबैत अछि। फेर अचानक ओकर ध्यान केबाड़ दिस जाइत अछि।

“केबाड़ तँ खुजले बुझाइत अछि। एना तँ कहिओ नहि रहैत छल। ओ केबाड़केँ कनीके जोरसँ धकिअबैत अछि। केबाड़ खुजि जाइत अछि।”

अचानक धायकेँ कोठरीमे आएलि देखि कुंती हड़बड़ा कए उठि जाइत छथि।

“की बात छैक?आइ बड़ी काल धरि सुतले रहि गेलहुँ?मोन ठीक अछि ने?माए प्रतीक्षा कए रहल छथि।”

कुंती किछु बजबाक प्रयास करैत छथि,मुदा बाजि नहि पाबि रहल छथि। मोसकिलसँ पलंगपरसँ नीचाँ उतरि जाइत छथि। हुनकर देहदशा देखि धाय छकित छलि। मोनमे तरह-तरहक विचार आबि रहल छैक।

“कोठरीक केबाड़ खुजले अछि। हिनकर देहदशा से विचित्र छनि। ओ ओछाओनसँ उठि नहि पाबि रहल छथि। बात किछु गड़बड़ बुझा रहल अछि।”

धाय बहुत अनुभवी छलि। ओकरा जे बुझबाक छलैक,से बुझि गेल छलि। मुदा ई सभ भेलैक कोना?ई प्रश्न बेर-बेर ओकर मोनकेँ हिलोड़ि रहल छलैक। मुदा ओ किछु बजालि नहि,कुंतीकेँ टोकलकनि नहि। कुंती सेहो किछु नहि बजलनि। हुनका लग बाजबाक लेल रहनि की? ओ सोझे शौचालय चलि गेलीह। ओमहर धाय कुंतीक माए लग जाइत छथि।

“की हाल छनि कुंतीक?”

“ठीके छथि। थोड़ेकालमे आबि जेतीह। ताबे हम हुनकर जलखै तैयार करैत छी।”

“बहुत देरी भए गेलनि।”

थोड़े कालक बाद कुंती भोजनालयमे पहुँचैत छथि। ओ अखनहु सुस्त लागि रहल छथि। धाय हुनका जलखै परसि दैत छथिन। संगमे माए सेहो जलखै करैत छथिन। कओ कुंतीकेँ चुप देखि पुछैत छथि-

“मोन ठीक छौ ने?”

कुंती किछु जबाब नहि देलखिन। हुनका जलखै रुचिगर नहि लागि रहल छलनि। कनी-मनी जलखै केलाक बाद ओ जल्दीए बिना किछु बजने अपन कोठरीमे वापस चलि जाइत छथि।

४

जल प्रवाह

राज भवनक एकान्त कक्षमे कुंतीक कोरामे नवजात शिशु छनि । जन्मेसँ ओकर कानमे कुण्डल देहमे कवच विद्यमान अछि। ओ देखबामे अतिशय तेजस्वी लागि रहल अछि। “सभ किछु तँ नीके लगैत छैक। मुदा हम एकरा केना पालि सकब?केना सहि सकब समाजक कुचक्र?” लोकलाजसँ कुंती बेहाल छथि। ओ अपन संतानकेँ बेर-बेर निहारि रहल छथि । कुंतीक

मनोदशाक अंदाज धायकेँ नीकसँ छलैक। ओ हुनकर सभ खिस्सा जनैत छलनि। पछिला दस माससँ हुनकर स्थिति,परिस्तिथिकेँ गोपनीय रखने छलनि। मुदा आब तँ सत्य सामने आबि चुकल अछि। कुमारि कुंतीकेँ संतान जन्म लए चुकल छनि। ओ सएहसभ सोचि-सोचि परेसान छथि। एतबहिमे एकटा कठोर शब्द सुनबामे अएलनि-

"कुंती! ई समय सोच-विचारक नहि अछि। जल्दी करू। बाकस आबि गेल अछि। हमसभ एकरा बाकसमे राखि लगीचक नदीमे बहा दिऐक। बस इएहटा विकल्प बाँचल अछि। यदि एहिमे विलंब भेल तँ भोर भेने की सभ सुनब आ की की देखब तकर कल्पनो नहि कएल जा सकैत अछि।"

आगू-आगू कुंती आ हुनका संगे बाकस लेने धाय हस्तिनापुरसँ सटले अश्व नामक छोट सन नदी लग पहुँचैत छथि। बाकस बहुत सुरक्षित बनाओल गेल छल। ओ छोट-छिन नाओ सन छल। ओहिमे कोनो प्रकारसँ पानि नहि जा सकैत छल। शिशुक रक्षाक समस्त व्यवस्था ओहिमे कएल गेल छल। बाकसमे नवजात शिशुकेँ रखबासँ पूर्व कुंती ओकरा बेर-बेर दुलार करैत छथि। ओकरा स्तनपान करबैत छथि। एहिमे हुनका अपार सुख भेटि रहल छनि। एक क्षणक लेल ओ सभ किछु बिसरि जाइत छथि। हुनका नहि मोन रहि जाइत छनि जे ई संतान हुनका लग नहि रहि सकतनि,ओ आएले अछि चलि जएबाक लेल। ओ ओकरा देखि-देखि भावविभोर भए जाइत छथि। समय कोना बितैत अछि से पता नहि लागि रहल छनि। हुनका एना बेसुध देखि धाय चेतौनी दैत छनि-

"विलंब नहि करू। भोरुकबा उगि गेल अछि। हमसभ यदि देरी करब तँ मोसकिलमे पड़ि सकैत छी।"

धायक बात सुनि कुंती जोर-जोरसँ कानए लगैत छथि। फेर बहुत मोसकिलसँ अपनाकेँ संतुलित करैत छथि। ओहि शिशुकेँ बाकसमे नीकसँ सुता

दैत छथि। ऊपरसँ नूतन पीत वस्त्र राखि दैत छथि। एक बेर पुनः ओकर मुँह देखैत छथि आ धायक सहयोगसँ ओकरा नदीमे बहा दैत छथि। से करैत हुनकर हृदय हाहाकार कए उठैत छनि-

केहन हम अभागलि
पोषण केलहुँ अपन रक्तसँ
जकरा दस मास धरि
नुकओने रहलहुँ गर्भमे
से आइ जन्मल
कवच-कुण्डल सहित
तेजस्वी मुख मण्डलसँ
आलोकित अछि आङन
हम छी अतिशय प्रसन्न
वालकक भविष्य सोचि
चिंतित भए जाइत छी
लोक की कहत?
की कहबै समाजकेँ
ई सभ कोना भेलै?
के मानत हमर बात
के करत हमरापर विश्वास
माता-पिता छथि अनभिज्ञ
एहि प्रसंगसँ

की सहि सकताह ?

की अपन प्रतिष्ठा लेल

देताह प्राणदण्ड

एक दिस जनमौटी बच्चाक मोह

दोसर दिस समाजक भय

नहि देखा रहल अछि कोनो व्योंत

टपि गेल छी

लक्ष्मण रेखा स्वयं

फल के भोगत?

अछि हमर अपराध

सोचथि कुंती वारंबार

नोर रूकिते नहि छनि

शिशु अछि सर्वथा निर्दोष

केना वाँचत एकर प्राण?

केना जीबि सकब सकलंक?

केहन दुर्भाग्य अछि हमर?

एहन तेजस्वी संतान

जकर जन्मपर

हमर माता-पिता करितथि उत्सव

बजैत नगाड़ा,नचैत नटुआसभ

नातिक जन्मोत्सवमे बँटितथि स्वर्णमुद्रा
लोक भए जाइत नेहाल
मुदा हाय रे भाग्यक खेल
केओ नहि अछि हमरा लग
धाय जे शुरूएसँ अछि हमरा संग
जनैत अछि ई रहस्य
सेहो अछि विवश
केहन निर्मम छी हम
अपने हाथे नवजात शिशुकेँ
बहा रहल छी नदीमे
धकेलि रहल छी मृत्युक मुँहमे ।
मोने-मोन दुर्वासा ऋषिकेँ
दैत छथि उपराग
ने हमरा ओ दितथि ई मंत्र
ने हम करितहुँ एहन काज
ने हमर पिता पठबितथि
हुनकार सेवामे
ने खिस्सा धरैत एहन रूप
की करू?
हम छी विवश,एकदम विवश

समाजक सामना करबासँ असमर्थ

नहि अछि हमरा लग कोनो विकल्प

निर्दयी छी हम

माए नहि छी

सापिन बनि गेल छी

हे हमर अभागल संतान

बकसि दिअ हमरा

अपन भविष्य अपने गढ़ू

ईश्वर अहाँक रक्षा करथि!

ओहि भयाओन रातिक एकान्तमे धायक संगे मिलि कुंती द्वारा कएल गेल अपराध हुनकर जीवन भरि पछोड़ करैत रहलनि। बहुत महग पड़लनि हुनका ई विकल्प।

५

अधिरथ-राधा

जनमौटी बच्चाकेँ जल प्रवाह कए, ओकरा अपन भाग्यपर छोड़ि, अत्यंत दुखी मोनसँ कुंती धायक संगे राज महल दिस बढ़ि जाइत छथि। नदीसँ घर वापस जाइत काल हुनकर देह जेना सुन्न पड़ि गेल छनि, रक्त संचार थमि गेल छलनि। हुनका आगू-पाछू अन्हारे-अन्हार लागि रहल छलनि। ओ बड़ी काल धरि नदीमे ऊपर-नीचाँ होइत ओहि बाकसकेँ देखबाक प्रयास करैत रहि गेलीह। आकाशमे मेघ लागल छल। रहि-रहि कए बिजलौका चमकि रहल छल। तकरे प्रकाशमे ओ बाकस देखा जाइत छलनि। फेर ओ अन्हारमे विलुप्त भए जाइत छलनि। आखिर नदीक तेज धारमे बहैत-बहैत ओ विलुप्त भए

गेल। कुंती ठोह पारि कए कानए लगलीह। कुंतीक दुखक अंते नहि छनि। रहि-रहि कए ओ कानि रहल छथि। हुनकर आँखिक नोर सुखेबाक नामे नहि लए रहल छनि। हुनकर ई हालति देखि धाए सेहो दुखी भए गेलि। ओ हुनका बुझेबाक बहुत प्रयास केलक—

"अहाँ चिंता किएक करैत छी? ओ कोनो साधारण वालक नहि अछि। ओकर पिता स्वयं सूर्य भगवान छथि। की ओ अपन शिशुकेँ ओहिना छोड़ि देथिन?कदापि नहि। अहाँकेँ नियतिपर,ओहि वालकक भाग्यपर विश्वास करबाक चाही। अहाँ आर कइए की सकैत छी?ई कोनो सामान्य घटना नहि थिक। असाधारण समस्याक समाधानो तँ तेहने होएत?"

धायक बातक कुंती की जबाब दितथि? ओ सभ किछु सुनैत रहि गेलीह। ओ बहुत मोसकिलसँ धाएक पाछू-पाछू चलबाक प्रयास करैत रहलथि। एहने हालतिमे कुंतीकेँ अपन कोठरीमे पहुँचा धाए राजमहले मे बाहर बनल अपन कोठरीमे चलि गेलि। कुंती धराम दए पलंगपर खसि पड़लीह। ओ एसगरि ओहि कोठरीमे पड़ल-पड़ल कनैत रहि गेलीह,एक्को क्षणक लेल हुनका आँखि नहि लगलनि। बहुत मोसकिलसँ कनीक झपकी लगलनि कि सपनामे सूर्य भगवानक देखेलखिन। ओ अद्भुत सुंदर लागि रहल छलाह। हुनकर देहसँ अपूर्व तेज निकलि रहल छलनि। हुनका देखितहु कुन्ती डरा जाइत छथि। ओ बाजि उठैत छथि-

"अहाँ फेर. . .।"ओ कुंतीकेँ आश्वस्त करैत कहैत छथिन-

"हम एकटा बहुत नीक समाचार कहबाक लेल आएल छी।"

"आब हमरा लेल की नीक सामाचार होएत?"

"हम अहाँक दुख बुझैत छी। परंतु,दुखकेँ पकड़ि कए जीवन नहि चलि सकैत अछि। जे भावी छल से भेल। आगूओ भाग्य अपन खेल करबे

करत। तकरा केओ नहि रोकि सकैत अछि। मनुक्खक कर्तव्य छैक जे ओ वर्तमानमे जीबए। जे समस्या आबि गेल अछि तकर समाधान करए,ने कि ओहिमे ओझराएल रहि जाए।”

“तखन अहीं कहू जे एहि परिस्थितिमे की कएल जाए?हम अपन निर्दोष संतानकेँ नदीमे बहा देलहुँ अछि। एहि पापसँ हमरा कोना मुक्ति भए सकैत अछि?हमर आत्मा परेसान अछि। हम चिंतित छी ओहि शिशुक भविष्य लेल। ओ जीबो करत की नदीक तेज धारमे डुबि जाएत।”

“हम अहाँक चिंताक समाधाने करबाक लेल आएल छी।”

“तँ बजैत किएक ने छी?”

“अहाँक पुत्र पूर्णतः सुरक्षित छथि। हम निरंतर हुनकर रक्षा कए रहल छिअनि। अहाँकेँ ई जानि बहुत प्रसन्नता होएत जे ओ चंपा नगरीक राजा अधिरथ लग पहुँचि गेल छथि। हुनकर पत्नी राधा हुनका पाबि अत्यन्त प्रसन्न छथि। असलमे ओ सभ निःसंतान रहथि। भगवानसँ दिन-राति संतानक लेल प्रार्थना करैत छलाह। आखिर,हुनकर प्रार्थना सुनल गेलनि।”

“मुदा ई सभ भेलैक कोना से विस्तारसँ कहू।”

“अहाँ जखने ओहि बाकसकेँ नदीमे प्रवाहित केलहुँ,तखनेसँ हम स्वयं ओकर रक्षामे लागल रही। हमर तेजस्वी रश्मि ओकरा चारूकातसँ घेरने रहल। ओ बहैत-बहैत इटाबा लग जमुना नदीमे पहुँचि गेल। तकर बाद प्रयागमे गंगा नदीमे मिलि गेल। ओकर यात्रा आगू बढ़ैत रहल। ओ पाटलिपुत्र होइत अंगदेश पहुँचल। ओहिठाम चंपा नगरीक राजा अधिरथ सपरिवार स्नान कए रहल छलाह। ओ बाकस देखि छगुन्तामे पड़ि गेलाह। ओकर चारूकात अद्भुत प्रकाश निकलि रहल छल। बाकससँ एकटा नवजात शिशुक कनबाक

अबाज आबि रहल छल। से सुनि हुनकर प्रसन्नताक अंते नहि छलनि। ओ मोने-मोन कहलनि-

"लगैत अछि भगवान हमर प्रार्थना सुनि लेलनि। "

अधिरथ अपन चाकरसभकेँ बाकसकेँ नदीक जलसँ सुरक्षित निकालबाक आदेश दैत छथि। ओ सभ बहुत सावधानीपूर्वक बाकसकेँ नदीसँ बाहर करैत अछि। ताधरि ओहि नेनाक कानबाक अबाज अधिरथक पत्नी राधा धरि पहुँचि गेल रहनि। ओ तुरंत ओहिठाम पहुँचि जाइत छथि, बाकससँ ओहि शिशुकेँ बाहर निकालैत छथि। नेनाकेँ देखितहि हुनकर स्तनमे तुरंत दूध निकलि जाइत छनि। ओ आनन्दपूर्वक शिशुकेँ स्तनपान करबैत छथि। ई दृश्य देखि अधिरथ राधाक प्रसन्नताक अंते नहि छलनि। ओ सभ ईश्वरकेँ वारंबार धन्यवाद दैत छथि। शिशुक नाम वसुषेण रखैत छथि।"

भगवान सूर्यक मुँहे ई समाद सुनि कुंती बहुत खुस भेलथि।तखने हुनकर निन्न टूटि जाइत छनि। ओ पलंगपर उठि बैसैत छथि।ओ सपनाक दृश्य सोचि-सोचि मंत्रमुग्ध छथि।

६

कर्णक पालन-पोषण

कर्णकेँ जन्मेसँ कानमे सोनक कुण्डल आ छातीमे कवच छलनि। हुनका ई सभ हुनकर पिता जन्मसँ पूर्वे गर्भे मे देने रहथिन। एहि कवच-कुण्डलसँ निरंतर अमृतक वर्षा होइत रहैत छल । ओकरा अछैत कर्णकेँ केओ मारि नहि सकैत छल,हरा नहि सकैत छल। ओ अजेय छलाह,अमर छलाह। ऊपरसँ भगवान सूर्य अपन संतानक रक्षार्थ निरंतर तत्पर रहैत छलाह। कोना ने रहितथि?जखन साधारणो लोक अपन संतानक लेल दिन-राति एक कए दैत अछि तँ ओ तँ सर्वशक्तिमान,श्र्ष्टिक संचालक भगवान सूर्य छलाह। हुनके

उगने दिन आ चलि गेलासँ राति भए जाइत अछि। जिनका बलैं पृथ्वीक समस्त जीव-जन्तुकैं ऊर्जा भेटैत अछि,जे कनी एमहर-ओमहर होइत छथि तँ ऋतु परिवर्तन भए जाइत अछि,तिनकर संतानक कथीक चिंता?

कर्णकैं अधिरथ आ राधाक ओहिठाम सुरक्षित देखि भगवान सूर्य बहुत प्रसन्न भेलथि। ओ ई समाचार कुंतीकैं सपनामे कहि देलखिन। ई समाचार सुनितहि कुंतीक मोनसँ चिंता हटि गेलनि,लगलनि जेना ओ एकटा नूतन दुनिआमे पहुँचि गेल छथि जतए ओ छथि,सूर्य छथि हुनकर नवजात संतान कर्ण छथिन जे आब अधिरथ राधाक ओहिठाम आनन्दपूर्वक रहि रहल छथि। कुंतीक मोनसँ अपराधबोध आब समाप्त भए गेल छनि। अखन धरि ओ कर्णक जीवन रक्षाक लेल चिंतित रहैत छलीह। हुनका होनि जे ओ अपन नवजात शिशुक संग अमानवीय व्यवहार केलनि। ओकरा एकदम असहाय अवस्थामे नदीमे बहा देलनि। मुदा आब हुनकर चिंता कम भए गेल छलनि। ओ फेरसँ अपन दिनचर्याक मोताबिक काज कए रहल छथि। हुनकर व्यवहारमे एहि परिवर्तनसँ हुनकर माता-पिता सेहो बहुत प्रसन्न छथि।

ओमहर अधिरथ राधाक प्रसन्नताक अंते नहि अछि। ओ सभ दिन-राति वसुषेणक सुख-सुविधामे लागल रहैत छथि। हुनकर स्वास्थ्यक लेल जरूरी व्यवस्था करैत रहैत छथि। वसुषेण क्रमशः पैघ होइत छथि। हुनकर स्वाभाविक रुचि अस्त्र-शस्त्रमे छनि। ओ से बात अपन पिता अधिरथकैं कहितो छथिन। अधिरथ अपन पत्नी राधाक संग एहि विषयमे विमर्श करैत छथि।

“वसुषेण आब पैघ भए रहल छथि। हुनका उचित शिक्षा-दीक्षाक जोगार जरूरी अछि।”

“हम हुनका बिना एक क्षण नहि रहि सकैत छी। एतेक मोसकिलसँ तँ हमरा संतान भेल अछि। आब एकर वियोग हम नहि सहि सकैत छी।”

“जाहिसँ संतानक भविष्य नीक होनि से करब माता-पिताक परम कर्तव्य थिक। ओ उच्च शिक्षा प्राप्त करताह,पैघ आदमी बनताह,जीवनमे यश-प्रतिष्ठा अर्जित करताह,एहिसँ पैघ बात आर की भए सकैत अछि? ताहि लेल हमरासभकेँ अपन सुखकेँ यदि तिलांजलि देबए पड़ए तँ से सहर्ष देबाक चाही।”

हुनकर बात सुनि राधाक आँखि नोरसँ भरि जाइत छनि। तथापि,ओ कहैत छथिन-

“निःसंदेह हमरासभकेँ अपन कर्तव्यक पालन करबाक चाही। अहाँक आगूक की योजना अछि?”

“कर्णक इच्छानुसार हम हुनका अस्त्र-शस्त्रक शिक्षा दिआबक व्यवस्था करए चाहैत छी। हस्तिनापुरक राजा धृतराष्ट्र हमर मित्र छथि। हुनका ओहिठाम गुरु द्रोणाचार्य आचार्य छथिन। ओ यदि कर्णकेँ अपना संगे राखि लेथि तँ बहुत नीक हेतनि। ओतए कर्णक अभिलाषा पूर्ण भए सकतनि।”

“तखन एहिमे विलंब की?”

“पंडितजीसँ नीक दिन देखा कए हमसभ शीघ्र हस्तिनापुर प्रस्थान करब।”

“अबस्स। शुभस्य शिघ्रम्।”

अधिरथ वसुषेणकेँ बजबैत छथि आ हुनका द्रोणाचार्यसँ शिक्षा लेबाक लेल हस्तिनापुर जएबाक प्रस्ताव दैत छथि। राधा सेहो ओतहि बैसल हुनका दिस देखि रहल छथि,साइत एहि उम्मीदमे जे ओ किछु आर नीक विकल्प उपस्थित करथि जाहिसँ हुनका संगे रहबाक संभावना होइ। मुदा ओ तँ ई प्रस्ताव सुनितहि प्रसन्न भए गेलाह।

“ई तँ बहुत नीक होएत।हम हुनका बारेमे बहुत दिनसँ सुनि रहल छी। हमरासभकेँ जल्दीए प्रस्थान करबाक चाही।”

“ठीक।”

७

हस्तिनापुर प्रस्थान

अधिरथ संगे वसुषेण हस्तिनापुर बिदा होइत छथि। दू दिन पहिनेसँ राधा वसुषेणक लेल पाथेय बना रहल छथि। हुनकर पसिंदक जलखै,भोजनक सामग्रीसभ बना रहल छथि जाहिसँ वसुषेणकेँ रस्तामे कोनो कष्ट नहि होनि। ओ अपन परिवारक पारंपरिक परिधान पहिरने छथि। अधिरथ आ वसुषेण आब हस्तिनापुरक यात्रा करताह। ताहि लेल रथ आबि गेल अछि। रथपर सबार होएबाक लेल ओ सभ आगू बढ़ैत छथि कि राधा भोकासी पारि कए कानए लगैत छथि। हुनकर चित्कार सुनि अधिरथ परेसान भए जाइत छथि। तरह-तरहसँ हुनका बुझेबाक प्रयास करैत छथि। मुदा राधा किछु नहि बजैत छथि। ओ अपना भरि संयत रहबाक प्रयास करैत छथि। अपन भावनाकेँ वशमे रखबाक लेल चेष्टा करैत छथि। वसुषेण हुनका लग आबि जाइत छथिन। ओ बहुत सिनेहसँ राधाक कोरामे बैसि जाइत छथि। अपना भरि राधाकेँ बुझेबाक प्रयास करैत छथि-

“माते! हम तँ विद्या प्राप्त करबाक लेल जा रहल छी। अखनुका समयमे द्रोणाचार्य विश्व भरिमे प्रतिष्ठित छथि। हुनकासँ शस्त्र-अस्त्रक शिक्षा प्राप्त करबाक सौभाग्य हमरा भेटि रहल अछि,एहिसँ पैघ बात की भए सकैत अछि?”सभ प्रकारसँ सुयोग्य भेलाक बाद हम अहाँ लोकनिक सेवामे वापस आबि जाएब। हमरा योग्य भेलासँ अहाँ लोकनिक यश आ कीर्तिमे बृद्धि होएत। अस्तु,हमरा प्रसन्नतापूर्वक हस्तिनापुरक लेल बिदा करू।”

वसुषेणक बात सुनि राधा आश्वस्त होइत छथि । हुनका अपन हृदयसँ साटि लैत छथि। बहुत आनन्दपूर्वक हुनका बिदा करैत छथि-

"यद्यपि अहाँकेँ चलि गेलासँ हमरा सुन्न तँ लगबे करत,मुदा तँ की? अहाँ जाउ,अबस्स जाउ आ गुरु द्रोणाचार्यसँ विद्या ग्रहण करू। हमरा लोकनिक आशीर्वाद सदति अहाँक संगे अछि आ रहत।"

वसुषेण माताकेँ प्रणाम कए अधिरथ संगे रथपर हस्तिनापुरक लेल बिदा भए जाइत छथि। राधा अपन घरक कोनटा लग ठाढ़ि भेल रथकेँ देखैत रहि जाइत छथि। हुनकर आँखिसँ नोरक प्रबाह रूकिते नहि छनि। ओ ओहिना ठाढ़ि रहि गेलथि जाधरि ओ रथ अदृश्य नहि भए गेल। फेर वापस कोठलीमे आबि पलंगपर खसि पड़लीह। ओतए पड़ले-पड़ल हुनका निन्न पड़ि जाइत छनि। निन्नेमे ओ बड़बड़ाइत रहैत छथि,सपनाइत छथि। सपने मे ओ देखि रहल छथि-

एकटा भयाओन युद्धक दृश्य। वसुषेण ओहि युद्धक नायक छथि। चारूकात लोकक लहास पड़ल अछि। वसुषेण असगरे लड़िते जा रहल छथि। ऐं ई तँ भगवान कृष्ण लागि रहल छथि। हुनका संगे रथपर के छनि? ओ हुनका की कहि रहल छथिन?ओ तँ वसुषेणपर ब्रह्मास्त्रक संधान कए रहल छथि। ई दृश्य देखितहि ओ सुतले मे चिचिआ उठैत छथि। हुनकर चिकरब,भोकरब सुनि प्रहारीसभ दोड़ि कए ओतए आबि जाइत अछि। ताधरि राधाक निन्न टूटि चुकल छनि। ओ सपनाक अर्थ नहि बूझि पाबि रहल छथि। मुदा चिंतित छथि। आखिर एहन सपना ओहो आइए किएक देखलनि?

ओमहर वसुषेण पिता अधिरथक संगे हस्तिनापुरक यात्राक आनन्द लए रहल छथि। रस्ता भरि अधिरथ हुनका हस्तिनापुरक बारेमे ,ओहिठामक राजा,लोक-वेद आ गुरु द्रोणाचार्यक बारेमे बतबैत रहलथि। पाण्डव कौरवक बारेमे ,हुनका लोकनिक युद्ध कौशलक बारेमे जानकारी दैत रहलखिन। जेना-

जेना ओ से सभ कहथिन, वसुषेणक उत्सुकता आर बढ़ल जानि। ओ सोचथि जे कतेक जल्दी हस्तिनापुर पहुँचि जाइ। रस्तामे अबैत-जाइत मनमोहक प्राकृतिक दृश्य देखि हुनकर मोन आनन्दित भए जाइत छलनि। बीच-बीचमे ओ किछु-किछु गबितो रहैत छलाह। से सुनि-सुनि अधिरथ बहुत प्रसन्न रहथि। आब सूर्यास्त लगीच छल। भगवान भास्कर अपन रश्मि समेटि रहल छलाह। अधिरथ एहि बातसँ आश्वस्त रहथि जे राति होअएसँ पहिनहि ओ हस्तिनापुरमे प्रवेश कए गेल छथि। आब जल्दीए ओ अपन गंतव्यपर पहुँचि जेताह।

८

द्रोणाचार्यक शिष्य कर्ण

पाण्डव आ कौरब द्रोणाचार्यक गुरुकुलमे शिक्षा ग्रहण करैत छथि। ओ सभ राजपुत्र छथि। आचार्य द्रोण हुनकर आश्रित छथि। हुनकर जीविका हस्तिनापुर नरेश द्वारा चलैत छनि। असलमे अपन संतान अश्वत्थामाक पालन-पोषण लेल ओ ई काज कए रहल छथि। एही लेल ओ अपन वालसखा द्रुपद लग गेल रहथि। मुदा ओ हुनका मित्र मानबासँ मना कए देने रहथिन। अत्यन्त अपमानित,दुखी प्रतिशोधक आगिमे धधकैत ओ हस्तिनापुर पहुँचल रहथि। हुनका आशा छनि जे शिष्य लोकनि हुनकर द्रुपद द्वारा कएल गेल अपमानक बदला लए सकताह। तखने हुनका शांति भेटतनि। अस्तु,द्रोणाचार्य हुनका लोकनिक लेल अपन ज्ञानक समस्त खजाना खाली कए देबाक लेल दिन-राति तत्पर रहैत छथि। मुदा जकरामे जतेक ग्रहण करबाक सामर्थ्य अछि ततबे ओकरा भेटैत छैक। हुनकर एकटा शिष्य बेजोड़ रहथि। आचार्य द्रोण हुनकर प्रतिभा,लगन आ कर्तव्यनिष्ठासँ बहुत प्रभावित रहथि। ओ जतबे मेहनती रहथि,ततबे प्रतिभाशाली छलाह। व्यवहारमे अत्यन्त विनम्र आ शालीन रहथि। द्रोणाचार्य हुनका लेल किछु करबाक लेल तैयार रहथि। ओ अपन पुत्र अश्वत्थामो सँ बेसी हुनका मानथिन। गुरु द्रोणक ओ शिष्य छलाह अर्जुन।

कौरब ,विशेषतः दुर्योधन हुनकासँ बहुत ईर्ष्या करैत छलाह। हुनका मोनमे होनि जे आचार्य द्रोण बैमानी करैत छथि। अर्जुनकेँ बेसी सिखबै छथिन,हुनका बेसी मानैत छथिन आ कौरब लोकनिकेँ उचित सम्मान नहि दैत छथिन। एही बीच कर्ण सेहो ओहिठाम पहुँचि गेलाह। द्रोणाचार्य हुनका अपन पाठशालामे राखए नहि चाहथि। कारण कर्ण सूतपुत्र छलाह। आचार्य द्रोण नहि चाहथि जे कर्ण राजपुत्रक संग उठथि,बैसथि आ बराबरी करथि। मुदा धृतराष्ट्र अधिरथक मित्र छलखिन। हुनकर हस्तक्षेपक कारण द्रोणाचार्य कर्णकेँ अपन पाठशालामे राखि लेलथि। मुदा ओ कर्णकेँ हृदयसँ कहिओ अपन शिष्य नहि मानलथि। से बात हुनकर कर्णक प्रति व्यवहारमे निरंतर झलकैत रहलनि। ओ बात-बातमे कर्णकेँ हतोत्साहित करथि। हुनका संगे समानताक व्यवहार नहि करथि। एहि बातसँ कर्ण बहुत दुखी रहैत छलाह। तथापि,ओ मोन मारि कए अपन साधनामे लीन रहथि।

द्रोणाचार्यक पाठशालामे बेसी शिष्य हस्तिनापुरक राज परिवारक छलाह। हुनका लोकनिक वेश राजकीय छल। ओ सभ अनेक प्रकारक रत्नसँ आभूषित छलाह। हुनका लोकनिक जलखै,भोजनक विशेष व्यवस्था रहैत छलनि। जखन कि कर्णक देहपर सूतपुत्र होएबाक पहिचान स्पष्टतः झलकैत छलनि। यद्यपि हुनकर कवच,कुण्डल ,हुनकर तेजस्वी मुखमण्डल ,हुनकर वाणीक ओजस्विता हुनका कतहुसँ सूतपुत्र होएबाक समर्थन नहि करैत छल। ई बात द्रोणाचार्य बुझथि। मुदा ओ की करितथि? कर्णकेँ यदि इमानदारीसँ पढ़बैत छथि,हुनका अपन प्रतिभाक अनुरुप विद्या प्रदान करैत छथि तखन कौरब आ पाण्डवमे सँ केओ हुनकामे नहि ठठि सकताह। अर्जुन दिन-राति एक केने रहैत छलाह। गुरु द्रोणसँ समस्त विद्या सीखबाक लेल जान लगा देने छलाह। मुदा कर्ण,द्रोणाचार्य द्वारा निरंतर हतोत्साहित केलोपर परिश्रम आ

अध्यवसायक बलेँ निरंतर अर्जुनकेँ टक्कर दैत रहलाह। कौरब लोकनिकेँ खास कए दुर्योधनकेँ एहि बातसँ बहुत आनन्द होइत छलनि।

"केओ तँ अर्जुनकेँ टक्कर देनिहार भेल। बहुत घमंडमे रहैत छल ओ सभ। आब किएक परेसान अछि?गुरु द्रोणोकेँ आँखि खुजि रहल छनि। हुनकर पोल खुजिए कए रहतनि। शिष्य संगे भेदभाव,बैमानी?नहि चलि सकतनि।"-दुर्योधन ई बात अपन भाए लोकनिसँ करथि। हुनका कर्णमे अपन विजयक संभावना देखाइत छलनि।

९

रंगभूमिमे कर्ण

पाण्डव,कौरब सहित अन्य विद्यार्थीगण आचार्य द्रोणाचार्यसँ शिक्षा करैत युद्ध कौशलमे निपुण भए गेल छलाह। हुनका लोकनिक युद्धकौशल आ वीरतासँ राज परिवार आ सामान्य जनताकेँ परिचित करेबाक इच्छासँ द्रोणाचार्य परीक्षाक योजन करबाक निर्णय केलथि। एहि प्रस्तावसँ राज परिवार सहित पाण्डव आ कौरव सभ केओ खुस रहथि। अर्जुन विशेष प्रसन्न रहथि जे ओ एहि अवसरपर अपनाकेँ सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर सिद्ध कए सकताह। परीक्षाक लेल पंडालकेँ विशेष रूपसँ सजाओल गेल छल। देश-विदेशक राजा लोकनि एहि योजनमे सामिल होएबाक लेल आमंत्रित कएल गेल रहथि। रंगमंचपर राज परिवारक वरिष्ठ सदस्य लोकनि यथास्थान विराजित भए चुकल रहथि। भीष्म,द्रोण,कृपाचार्य,विदुर सहित समस्त राजा महाराजा लोकनि आचार्य द्रोणक शिष्य लोकनिमे आपसी प्रतिस्पर्धा देखबाक लेल उत्सुक छलाह।

कौरव,पाण्डव लोकनि शिष्यसभ लेल चिन्हित स्थानपर बैसि गेल छलाह। आब परीक्षा प्रारंभ होएत। गुरु द्रोण मंत्रोच्चार कए एकर प्रारंभ होएबाक घोषणा केलनि। सभसँ पहिने भीम दुर्योधनक संगे गदायुद्धा प्रारंभ

केलनि। दुनू गोटे एहिमे माहिर छलाह। दुनूमे गदा युद्ध गंभीर होइत गेल आ देखिते-देखिते ओ असली युद्धमे बदलि गेल। लगैत छल जे ओ सभ एक-दोसरक मृत्युक कारण बनि जेताह। आखिर आचार्य द्रोणक इसारा पाबि हुनकर पुत्र अश्वत्थामा हुनका लोकनिकेँ हटाओलथि। माहौलमे शांति भेल। एहिना बेरा-बेरी कतेको जोड़ासभ अपन युद्धकौशल देखओलथि। अन्तमे अर्जुन अपन युद्ध कौशल देखेनाइ शुरू केलनि। ओ अनेक प्रकारक अस्त्र-शस्त्रक सफल प्रयोग कए दर्शक लोकनिकेँ मोहित कए लेलथि। सभ हुनकर जयगान कए रहल छलाह। लगैत छल जे अर्जुन आजुक परीक्षामे औअलि अओताह। ओ सर्वश्रेष्ठ घोषित कएल जेताह। एतबहिमे सामनेक द्वारिसँ धनुष-तीर लेने गौर वर्णक एकटा युवक प्रवेश करैत छथि। ओ सोझे अर्जुनकेँ चुनौती दैत छथि-

"आचार्यवर! हमरा अवसर देल जाए। हम अपन करतबसँ अर्जुनकेँ पछाड़ि सकैत छी।"

"अबस्स देखाबह। रंगमंचक आयोजने एही लेल भेल अछि। मुदा ई ध्यान रहए जे ई रंगमंच थिक,युद्धभूमि नहि। तँ कार्यक्रमक अनुरुपे अपनाकेँ संयत रखबाक प्रयास करियह। एहि बातक ध्यान जरूर रखियह जे ई शिष्यसभ राजपरिवारक छथि। हिनका सभक मर्यादाक अनुकूले व्यवहार कएल जाए।"

"ई कोनो बात भेल। एक दिस अहाँ अर्जुनकेँ सर्वश्रेष्ठ घोषित करए चाहैत छी आ दोसर दिस हुनकर श्रेष्ठताकेँ चुनौती देबासँ सेहो मना कए रहल छी। हमरा अपन कौशल देखेबाक अवसर तँ दिअ। यदि हम अर्जुनसँ पछड़ि जाइत छी तँ कोनो बात नहि। ओ सर्वश्रेष्ठ भए जाथु। मुदा यदि से ओ नहि होइत छथि,हम हुनका परास्त कए दैत छिअनि तखन तँ हमरा उचित सम्मान भेटबाक चाही।"

"की बकबक कए रहल छह?पहिने देखियह तँ तोहर कमाल। तकर बादे ने अर्जुन संग हाथ मिलेबह। खाली हबा देलासँ तँ बात नहि बनतह।"

आचार्य द्रोणकेँ एतेक बजबाक देरी छल कि कर्ण चारि हाथ छड़पि गेलाह। ओ एक सँ एक करतब देखबए लगलाह। हुनकर युद्धकौशल देखि ओहिठाम उपस्थित समस्त राजा-महाराजा लोकनिकेँ ठकबिदोर लागि गेलनि। चारूकात कानाफूसी होमए लागल।

“ई सूतपुत्र कतहुसँ नहि लगैत अछि।”

“एकर अंग-प्रत्यगसँ एकरा कोनो उच्चकुलक संतान होएब झलकि रहल अछि। साइत ईहो कोनो राजकुमारे अछि।”

“अर्जुन तँ एकरा आगू किछु नहि अछि।”

आचार्य द्रोण स्वयं आगू बढ़ि कए कर्णक प्रशंसा करैत छथि-

“कर्ण! तोहर युद्धकौशलसँ हमसभ बहुत प्रभावित छी। हम तोरा जतेक सिखओलिअह ताहिसँ बेसी योग्यता तूँ प्राप्त कए चुकल छह। से कोना संभव भेल?”

“आचार्यवर!हम दिन-राति अपने जे शिक्षा पाण्डव-कौरव लोकनिकेँ दैत छलिअनि तकरा कान पाथि कए सुनैत रहैत छलहुँ। जखन हुनका लोकनिक शिक्षाक समय होइक,अहाँ हमरा कैक बेर फटकी पठा दैत छलहुँ। हम ई बात बुझिऐक। हम बेसक दूर चलि जाइ,मुदा सदिखन मोन ओतहि रहैत छल। हम स्वतः प्रयास कए सभ किछु सिखैत रहैत छलहुँ। आब आज्ञा होअए तँ अर्जुनसँ सामना भए जाए।”

कर्णकेँ एतेक बजाबक छल कि रंगमंचपर सन्नाटा पसरि गेल। आचार्य सहित ओतए उपस्थित समस्त श्रेष्ठ लोकनि चिंतित भए गेलथि।

“एकर बातमे बहुत दम अछि। प्रथमदृष्ट्या अर्जुन एकरासँ बहुत झूस पड़ि रहल छथि।”महौलमे तनाव पसरि गेल।आब की होएत? कहीं किछु अनर्थ ने भए जाए?”

तुरंत कृपाचार्य बाजि उटलाह-

“ई रंगमंच राजपरिवारक शिष्य लोकनि आपसी आ मित्रतापूर्ण प्रतिस्पर्धाक लेल आयोजित अछि। एहिमे द्वंद युद्ध करबासँ पहिने तूँ अपन वंश परिचय तँ दएह। बुझियैक तँ सही जे तूँ एहि योग्य छहो कि नहि। अनेरे समय व्यर्थ करबासँ की फएदा?”

“आचार्यवर! हम बुझि रहल छी जे अपने लोकनि हमरासँ द्वंदयुद्धमे अर्जुनक निश्चित पराजयसँ परेसान भए गेल छी। अहाँसभ जानि-बुझि कए तरह-तरहक फदका पढ़ि रहल छी। उचित तँ ई अछि जे जाति-पाँतिक बात बिसरि गुणक आधारपर निर्णय होअए।”

कर्णकेँ रंगमंच परिसरमे प्रवैश करितहु कुंतीक ध्यान हुनकर कवच-कुण्डलपर गेलनि। ओ हुनका चिन्हबामे कनीको देरी नहि भेलनि। ओ बुझि गेलथि जे ई वालक केओ आर नहि कर्णे अछि। भरल सभामे कर्णकेँ अपमानित होइत देखि ओ बहुत दुखी छलीह। एक मोन होनि जे तुरंत चिकरि कए कहि दिऐक जे ओहो पाण्डवे अछि। मुदा विवश छलीह। किछु बाजि नहि सकैत छलीह। ओ नुआसँ अपन मुँह झाँपि लेलथि आ नहु-नहु कानए लगलीह। हुनकर आँखिसँ नोर रूकबाक नामे नहि लए रहल छलनि। बहुत मोसकिलसँ ओ अपनाकेँ संयत केलनि।

कर्णकेँ एना अपमानित होइत देखि दुर्योधन हुनका अंगदेशक राजा घोषित कए देलनि। कर्ण एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेलथि। ओ बाजि उठलाह-

“हम अहाँक एहि उपकारकेँ जीवन भरि नहि बिसरब मित्र!आइसँ हम अहाँक मित्र छी आ सदिखन रहब। भगवान सूर्य भने पश्चिम दिस उगथि,नवग्रह अपन रस्ता बदलि लेथि,पृथ्वीपर प्रलय भए जाइक,मुदा कर्ण दुर्योधनक संग अपन मित्रता नहि छोड़त।”

“ई कोनो उपकार नहि अछि। ई तँ हमर कर्तव्य छल। अहाँ सन वीरपुरुषकेँ व्यर्थ बातपर अपमानित कएल जा रहल छल,प्रतिभाक आधारपर अपन श्रेष्ठता सिद्ध करबासँ वंचित कएल जा रहल छल। आब अर्जुनकेँ चाही जे आगू आबए आ अहाँक संगे द्वंद युद्ध करए। जे एहिमे जीतत से श्रेष्ठ घोषित कएल जाएत। एहि बातसँ एतए उपस्थित आचार्य लोकनिकेँ एहिमे कोनो दिक्कति नहि होएबाक चाहिअनि।”

दुर्योधनक दाओसँ समस्त राज परिवार हतप्रभ छलाह। आचार्य द्रोणकेँ किछु नहि फुरा रहल छलनि।

“आब कोन मुँहे हम कर्णकेँ रोकि सकब। ओहो राजा बनि गेल अछि। सभ तरहेँ योग्य अछि। हमरो लगैत अछि जे यदि दुनूगोटेमे द्वंद भेल तँ कहीं अर्जुन पाछू ने रहि जाए। यदि से भेल तँ अनर्थ भए जाएत। हमर भविष्य संकटमे पड़ि जाएत। कहीं हमर गुरुकुल बंद ने कए देल जाए।”

अंततोगत्वा ,हुनका एकटा युक्ति फुरेलनि। साँझ पड़ि रहल छल। भगवान भास्कर अपन तेज समेटि रहल छलाह। बस भेटि गेलनि हुनका बहन्ना। ओ तुरंत घोषणा कए देलनि-

“आब साँझ पड़ि रहल अछि। सभ गोटे अपन-अपन कौशल देखा चुकल छथि। अस्तु,एहि कार्यक्रमकेँ एतहि स्थगित कएल जाइत अछि।”

द्रोण द्वारा उपरोक्त घोषणा केलाक बाद ओहिठाम उपस्थित समस्त राजा-महाराजा सहित भीष्म,कृपाचार्य,द्रोण ,धृतराष्ट्र ,कुंती सभ अपन-अपन स्थानसँ उठि गेलाह। देखिते-देखिते रंगमंच खाली भए गेल। कर्ण सेहो अत्यंत भारी मोनसँ ओहिठामसँ चलि जाइत रहलाह।

१०

ब्रह्मास्त्र

कर्ण द्रोणाचार्यक गुरुकुलमे आबि गेल छथि।चारूकात राजकीय वेशसँ विभूषित राजकुमार लोकनिकेँ देखि ओ विस्मित छथि। ओ सोचि रहल छथि-

“राजकुमारक परिवारपर आश्रित द्राणाचार्य की हमरा उचित शिक्षा दए सकताह कि हमरो गति एकलव्ये जकाँ होएत?”

“कदापि नहि,हम एकलव्य जकाँ अन्यायकेँ बरदास नहि कए सकैत छी। हम एहि ठाम शिक्षा प्राप्त करबाक लेल आएल छी,ने कि शोषित होएबाक लेल। ओना एहिठाम कएल जा रहल भेद-भाव स्पष्ट अछि। मुदा तँ की?हम अपन तपस्या करैत रहब आ जखने हमरा लागत जे एहि गुरुकुलमे परिस्थिति बरदाससँ बाहर अछि तँ हम एहिठाम एक क्षण नहि रहि सकब। नदी आ वीर अपन रस्ता स्वयं ताकि लैत छथि। निश्चय गुरुक महत्व छनि,मुदा जखने ओ अन्यायकेँ प्रश्रय दैत छथि,ओ अपन गुरुत्वकेँ स्वयं नष्ट कए लैत छथि।”

एहि तरहेँ गुरुकुलमे कर्ण सभ बातकेँ बिसरि अपन साधनामे लीन रहैत छलाह। परिणाम भेल जे ओ जल्दीए ओहिठामक प्रमुख शिष्य अर्जुनक ईर्ष्याक पात्र भए गेलाह। आचार्य द्रोण सेहो हुनकर प्रतिभासँ परेसान रहथि।

पाण्डव आ कौरवमे तँ संघर्ष आ शत्रुता निरंतर बनले रहैत छल। बीचमे कर्णक प्रवेशसँ माहौल आर खराप होइत गेल। द्रोणाचार्यक परेसानी बढ़िते गेलनि। कर्ण चाहैत छलाह जे द्रोणाचार्य हुनको अर्जुन जकाँ ब्रह्मास्त्रक शिक्षा देथि। मुदा से कदापि तैयार नहि रहथि। चाहे जे भए जाए मुदा सूतपुत्र ब्रह्मास्त्र सिखबाक अधिकारी नहि भए सकैत अछि। ई बात द्रोणाचार्य बेर-बेर कर्णकेँ कहथिन। कर्ण सभ मान-अपमान पीबि कए ज्ञानार्जनमे लागल रहथि।

हुनका उम्मीद रहनि जे आचार्य द्रोण कहिओ ने कहिओ हुनकर प्रार्थना सुनि लेथिन। एकदिन एकांत पाबि कर्ण गुरु द्रोणक पैरपर खसि पड़लाह। हुनकर नम्रतासँ द्रोणाचार्य बेकल भए गेलाह। ओ कहैत छथि-

"कर्ण! हम तोहर प्रतिभा,शील आ आचरणसँ बहुत प्रभावित छी। हम जनैत छी जे उचित अवसर भेटलापर तूँ अर्जुनकेँ निश्चित पछाड़ि देबह। मुदा हम करू तँ की करू। ई मूलतः राजपुत्र लोकनिक पाठशाला थिक। हम ई बात तोरा शुरूएमे कहने रहियह। मुदा तूँ हमर बात काटि देलह। तोरा भेलह जे हम बदलि जाएब। मुदा से कोना संभव होइत। हमहूँ तँ एहि राजपरिवार द्वारा पोषित छी। हमर संतान छोट-छोट चीज लेल कनैत रहैत छल। हम दरिद्र ब्राह्मण चुपचाप सहैत रहैत छलहुँ। जहिआसँ एहिठाम अएलहुँ,हमर समय सुधरि गेल। हमर संतानकेँ नीकसँ पालन-पोषण भए रहल छनि। हमहूँ इज्जतिसँ समय बिता रहल छी। आर बहुत बात छैक। तोरा की की कहियह?हमहूँ विवश छी।"

"आचार्य! हमर अपराध क्षमा कएल जाए। हम तँ अपनेक शरणमे छी। अपन जाति बदलब,हमर वशमे नहि अछि। अपन वंशक निर्धारण हम स्वयं नहि कए सकैत छी। हम एतबा जरूर जनैत छी जे यदि अवसरक समानता होइक तँ अर्जुन हमरासँ हाथ नहि मिला सकैत छथि। हम यदि सत्य बजैत होइ,यदि हमरामे अहाँकेँ प्रतिभा देखाइत होअए तखन हमरा अपन गुण सिखबाक अवसर दिअ जेना अहाँ अर्जुनकेँ देने छिअनि। हमरो ब्रह्मास्त्र सिखा दिअ। हम अपनेकेँ आश्वस्त करैत छी जे अर्जुनोसँ बेसी हम अहाँक यशमे वृद्धि करब । द्रुपद के कहए,संसारक कोनो वस्तु जे अहाँ कहब से हम अपनेक लेल उपस्थित कए सकब। बस हमरा अपनेक आशीर्वाद चाही।

कर्ण द्वारा एतेक अनुनय,विनय केलाक अछैतो द्रोणाचार्य ओकरा आश्वासन नहि दए सकलखिन।" मुदा जखन हुनका निश्चित बुझा गेलनि जे

द्रोणाचार्य हुनका ब्रह्मास्त्र नहिए सिखओथिन तखन ओ एक राति चुपचाप द्रोणक आश्रम छोड़ि अज्ञातपथपर बिदा भए गेलाह।

११

परशुराम शिष्य कर्ण

कर्ण जतबे वीर छलाह ततबे दृढ़ संकल्पी। ओ नीकसँ ई बात बुझि गेलाह जे आचार्य द्रोण निष्पक्ष नहि छथि। ओ हुनका ब्रह्मास्त्र नहि सिखा सकैत छथि। हुनकर एकमात्र लक्ष्य अर्जुनकेँ सर्वश्रेष्ठ योद्धा बनाएब छनि। ताहि लेल ओ कोनो अन्याय करबाक लेल तैयार छथि। एकलव्य संग हुनकर व्यवहार,जे क्रूड़तासँ भरल छल,एकर ज्वलंत उदाहरण थिक। आखिर एकलव्यक दोष की छल? किएक ओकर औंठा काटि लेल गेलनि?किएक ने ओकरा आचार्यक गुरुकुलमे शिक्षा देल जा सकलनि? चलू से नहि भेलनि। मुदा जखन ओ अपन आत्मबलसँ, दृढ़ संकल्पसँ दिन-राति एक कए अपन गुरुक प्रतिमाक सामने निरंतर अभ्यास कए उत्कृष्ट धनुर्धर भए गेलाह तखन आचार्य द्रोणकेँ गुरुदक्षिणामे हुनकर औंठा मांगि लेब कतएसँ न्यायपूर्ण छल?मुदा ओ से केलनि। तेहन परिस्थितिमे कर्णकेँ हुनकासँ बेसी उम्मीदे राखबे गलत छल। हुनका ई बात बुझबामे किछु समय लगलनि,मुदा ओ अंततः से बुझि गेलाह। ओ ई बात बुझि गेलाह जे द्रोणाचार्य हुनका अपन असली शिष्य नहि मानैत छथि। तखन ओहिठाम सटल रहब व्यर्थ थिक। ई बात हुनकर मोनमे बेर-बेर ध्वनित भए रहल छलनि।

कर्ण आइ दूपहर रातिमे द्रोणाचार्यक गुरुकुल छोड़ि अपन नव लक्ष्य दिस चलि चुकल छथि। हुनकर गंतव्य कोनो मामुली स्थान नहि छल। ओहि युगक महान ऋषि आ क्षत्रिय लोकनिक संहारक परशुरामक आश्रम जा रहल छलाह ओ । ओ ई बात नीकसँ जनैत छलाह जे परशुराम मात्र ब्राह्मण जातिक लोककेँ अपन शिष्य बनबैत छथि । ओ ब्राह्मण के कहए,सूतपुत्र कहबै

छथि।असलमे हुनकर कुल,गोत्रक परिचय हुनका अपनो नहि बूझल छनि। नहि छनि हुनकर केओ ज्ञात पिता। एहन व्यक्तिकेँ परशुराम सन ऋषि कोना अपन शिष्य बनओताह?

अज्ञात पथपर एकटा दृढ़संकल्पी युवक आगू बढ़ल जा रहल छथि। जे व्यक्ति जन्मे सँ मृत्युकेँ चुनौती देने होअए,जकरा विपत्तिसँ सभदिन मित्रता रहल होइक,जे सभ तरहक परेसानीमे आगू बढ़बाक अभ्यस्त होअए तकरा लेल की परिवाह छैक? जे होएबाक छैक से होउक। कर्ण एसगर वन,नदी,पहाड़केँ टपैत बढ़ल जा रहल छथि- ऋषिवरक ओहिठाम। हुनर मोनमे कतहु -ने-कतहु विश्वास छनि जे-

"आखिर परशुराम महान आत्मा छथि,विद्वान छथि,अपन युगक महान योद्धा छथि। ठीक छैक जे ओ अनेक बेर क्षत्रिय लोकनिक संहार केलनि,मुदा तकर जिम्मेबार के?किछु तँ कारण रहल हेतनि? फेर,ओ सभ किएक ने रोकि सकलाह परशुरामक प्रचंड प्रहारकेँ?कतए गेलनि हुनकर पौरुष?हमरा देखिते ओ जरूर प्रभावित हेताह,हमर प्रतिभाक सम्मान करैत अपन समस्त ज्ञानक भंडार हमरा लेल खोलि देताह। हम धन्य-धन्य भए जाएब। बस,एक बेर से भए तँ जाए। फेर हम देखि लेब अर्जुनकेँ। कोना ओ हमरासँ श्रेष्ठता सिद्ध कए सकत? नहि कए सकत। तखन ओकरा हमर अधीन रहए पड़तैक। आचार्य द्रोण ओकर कतेक रक्षा कए सकताह?"

प्रातःकालक प्रथम रविरश्मि पृथ्वीपर पड़ले छल। आब कर्ण अपन गंतव्यपर पहुँचि गेल छथि। केओ हुनका आब परशुराम ऋषिसँ दूर नहि कए सकतनि। अचानक ऋषिवर स्वयं कर्णक सामनेमे प्रकट भए गेलखिन। हुनका अकस्मात उपस्थित देखि कर्ण अबाक छलाह। किछु फुरेबे नहि करनि। एहन तेजस्वी,दीर्घकाय,प्रसन्नचित्त ऋषिकेँ के कहत संहारक?झूठ,झूठ। कर्ण हुनका दण्डवत भए जाइत छथि। कवच,कुण्डल युक्त अतिशय तेजस्वी युवककेँ

दण्डवत देखि हुनकर मोनमे भेलनि जे ई आर केओ भइए नहि सकैत अछि, ई निश्चय ब्राह्मण अछि। लगैत अछि जे नियति स्वयं हमरा उपयुक्त शिष्य आनि देलक अछि।

"उठू,उठू औ बालक! अहाँ के छी? एहिठाम किएक आएल छी?की अहाँ ब्राह्मण कुलमे जन्म लेने छी?यदि से सत्य अछि,जे अहाँक देखि स्वतः प्रमाणित अछि, तँ हमरा लेल ई परम सौभाग्यक बात अछि।"

कर्ण हुनकर प्रश्नक उत्तरमे कहलथि-

"अहाँक अनुमान सही अछि आचार्यवर!हम भृगुवंशी ब्राह्मण छी आ अहाँसँ शिक्षा प्राप्त करए आएल छी।"

परशुराम ऋषि हुनकर बात सुनि अतिशय प्रसन्न भेलथि। ओ बहुत दिनसँ अपन उत्तराधिकारी ताकि रहल छलाह जिनका अपन संपूर्ण ज्ञान दए निश्चिंत भए सकथि। हुनका भेलनि जे आइ ओ व्यक्ति भेटि गेलनि अछि। कर्ण अपन भावी गुरुसँ पहिले भेंटमे झूठ बाजि चुकल छथि। एहि बातसँ हुनकर मोन आत्मग्लानिसँ भरि गेल छनि। बेर-बेर हुनका पश्चाताप होइत छनि।

"गुरुसँ छल नहि करबाक चाहैत छल। ई वीरक काज नहि थिक।"

मुदा ओ करबो की करितथि?यदि ओ सत्य बाजि दितथि,कहि दितथि जे हुनका अपन जन्मक रहस्य नहि बुझल छनि,मुदा लोक हुनका सूतपुत्र कहैत छनि ,कारण हुनकर पालन-पोषण अधिरथ आ राधेय केने छथिन ,तखन की होइत?अनर्थे होइत। ऋषि परशुराम तँ ब्राह्मणक संपोषक छलाह। ओ सुयोग्य ब्राह्मण पुत्रकेँ ताकि रहल छलाह,जे हुनकर शिष्य बनितनि आ हुनका बाद क्षत्रिय राजा लोकनिसँ लोहा लैत। ओकरा ओ अपन समस्त युद्ध विद्या सिखा दितथि। ब्रह्मास्त्रसँ संपृक्त कए दितथि। मुदा कर्ण सभ किछु जनितहु अपन

गलत परिचय देलनि। ओ द्रोणशिष्य अर्जुनकेँ कोनो मूल्यपर परास्त करए चाहैत छलाह। द्रोणाचार्यकेँ देखा देबए चाहैत छलाह जे कर्ण सही मानेमे दुनिआक श्रेष्ठतम योद्धा अछि। कर्ण इएह अभिलाषा भविष्यमे ओकर पराभवक कारण बनल।

"पहिने हुनकासँ विद्या तँ प्राप्त कए ली। फेर देखल जेतैक।" कर्ण परशुराम ऋषिकेँ दण्डवत प्रणाम करैत छथि।

ऋषि परशुराम अपन हृदयक द्वारि खोलि दैत छथि। ओ कर्णकेँ अपन हृदयसँ साटि लैत छथि,हुनकापर आशीर्वादक वर्षा कए दैत छथि। आजुक घटनासँ ऋषिवरक आनन्दक सीमा नहि अछि।

"स्वागत युवक,स्वागत! हम बहुत दिनसँ अहाँक प्रतीक्षा कए रहल छलहुँ।हमर ई प्रतीक्षा आइ पूर्ण भेल। ब्राह्मण समाज अहाँ सन संतान पाबि आब पूर्ण सुरक्षित रहत,एहिमे कोनो शङ्का नहि रहि गेल। अहाँक पुरुषार्थपर हमसभ गर्व करब। हम अहाँकेँ अपन शिष्य बना कए बहुत संतुष्ट छी।"

ऋषिवरकेँ एना बजैत देखि कर्ण बहुत आनन्दित भेलाह। ओ जे चाहैत छलाह,से हुनका भेटि गेल छलनि। निस्सन्देह हुनका एहि लेल झूठक आश्रय लेबए पड़लनि। असलमे द्रोणाचार्यक आश्रममे हुनका संगे बहुत भेदभाव भेलनि। ओ अपना भरि बहुत प्रयास केलनि जे कहुना हुनका मना लेथि आ ओतहि अपन लक्ष्य सिद्ध कए सकथि। मुदा जखन ओ एकलव्यक संग घटित घटनाक बात सुनलनि,तखन तँ कोनो उम्मीद नहि रहि गेलनि।

भेलैक ई जे एक दिन गुरु द्रोण अपन शिष्यक संगे जंगलमे अभ्यासक लेल गेल रहथि। हुनकासभक संगे एकटा कुकुर सेहो गेल छल। अचानक ओ कुकुर जोर-जोरसँ भुकनाइ शुरू कए देलक। ओ भुकैत-भुकैत आगू चलि गेल

आ अचानक ओकर अबाज बंद भए गेलैक। द्रोणाचार्य सहित हुनकर समस्त शिष्य लोकनि ओहि कुकुरकेँ ताकए लगलाह।

"आखिर ई गेल कतए?एकरा की भेलैक जे अचानक भुकनाइ बंद भए गेलैक। जरूर किछु गड़बड़ बात भेल अछि।"

ओ सभ जंगलमे घुमैत रहलाह। आखिर ओ कुकुर देखेलनि,मुदा ओकर मुँहमे तीर सभ भरल छलैक,जाहि कारणसँ ओ भुकि नहि पाबि रहल छल। द्रोणाचार्य कुकुरक मुँहमे ओहि तीरसभक स्थिति देखि अबाक छलाह।

"आश्चर्यक बात अछि जे एतेक तीर लगलाक अछैतो ई कुकुर कतहुसँ घायल नहि भेल अछि। बस एकर भुकनाइटा बंद कए देल गेल छैक। के अछि ओ महान धनुर्धर? ओ जे अछि मुदा अछि असाधारण।"

द्रोणाचार्य अपन मोनक बात अपन शिष्य लोकनिकेँ कहलखिन। ओसभ गोटे हुनका संगे ओहि व्यक्तिकेँ ताकए लगलाह। आखिर ओ सभ एकटा कारी खुटखुट छोट कायाक व्यक्तिक मुखातिब होइत छथि। ओहि व्यक्तिक दहिना कातमे गुरु द्रोणक चित्र बनल अछि। सामनेमे लक्ष्य टांगल अछि। ओ निरंतर अपन अभ्यासमे लागल अछि। एही क्रममे ओ कुकुर वारंबार भुकि कए ओकर ध्यान भंग कए रहल छलैक। तेँ ओ ओहि कुकुरक मुँह अपन तीरसँ बंद कए देने छलैक। एहि घटनाक सही जानकारी पाबि आ ओहि व्यक्तिक साधनाक प्रति समर्पण देखि द्रोणाचार्य बहुत चिंतित भए गेलथि।

"अर्जुन तँ एकरा आगू किछु नहि अछि। यदि ई बाँचल रहि गेल तखन केओ एकरा आगू नहि ठठि सकत।"

"मुदा कएल की जाए?"

द्रोणाचार्य आगू बढ़ि ओहि युवकसँ पुछैत छथि-

“तूँ के छह आ एहिठाम जंगलमे की कए रहल छह?”

“हम आचार्य द्रोणक शिष्य एकलव्य छी।”

“मुदा हम तँ तोरा कहिओ शिष्य नहि बनओने छी। फेर. . .।”

“हम अहाँसँ शिष्य बनए गेल रही,मुदा छोट जातिक बुझि अहाँ हमरा मना कए देलहुँ। तखन हम एतए अहाँक मुर्तिए कैँ अपन गुरु मानि दिन-राति साधनामे लागि गेलहुँ। हम जे किछु छी से अहींक कृपाक कारण छी।”

“हम तोहर समर्पणसँ अतिशय प्रसन्न छी। हमरा तोहर प्रतिभा आ योग्यतापर गर्व अछि। मुदा ई कहह जे गुरुदक्षिणा कहिआ आ केना देबहक?बिना से केने तोहर विद्या अपूर्ण रहत।”

“अहाँ जे कही,जखन कही,हम तैयार छी। हमर जे किछु अछि,सभकिछु गुरुकेँ समर्पित अछि।”

“नीकसँ सोचि लएह। बादमे नहि कहिअह जे ई आ ओ।”

“अहाँ आदेश तँ करू गुरुवर।”

“ठीक छैक। तूँ अपन दहिना औंठा दक्षिणामे दएह।”

द्रोणाचार्यकेँ कहबाक देरी छल कि एकलव्य तुरंत अपन दहिना औंठा काटि कए गुरुक हाथमे राखि देलनि। एहि तरहेँ द्रोणाचार्यक क्रूड़ताक कारण एक महान योद्धाक विनाश भए गेल छल। तथापि ओ गुरुकेँ दण्डवत प्रणाम केलक आ चुपचाप ओहिठामसँ प्रस्थान कए गेल।

एकलव्य संग भेल ई अन्यायसँ कर्ण बहुत विचलित भेल रहथि। हुनका निरंतर ई भय होइत रहलनि जे कहीं हुनको संगे एहने किछु ने घटित होनि । तेँ बिना बेसी विलंब केने ओ द्रोणाचार्यक गुरुकुलसँ चलि जाइत रहलाह। आब हुनका परशुराम ॠषिक आश्रय भेटि गेल छनि। ओ ब्रह्मास्त्र

सहित आर सभ किछु सिखि सकताह। अर्जुन के कहए,दुनिआक कोनो वीर हुनकर मोकाबिला नहि कए सकत। मुदा भविष्यक गर्भमे हुनका लेल की अछि,से ओ की जाने गेलथि?

१२

परशुरामक श्राप

घनघोर जंगलक मध्य बनल परशुराम ऋषिक आश्रम साधनाक लेल उत्तम स्थान छल। आश्रमक चारू कात अनेक प्रकारक फल-फूलक बृक्षसभ लागल छल। हुनकर आश्रममे एकदिस अनेक प्रकारक शास्त्रक पुस्तकसभ राखल रहैत छल तँ दोसर दिस तलबार,भाला,तीर धनुष राखल रहैत छल। एक्के ठाम दुनू तरहक परस्पर विरोधी शक्तिक संतुलन बनओने छलाह ऋषिवर। आश्रममे कोनो सामग्रीक कमी नहि छल। हुनकर शौर्य आ पुरुषार्थसँ प्रभावित भए राजा लोकनि एहि बातकेँ सुनिश्चित करैत छलाह जे ऋषिवरकेँ कोनो असुविधा नहि होनि। हुनकर एकटा इसाराक देरीक छल कि आश्रममे सामानक अंबार लागि जाइत छल।

कर्ण नित्य ब्राह्मीमुहुर्तमे उठि नित्यकर्मसँ निवृत भए परशुरामक आदेशानुसार अस्त्र-शस्त्रक अभ्यासमे लागि जाइत छलाह। परशुराम तत्परतापूर्वक हुनकर मार्गदर्शन करथि। एहि तरहेँ ओ मासक-मास साधना करैत रहि गेलाह। निरंतर परिश्रम केलासँ हुनकर देह सुखा कए काँट-काँट भए गेलनि। ऋषिवर हुनकर अध्यवसाय देखि बहुत प्रसन्न रहैत छलाह। हुनका होनि जे कर्णकेँ कतेक ज्ञान दए दिऐक। कारण ओहन विद्यार्थीओ भेटब बहुत मोसकिल छल। सदपात्रकेँ शिक्षा देबासँ आर नीक की भए सकैत छल?से ओ करैत रहलाह।

आश्रममे भोरे उठि कर्ण भगवान सूर्यक उपासना करैत छलाह। तकर बाद दिन भरि धनुर्विद्याक अभ्यास करैत छलाह आ सायंकाल ऋषि परशुरामक उपदेश सुनैत छलाह। यद्यपि आश्रमक अन्य शिष्य हुनकर बरक्कति देखि ईर्ष्या करैत छलाह, मुदा परशुरामक कृपा हुनका पर सदैव बनल रहलनि। कर्णक वीरता,समर्पण आ परिश्रमसँ ऋषिवर बहुत प्रसन्न रहैत छलाह। ओ हुनका ब्रह्मास्त्र सहित तमाम अस्त्र-शस्त्रमे निपुण कए देलाह। कर्णो अपना भरि कोनो प्रयास छोड़लनि नहि।

कर्ण जंगलमे अभ्यास करैत-करैत कैक बेर बहुत फटकी चलि जाइत छलाह। ओहि क्रममे ओ कठिन सँ कठिन लक्ष्यपर अपन तीर प्रेषित करैत छलाह। हुनकर निसाना अचूक छल। एक दिन अहिना ओ जंगलमे धनुर्विद्याक अभ्यास कए रहल छलाह कि गलतीसँ हुनकर तीर एकटा गायक बछरूकेँ लागि गेलैक । ओकर ठामहि मृत्यु भए गेलैक। ओ गाय एकटा ब्राह्मणक छलनि। थोड़बे दिन पहिने ओकरा बछरूक जन्म भेल रहैक। ओ बहुत परिश्रमपूर्वक तकर पालन-पोषण कए रहल छलाह। अचानक भेल एहि दुर्घटनासँ ओ बहुत दुखी भेलाह। ताबे मे कर्णकेँ अपन गलतीक अनुमान भेलनि। ओ दौड़ल ब्राह्मण लग पहुँचैत छथि आ हुनकासँ क्षमा मंगैत छथि-

“हमरासँ अनजानमे बहुत भारी गलती भेल अछि। हम तँ अभ्यास कए रहल छलहुँ। अचानक ई बछरू सामने आबि गेल आ हमर चलाओल गेल तीर ओकरा लागि गेलैक। हम एहि बातसँ बहुत दुखी छी। अपने सँ एहि गलतीक लेल क्षमा मगैत छी।”

“तोरा कोनो तरहेँ क्षमा नहि देल जा सकैत अछि। तोहर अपराध अक्षम्य अछि। ओहने दण्डो तोरा भेटबाक चाही।”

"अपने हमरापर विश्वास करू। हम जानि कए ई काज नहि केलहुँ अछि। दुर्भाग्यवश ई गलती भए गेलैक। हम स्वयं एहि लेल बहुत दुखी छी,क्षमाप्रार्थी छी।"

"आब आहे-माहे केलासँ की होएत?तूही कहह जे बछरूक जान कहुना वापस आबि सकैत अछि?नहि ने?तखन तोरा अपराधमुक्त केना कएल जा सकैत अछि। जे वस्तु तूँ ककरो दए नहि सकैत छहक,तकरा लेबाक अधिकार तोरा कतएसँ भए सकैत अछि?तूँ असावधानीसँ ,किंवा लापरबाहीसँ अपन तीरसँ ओहि बछरूक हत्या कए देलहक। ई सही अछि कि नहि?"

"हम अपन गलती मानि रहल छी। हम बस एतबहि निवेदन करए चाहैत छी जे हमरा एहि बेर क्षमा कए देल जाए। हम भविष्यमे एहन गलतीसँ बचबाक प्रयास अबस्स करब।"

"एहनो कहीं भेलैक अछि। हम तोरा क्षमा नहि कए सकैत छी। तूँ शक्तिक घमंडमे भयाओन गलती केलह अछि। यदि तोरा उचित दंड नहि देल जाएत तखन तँ तोरा सन-सन आर एहन लोकसभ उदण्डता करत,समाजक व्यवस्था बरबाद भए जाएत। समाजमे उच्छृंखलता बढ़त। दुष्ट,बदमास आ शक्तिसंपन्न जे चाहत से करत। नीक लोककेँ परेसानी बढ़त। अस्तु,हम तोरा श्राप दैत छी जे जखन तोरा अपन प्रमुख शत्रुसँ युद्ध हेतह आ तूँ ओकरा मारबाक प्रयास करबह तखनहि तोहर रथक पहिआ माटिमे धसि जेतह। एहने हलातिमे तूँ अपन शत्रुक हाथे मारल जेबह।"

ब्राह्मणक श्राप सुनि कर्ण भीतर धरि हिलि गेलाह। हुनका क्षण भरि लेल चारू कात अन्हारे-अन्हार देखा रहल छलनि। ओ क्रमशः चेतन होइत छथि आ कौल जोड़ि कए ब्राह्मणसँ क्षमा याचना करैत छथि।

“हम अपन गलती पहिने मानि चुकल छी। हम एहि दुर्घटनाक लेल अफसोच व्यक्त करैत छी। अहाँ आदेश करी तँ एकर एबजमे हजारों गाय अहाँक ओहिठाम पहुँचा दी। अहाँ जतेक धन कही, हम अपनेकेँ अविलंब पहुँचा देब। मुदा हमरा श्राप नहि दिअ। हम तँ दिन-राति एक्केटा सपना देखैत छी जे अपन प्रतिद्वंदी अर्जुनकेँ परास्त कए सकी,युद्ध होइक तँ ओकर हत्या कए सकी। मुदा अहाँक श्रापक बलेँ हम सएह नहि कए सकब। तखन हमर जीनाइ,मरनाइ एक्के भए जाएत। हमर समस्त शिक्षाक कोनो अर्थ नहि रहि जाएत। अस्तु,हमर प्रार्थना अछि जे अपने हमरा श्रापमुक्त कए दी।”

“असंभव। तोरा हम कदापि क्षमा नहि कए सकैत छी। हम जे बाजि देलहुँ,से बाजि देलहुँ। हमर वाक्य कदापि असफल नहि भए सकैत अछि। हम जीवनमे कहिओ झूठ नहि बजने छी। हम जे बजैत छी से भइए कए रहैत अछि। तोहर श्राप वापस लए हम अपन जीवन भरिक तपस्याकेँ व्यर्थ नहि होमए दए सकैत अछि। अस्तु,तोरा उचित समयपर हमर श्राप भोगहि पड़तह।”

कर्ण की करितथि?बहुत अछता-पछता कए ओहिठामसँ वापस भए गेलाह। रस्ता भरि हुनका अपन दुर्भाग्यपर ध्यान जाइत रहलनि।

“भाग्योक विचित्र खेल होइत अछि। हम एतेक परिश्रमपूर्वक परशुराम ऋषिसँ ब्रह्मास्त्र सिखलहुँ जाहिसँ अवसर अएलापर अर्जुनकेँ हरा सकी,ओकर वध कए सकी। मुदा आइ हमर समस्त सपना एक्के क्षणमे ध्वस्त भए गेल।”

उपरोक्त घटनासँ अत्यन्त दुखी भेल कर्ण आश्रम वापस बिदा भेलाह। ओ बरोबरि ओहि घटनाक बारेमे सोचैत छलाह।“हम तँ नित्यप्रति अभ्यासक लेल जंगल दिस जाइत छलहुँ। जंगलक एकांतमे तरह-तरहक अभ्यास करैत छलहुँ। मुदा कहिओ किछु अनट नहि भेलैक। आइए एना किएक

भेलैक?किएक हमर चलाओल तीर बछरूकेँ लगलैक आ सेहो ततेक घातक सिद्ध भेल जे ओ बछरू ठामहि रहि गेल। ओकर मालिक ओ ब्राह्मण यदि एहन शक्तिशाली छथि जे हुनकर शब्दे ब्रह्म बनि जाइत अछि तँ ओ ओहीसँ ओकरा बचा किएक नहि लेलनि?फेर हम कोनो जानि-बूझि कए तँ ओकरापर तीर चलओने नहि रहिऐक,धोखासँ ओकरा से लागि गेल रहैक। तखन हमरापर हत्याक दोष लगाएब कोना सही छल?मुदा एहिसभ बात पर विचार के करत? जे होएबाक छल से भए गेल। आब हम श्रापित छी,हमर भविष्यपर ग्रहण लागि चुकल अछि। अर्जुनकेँ परास्त करबाक हमर आकांक्षा आब साइते पूर्ण भए सकत?" ई सभ सोचि-सोचि कर्ण अतिशय उदास छथि। ओ आश्रम पहुँचि चुकल छथि। मुदा नित्यप्रति जकाँ जंगलसँ वापस भेलाक बाद ऋषिवर लग नहि जाइत छथि। अपितु,आश्रमक दहिना दिस बनल बैसकीपर चुपचाप बैसि जाइत छथि। हुनका एना चिंतित देखि परशुराम ऋषि टोकलखिन-

"कर्ण!एना उदास किएल छह?अखन तँ तोहर युवावस्थाक समय अछि,खा खेलाह। व्यर्थक चिंता नहि करह। जे होएबाक छैक से हेतैक। वीरपुरुष तकर चिंता नहि करैत छथि। अपितु,अपन शौर्य आ पुरुषार्थसँ एकटा इतिहास रचि जाइत छथि। एहि संसारमे जे आएल अछि से जाएत। मृत्यु अवश्यंभावी थिक। केओ ओकरा टारि नहि सकैत अछि। जे नीक काज करैत छथि,जीवनकेँ लोक कल्याणमे लगा दैत छथि सएह मोन पाड़ल जाइत छथि। तोहर वीरता अखने सँ चारू कात प्रख्यात भए चुकल अछि।

हम जे तोरा एतेक अस्त्र-शस्त्रसभक ज्ञान देलियह अछि,ब्रह्मास्त्र पर्यंतमे निपुण कए देलियह अछि तकर उद्येश्य तँ तोरा नीकसँ बूझल छह। एहि पृथ्वीसँ दुष्ट आ नीच लोकसभक विनाश होअए सएह हमर लक्ष्य अछि। हमरा आशे नहि अपितु,पूर्ण विश्वास अछि जे तूँ हमर बाँचल काजकेँ पूर्णता प्रदान करबह। अपन पुरुषार्थसँ दुनिआमे यश कमेबह। एहिमे हमरा कनीको

सक नहि अछि जे जुग-जुग धरि लोक तोहर नाम लैत रहत आ इतिहासमे तोहर नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत। ”

आचार्यक एतेक उत्साहित केलाक बादो कर्ण चुप छलाह। आँखि नोरसँ भरल छलनि। ओ आचार्यक पैरपर खसि पड़लाह। ऋषि अन्तर्यामी छलाह,ओ ध्यानशक्तिसँ सभ बात बूझि गेल छलाह। तथापि,कर्णकेँ ओहि विषयमे किछु नहि कहलखिन। ओ आश्रमसँ नीक-नीक फल आनि कए कर्णक आगूमे राखि दैत छथि आ आग्रह करैत छथि-

“कर्ण!तूँ बहुत भुखल बुझाइत छह। दिन-राति एतेक परिश्रम करैत छह। हमर आदेशसँ रने-बने बौआइत रहैत छह। निरंतर एतेक कठिन साधनामे लागल रहैत छह। मुदा भोजनोपर तँ ध्यान दहक। हमर देखाउस नहि करह। हम तँ योगबलसँ शक्ति सृजन कए लैत छी। मुदा तोरा तँ पुष्ट भोजन करबाक चाही,नहि तँ देह जरि जेतह?तखन की युद्ध करबह?सभटा ज्ञान धएले रहि जेतह?”

कर्ण आचार्यक बात मानि जलखै करैत छथि। कनी काल एमहर-ओमहर घुमैत छथि। फेर सामने मे लटकल धनुष तीर निकालि अभ्यासमे लागि जाइत छथि। एहि तरहेँ हुनकर दिनचर्या चलैत रहल ओ कखनहु अपन सुखपर ध्यान नहि दैत छलाह। अपितु,अवसर भेटितहि ऋषिवरक सेवामे लागल रहैत छलाह। हुनकर मान-सम्मानक पूरा ध्यान रखैत छलाह।

एक दिन एहिना कर्ण परशुराम ऋषिक सेवा कए रहल छलाह। ऋषिवर हुनकर जाँघपर अपन मुड़ी रखने सुति रहलाह। एतबहिमे एकटा विषकीट हुनकर जांघमे भूर करए लागल। कर्णक देहसँ खून बलबला कए निकलि रहल छल। तथापि,ओ एक शब्द नहि निकालि रहल छलाह। बस,एतबहि चिंता रहनि जे कहीं ऋषिवरक निन्न ने टूटि जानि। विषकीट अपन दुष्टतामे लागल रहल। हुनकर देहसँ खून निरंतर निकलिते जा रहल छल।

कर्ण कष्टसँ व्याकुल छलाह। मुदा एतेक कष्टक अछैत ओ चुपचाप छलाह,बस एक्केटा बात ध्यानमे रहनि-

"ऋषिवरकेँ कोनो कष्ट नहि होनि,हुनकर निन्न नहि टुटनि।"

केओ लाख प्रयास कए लिअए,मुदा भावीकेँ नहि रोकि सकैत अछि।ओ अपन रस्ता स्वयं बना लैत अछि। सभकिछु तेहने होमए लगैत अछि जे भावी अछि। सएह एतहु भेल। कर्णक लाख प्रयासक अछैत हुनकर देहसँ निकलि रहल तप्त रक्तक स्पर्शसँ ऋषिवरक निन्न अचानक टुटि गेलनि। ओ तुरंत सावधान भए जाइत छथि। ओ सोचि रहल छथि-

"ई की अछि?"

हुनकर हाथ कर्णक जाँघपर पड़ि जाइत छनि। विषकीट द्वारा कर्णक जाँघमे कएल गेल खधिआमे हुनकर आंगुर धसि जाइत छनि। सौंसे खूने-खून पसरि जाइत अछि। ओ तुरंत चिंतित भए जाइत अछि। विषकीट काटि-काटि एकर जांघमे खधिआ बना देने अछि, देहसँ निरंतर रक्तक प्रबाह भए रहल अछि। एतेक कष्टक अछैत एकरापर कोनो प्रभाव नहि देखा रहल अछि। ओ संच-मच हमरा अपन कोरामे रखने अछि। ई ब्राह्मणक लक्षण नहि भए सकैत अछि। ब्राह्मण एतेक सहनशील भइए नहि सकैत अछि। यदि सचमुचकेँ ब्राह्मण रहैत तँ ओहि विषकीटकेँ तुरंत नष्ट कए दैत। कम सँ कम एकरासँ त्राण पएबाक लेल उठि बैसत। मुदा ई की देखि रहल छी?जे देखि रहल छी से तँ बहुत गड़बड़ संकेत दए रहल अछि। ई व्यक्ति ब्राह्मण भइए नहि सकैत अछि,तखन अछि की?एकर लक्षण तँ क्षत्रिय सन लागि रहल अछि। आब बूझि रहल छी जे ई व्यक्ति एतेक कुशलतासँ सस्त्र संचालन कोना करैत छल?कोना बिना थकने दिन-राति साधनामे लागल रहैत छल। एकर कानमे कुण्डल आ देहमे कवच सामान्य नहि लागि रहल अछि। तकर माने ई हमरा संगे छल केलक। हमरा संगे झूठ बाजल। हम एकरा कदापि क्षमा नहि कए

सकैत छी। एकर नाश कइए कए हम शांत भए सकैत छी। मुदा करू तँ की करू? काल्हि धरि जकरा अपन संतानोसँ बेसी मानलहुँ,जकर कल्याणक लेल अपन ज्ञानक समस्त पेटार खाली कए देलहुँ ,जकर सुख-सुविधाक लेल आश्रमक सभ किछु समर्पित केने रहलहुँ,ततबे नहि जकरा ब्राह्मण बूझि ब्रह्मास्त्र पर्यंतक शिक्षा देलहुँ तकरे कोना श्राप दिऔक,कोना अपने देल वस्तुसभ एक्के रत्तीमे छिनि लिऔक।

"हाय रे भाग्य!तूँ ई की कए रहल छह? हमरा हाथे एहि युवकक विनाशक पटकथा किएक लिखा रहल छह?"

ऋषि परशुराम मौन भए जाइत छथि। बेर-बेर कर्णक निर्दोष मुँह दिस तकैत छथि। फेर कठोर भए पुछैत छथि-

"बाज रे धूर्त ,बाज। तूँ के छैं?तूँ ब्राह्मण तँ कदापि नहि छैं। फेर हमरा संगे छल किएक केलैं?तोरा आब केओ नहि बचा सकैत अछि। हम तोरा श्राप देबाक लेल विवश छी। सावधान युवक,सावधान!"

कर्ण एकटंगा देने ठाढ़ छथि। सौंसे देह थरथर काँपि रहल छनि। आँखिसँ नोरक धार बहि रहल छनि। मोन अपराधबोधसँ भरल छनि। माथा जेना जाम भए गेल छनि। किछु फुरा नहि रहल छनि। अचानक उपस्थित एहि महासंकटसँ बचबाक कोनो रस्ता नहि देखा रहल छनि। ओ वारंबार क्षमा मांगि रहल छथि।

"ऋषिवर!

हमरा क्षमा कएल जाए। हम असलमे के छी से हमहूँ नहि जनैत छी। गंगामे बहैत एकटा शिशुकेँ अधिरथ आ राधा आश्रय देलनि आ पालन-पोषण केलनि। हुनके कृपासँ हम आइ जीबित छी। आब अहाँ जे कही। ओना दुनिआ हमरा सूतपुत्रे बुझैत अछि। हमरा ओहि बातसँ गर्व होइत अछि।

सोचिऔक- उच्चकुलक केओ हमर जन्मदातृ केहन नीच काज केलक जे एकदम निर्दोष शिशुकेँ गंगामे बहा देलक आ नीचकुलक होइतहु अधिरथ आ राधा हमर जीवन रक्षा केलथि। ओ सभ सरिपहु महान छथि। अहाँ तँ ऋषि थिकहुँ,महान आत्मा थिकहुँ। अहाँ स्वयं सोचू जे हम की करितहुँ?आचार्य द्रोण मात्र जातिक आधारपर हमरा योग्यतानुसार शिक्षा देबासँ मना कए देलनि। हमरा ब्रह्मास्त्र ओ नहि सिखओलनि। एहन परिस्थितिमे अर्जुनक सामने हम कोना ठाढ़ भए सकैत छलहुँ? हम सूतपुत्र छलहुँ अथवा जे छलहुँ ,मुदा प्रतिभाशाली विद्यार्थी तँ निस्सन्देह छलहुँ?तखन आचार्य द्रोण हमरा उचित शिक्षा देबासँ मना कए कोन न्याय केलथि?की ओ अपन धर्मक पालन नीकसँ केलनि?कदापि नहि। हारल-थाकल हम अहाँक शरणमे आएल रही। अहाँक कृपापात्र बनि हम धन्य भेल रही। मुदा सदा-सर्वदा जकाँ हमर भाग्य एतहु हमर संग नहि दए रहल अछि। हम करू तँ की करू?”

“हम स्वयं बहुत दुबिधामे छी। सभ दिन तोरा अपन पुत्र जकाँ मानने छी। तोहर सुख-सुविधाक दिन-राति अपन संतान जकाँ ध्यान रखने छी। तोहर एक्कोटा रोंआ भंग नहि होअए,ताहि लेल की नहि केने छी?परंतु हम अपन कर्तव्यसँ विवश छी। हम धर्मक रक्षार्थे तँ एतेक केलहुँ अछि। ऋषि होइतहुँ एक नहि,अनेक बेर अन्यायी सभक विनाश करबाक लेल अस्त्र उठओने छी। मोहवश हम अपने कएलकेँ कोना नष्ट होइत देखि सकैत छी?गलत व्यक्तिक हाथमे ब्रह्मास्त्र देबाक परिणाम हम सोचि सकैत छी। तखन?नहि,नहि। ऋषि,सन्यासीकेँ कथीक मोह?हम तँ स्वयं अन्यायक विरुद्ध जीवन भरि लड़ैत रहलहुँ अछि,क्षत्रिय राजा लोकनिक अन्यायसँ पृथ्वीकेँ मुक्त करबाक लेल कृत संकल्प रहलहुँ अछि। एही उद्येश्यसँ तोरा हम शिक्षित केने रही। हमरा उम्मीद छल जे तूँ हमरा बाद हमर सिद्धान्तकेँ आगू बढ़ेबह,ई सुनिश्चित करबह जे फेरसँ केओ दुष्ट अपन शक्तिक घमंडमे एहि वसुधापर अन्याय नहि कए सकत?मुदा

तूँ छली सिद्ध भेलह। आब तोहर रक्षा केओ नहि कए सकैत अछि। जे ब्रह्मास्त्र तूँ छलपूर्वक हमरासँ सिखलह सएह जखन अत्यंत महत्वपूर्ण युद्ध तूँ करैत रहबह तखने तोरा बिसरा जेतह ,काज नहि अएतह। ”

परशुराम ऋषि क्रोधसँ लाल भए गेल छलाह। लागि रहल छल जेना हुनकर देहसँ कखनहु महाविस्फोट भए जाएत। हुनकर हाथमे फरसा चमकि रहल छल। कहीं एहन ने होअए जे ओ ऐक बेर फेर प्रलयकेँ आमंत्रित कए देथि। हुनकर एहि विकराल स्वरुप देख कर्ण बहुत भयभीत भए गेलथि। हुनका द्वारा देल गेल श्रापसँ तँ ओ अर्धमुर्छित छलाहे। ओ निरंतर प्रार्थना कए रहल छथि,नियतिसँ निवेदन कए रहल छथि-

“हे नियंता!अहाँ हमरा संगे ई की कए रहल छी?हम स्वयं अपन जन्म,जन्मस्थानक बारेमे नहि जनैत छी। मुदा एतबा सुनि रहल छी जे हमर जन्म कतहु आनठाम भेल छल आ तखनहि हमर जन्मदात्री अपन लाज रखबाक लेल हमरा एकटा बाकसमे राखि नदीमे बहा देने छलीह। एहन अनाथ शिशु,जे जनमितहि नदीमे बहा देल गेल छल,आइ जीबि रहल अछि,अपना समयक श्रेष्ठतम धनुर्धारी बनए चाहैत अछि। चाहिते नहि अछि,ताहि लेल दिन राति एक केने अछि। ई स्वयंमे चमत्कार नहि तँ की अछि?ईहो तँ नियतिएक खेल अछि। हमरा एहि जोगर बनओलक के?अधिरथ आ राधा। हुनके कृपासँ हम जीबि गेलहुँ,जीवनमे एहि स्थान धरि पहुँचि सकलहुँ। हम कोना नहि कहिऔक जे अधिरथ आ राधा हमर सभ किछु छथि। ओएह हमर पालन-पोषण केलनि। हमर माता-पिता आर के भए सकैत अछि?जे जन्म देलक आ फेकि देलक तकरा माता-पिता कोना मानि सकैत छी? मुदा एहिसभमे हमर की दोष अछि?हम तँ निरंतर अपन दुर्भाग्यसँ लड़ैत रहल छी। हमरामे जन्मजात शक्ति अछि,जे ओज अछि,जे प्रतिभा अछि तकर किछु अर्थ

नहि?बस कुल,वंश,जे हमर अज्ञात अछि,तकरा आधार मानि ऋषिवर हमर सर्वनाश करबापर आतुर छथि।”

कर्ण व्याकुल छथि। एतेक परिश्रम आ निष्ठासँ प्राप्त कएल ब्रह्मास्त्रक ज्ञान जा रहल छनि। मुदा कइए की सकैत छथि?ऋषिवरक सामने मे नतमस्तक छथि। हुनका एहन बिकट श्राप दए ऋषिवर कोनो प्रसन्न छथि से बात नहि छैक। ओहो मोने मोन दुखी छथि। मुदा किंतु-परंतुक बीचमे ऋषिवर धर्मक आचरण करबासँ विवश छथि। परिणाम जे होइक। कर्ण श्रापित भए चुकल छथि। ऋषिक वाणी व्यर्थ भइए नहि सकैत अछि। तखन. . .। तखन की?

चारूकात सन्नाटा पसरि गेल अछि। कतहु फटकी काल अपन क्रूर ठहाका लगा रहल अछि। जेना कहि रहल अछि-

“देखलहक कर्ण?हमर चालि के बूझि सकैत अछि?मुदा निराश नहि होअह। तोहर कीर्ति पताका जुग-जुग धरि फहराइत रहत। जय-पराजय तँ होइत रहैत अछि,शत्रु-मित्र तँ अबैत-जाइत रहैत अछि। मुदा वीर ओएह कहबैत अछि जे प्रतिकूल परिस्थितिओ मे अपन संकल्पपर अड़ल रहि जाइत अछि।”

“आब भागि जाह एहिठामसँ। जा धरि तूँ एहिठाम रहबह हम दुखी रहब। ब्रह्मास्त्र छोड़िओ कए बहुत किछु तोरा लगमे बाँचल छह। जाह,हे मनुक्ख!अपन भाग्य सँ मुखापेक्षी होअह।”

एतबा बाजि ऋषिवर ओहिठामसँ बिदा भए गेलाह। कर्ण हतप्रभ ओतहि चुक्कीमाली बैसल रहि गेलाह।

कर्णकेँ श्राप देलाक बाद परशुरामक मोन क्रोध पश्चाताप,आ धर्म संकटसँ भरि गेलनि। ओ अपन एहन शिष्यकेँ श्राप दए दंड देलनि अछि जकरा

स्वयं दिन-राति परिश्रम कए आगू बढ़ओने छलाह। ओ अथाह पीड़ामे छलाह। लागि रहल छल जेना हुनकर मोनमे अन्हड़ उठि गेल होनि। ओ बेर-बेर एतबहि सोचि रहल छलाह-

"की हम न्याय केलहुँ? आ कि क्रोधमे एकटा महान आत्माकेँ अनेरे शक्तिहीन कए देलहुँ?"

ओ कर्णक आँखिमे देखलनि। ओहिमे कोनो छल नहि छल,अपितु,पीड़ा भरल छल। ओ मोने-मोन सोचलथि-

"हमर ई शिष्य तँ बड़ पैघ तपस्वी थिक।"

परशुराम सिनेहसँ अपन हाथ कर्णक माथपर रखैत छथि। अत्यंत भावुक भए जाइत छथि ।

"अहाँ महान होएब कर्ण। इतिहास अहाँकेँ मोन राखत– एकटा एहन योद्धाक रूपमे जे नियतिसँ,समाजसँ आ अंततः अपनहुसँ सभ दिन लड़ैत रहल।"

परशुराम कर्णकेँ श्राप भने दए देलथि मुदा हुनकर अपने मोनमे ओहि घटनाक बाद धर्म और करुणाक बीच द्वंद उत्पन्न भए गेल। ।ओ कर्णकेँ श्राप देलनि जरूर,मुदा हुनका आशीर्वादो देलनि। आ कर्ण?ओहि श्रापिकेँ अपन वीरताक अंग बना लेलथि।

ई की?ऋषिवर वापस कर्ण लग अबैत छथि। सिनेहसँ ओकर माथपर हाथ राखि दैत छथि। ओकरा साहस दैत छथि-

"चिंता नहि करह। हम तोरा आशीर्वाद दैत छी जे जा धरि ई पृ थ्वी रहत,तोहर नाम श्रद्धापूर्वक लेल जाइत रहत। तोहर कीर्तिसभ दिन अक्षुण रहत।"

कर्ण ऋषिवरकेँ दण्डवत प्रणाम करैत छथि । कहैत छथि-

“अपनेक देल सभ किछु सिरोधार्य अछि ऋषिवर।”

कर्ण परशुराम ऋषिक आश्रमसँ बिदा भए जाइत छथि। हुनकर पाथेय छनि ऋषिवर आ ब्राह्मणक देल श्राप, घनघोर परिश्रम आ अनुकरणीय अध्यवसायसँ अर्जित अस्त्र-शस्त्रक ज्ञान आ अपन पुरुषार्थ। ओ रस्ता भरि सोचैत रहि गेलथि –

सुनने रही परशुराम

छथि असगरे ठाढ़

अन्यायक विरुद्ध

अस्त्र-शस्त्रमे पारंगत

केलनि दुष्टक संहार

पता ईहो छल जे

ताकि रहल छथि

प्रतिभाशाली शिष्य

जकरा देथिन संपूर्ण शक्ति

जाहिसँ सुरक्षित

रहत सुधिजन समाज

नहि कए सकत केओ

अन्याय एकतरफा

शक्तिक घमंडमे

से तँ सत्ते

ओ हमरा की नहि देलनि?

ब्रह्मास्त्र पर्यंत
परंतु,सदा-सर्वदा जकाँ
एतहु हमर भाग्य
काज नहि केलक
विषकीट कए देलक भूर
निकलि रहल खून
देहसँ धराधर
तइओ नहि केलहुँ
कनीको प्रतिकार
चिंता छल जे
निन्न ने टूटि जानि
से तँ भेबे केलनि
ओ बूझिए गेलाह
जे हम ओ नहि छी
जे ओ बुझैत छलाह
एते सहनशील ब्राह्मण
अछि असंभव
पकड़ल गेल झूठ
परिणाम दुखद छल
शापित भेलहुँ हुनके सँ

जे पुत्रवत मानैत छलाह

संयोगवश फँसि गेलहुँ

बछरूक हत्यासँ क्रुद्ध

ब्राह्मण देलथि श्राप

हमर रथ,हमर ब्रह्मास्त्रक ज्ञान

सभ किछु भए जाएत व्यर्थ

घोर संकटमे

निराश,उदास हम

वापिस भए गेलहुँ

ऋषिक आश्रमसँ

जे जएबाक छल से गेल

मुदा हम छी कृतसंकल्प

जाधरि छी जीवित

दुर्योधनक ऋण चुकाबक अछि

मित्रता निबाहक अछि

जय-पराजय,जीवन-मृत्यु

यश-अयश सभ किछु

तोरे छह हे मित्र!

कर्ण जीविते अछि एही लेल

रहत अर्जुन वा हम

निर्णय करत युद्धभूमि

हमर जीवनमे आर अछिए की?

चली हस्तिनापुर

अपन मित्रक सानिध्यमे

१३

कर्ण जरासंध प्रसंग

कर्णक जीवन सभ दिन पुरुषार्थ आ भाग्यक बीचमे डमाडोल होइत रहल। ओ सर्वगुण संपन्न छलाह,वीर छलाह,पराक्रमी छलाह। अपन दृढ़ निश्चयमे पहाड़ोसँ बेसी अडिग छलाह। परिस्थिति चाहे जेहनो होइ,मुदा ओ कहिओ दुर्योधनक संग नहि छोड़लनि। नीति-अनीति,नीक-बेजाए दुर्योधन जे किछु करैत रहलाह,कर्ण आँखि मुनि कए हुनकर संग दैत रहलाह। कैक बेर दुर्योधन वीरोचित काज नहि करैत छलाह,गलत तरीकासँ अपन लक्ष्य प्राप्त करबाक चेष्टा करैत छलाह,तखन कर्ण हुनकर प्रतिवाद करैत छलखिन जरूर,मुदा अंततोगत्वा, मित्रताक निर्वाह करैत हुनका संगे ठाढ़ भए जाइत छलखिन। दुर्योधनकेँ हुनकर वीरतापर बहुत घमंड छलनि। हुनका कर्णपर बहुत विश्वास छलनि। हुनका विश्वास छलनि जे जा धरि कर्ण हुनका संगे छथि ताधरि केओ हुनकर अहित नहि कए सकत। एहि अतिविश्वासक कारण ओ पाण्डवक उचितो अधिकार देबाक लेल तैयार नहि भेलथि,सभ दिन हुनका लोकनिकेँ परेसान केने रहलथि। ततबे नहि कृष्ण धरिकेँ अपमानित करबासँ नहि चुकलथि। परिणाम सभ जनैत अछि।

कर्ण आ दुर्योधनक मित्रताक खिस्सा क्रमशः संपूर्ण पृथ्वीपर पसरि गेल । कर्ण सन वीर,निष्ठावान आ शौर्यसंपन्न मित्र जकरा संगे होइक तकरा भय कथीक? सएह हालति दुर्योधनक रहनि। ओ अपना लग ककरो मनुक्ख

बुझबे नहि करथि। हुनका एहि बातक विश्वास रहनि जे यदि किछु गड़बड़ी होएबो करत तखन कर्ण ओकरा सम्हारि लेताह। दुर्योधन कर्णकेँ अंगदेशक राजा बना कए हुनका सभ दिनक लेल ऋणी बना लेने छलाह। एहि तरहेँ कर्ण आ दुर्योधन दुनू गोटे एक दोसरक पूरक भए गेलथि। ने कर्णक बिना दुर्योधन रहि सकैत छलाह,ने दुर्योधनक बिना कर्ण।

एकदिन कर्ण आखेटक लेल जंगलमे घुमि रहल छलाह। हुनका रस्ता बिसरा गेलनि। जंगलमे बौआइति-बौआइति ओ जरासंधक राजधानी लग पहुँचि गेलाह। ओहिठाम जरासंध सदल-बल युद्धाभ्यास कए रहल छलाह। कर्ण हुनका सामने देखि हँसि देलखिन-

“एतेक पुरान आ प्रखर योद्धा छी अहाँ,मुदा अखन धरि नीकसँ सस्त्र चलाएब नहि अबैत अछि।”

“खबरदार!तोरा पता छह जे हम के छी?तोरा सन-सन कतेकोकेँ अपन जहलमे सरा रहल छी। हमरा डरे कृष्ण मथुरा छोड़ि कए द्वारका भागि चुकल छथि। एहि पृथ्वीपर साइते कोनो राजा हमर बात काटि सकत। तूँ अपन गलती मानह नहि तँ जल्दीए तोरा स्वर्ग पहुँचाबए पड़त।”

“हम जे छी   तकर की मतलब? वीर अपन परिचय काजसँ दैत छथि,ने कि बातसँ। एतेक गुड़गुड़ेबाक कोन काज छैक?तोरामे यदि साहस छह तँ सोझे लड़ि किएक ने लैत छह? ”

“अबस्स। स्वागत अछि तोहर।”

एहि तरहेँ कर्ण आ जरासंधक बीच भयाओन द्वंद युद्ध शुरू भए गेल। जरासंधकेँ कर्णक बलक अनुमान होमए लगलैक। ओ कर्णक घात-प्रतिघातक उत्तर नहि दए पाबि रहल छल। ओकरा अनुमान भए गेलैक जे यदि किछु काल आर युद्ध चलल तँ ओकर प्राण नहि बचतैक। अस्तु,ओ कोनो बहन्ना

कए कर्णक संगे द्वंद युद्धकेँ बंद करबाक व्योंतमे लागि गेल। ओ कर्णकेँ प्रशंसा करैत बाजल-

“हम तोहर वीरतासँ बहुत प्रभावित छी। बहुत दिनक बाद एहन महान योद्धासँ भेंट भेल। हम तोहार लोहा मानि लेलहुँ। तूँ महान योद्धा छह आ अपन शक्तिकेँ बचा कए राखह जाहिसँ समाजक उपकार भए सकैक। आब युद्ध बंद होएबाक चाही। एहि अद्भुत शौर्य प्रदर्शनक लेल हम तोरा मालिनी नामक सहर उपहारस्वरुप प्रदान करैत छी ।”

एहि तरहेँ कर्ण आब अंगदेशक अतिरिक्त मालिनीक सेहो राजा भए गेलाह। कर्णक एहि उपलब्धिसँ दुर्योधन बहुत प्रसन्न भेलथि। ओ कर्णकेँ हस्तिनापुर वापस अएलाक बाद राजसभामे सम्मानित केलथि। राजसभामे कर्ण दुर्योधनक जयगान होइत रहल। चारूकात कैक दिन धरि रसनचौकी बजैत रहल। जकरे देखू सएह कर्णक वीरताक चर्चा करैत छल।

एहि तरहेँ कर्ण आ दुर्योधनक मित्रता बढ़ैत रहल। कर्ण दिन-राति दुर्योधनक छाँह जकाँ संग दैत रहलाह। परिणाम भेल जे दुर्योधन दिन-प्रतिदिन अत्यंत निर्भीक आ घमंडी होइत गेलाह । जे मोन होइत छलनि से करथि। राज परिवारक वरिष्ठ लोकनिक सेहो ओ कोनो धाख नहि करथि। भीष्म पितामह पर्यन्त हुनका दुनूक मित्रतासँ परेसान रहथि। हुनका ई बुझबामे कनीको सक नहि रहि गेल रहनि जे दुर्योधन कर्णेक बले पाण्डव लोकनिकेँ उचित अधिकारसँ वंचित रखबाक लेल तरह-तरहक षड़यंत्र करैत रहैत अछि। ई कोनो तरहेँ शुभ संकेत नहि छल। मुदा ओहो असमर्थ भए गेल छलाह। मात्र कर्णेटाक प्रभाव दुर्योधनपर होइत छलनि। कर्णक तँ बस एक्केटा लक्ष्य रहनि-“कोनो हालतिमे हमर मित्रक झंडा फहराइत रहए। चाहे ओहि लेल जे करए पड़ए। नीक -बेजाएक कोनो सीमा नहि।”

एक बेर कर्ण आ दुर्योधन एकान्तमे बैसल मदिरा पीबि रहल छलाह। मदिराक निसाँमे दुर्योधन बकए लगलथि-

“हमरा किछु दिनसँ राति कए निन्न नहि होइत अछि। राति-राति भरि करोट बदलैत रहि जाइत छी।”

“से किएक?हमरा अछैत तोरा की परेसानी भेलह?हमरा तुरंत बताबह जाहिसँ हम एतए बैसले-बैसल ओकरा समूल नष्ट कए दी आ अजुका राति तूँ निश्चिन्त सुति सकह।”

“तोरा की की कहियह?हमर सभटा काज तँ तूँ करिते छह। मुदा अखनुका समस्या किछु आर अछि।”

“स्पष्ट किएक नहि बजैत छह?हम जीबि किएक रहल छी?यदि हमर शक्तिपर तोरा विश्वास नहि रहि गेल छह ,तखन हमरा जीनाइ व्यर्थ अछि। हम तुरंत एहि दुनिआसँ चलि जाएब बेसी पसिंद करब। कोनो वीरक लेल ई सुखद स्थिति नहि भए सकैत अछि जे ओकरा अछैत ओकर मित्रक जीवन कष्टकर बनल रहैक।”

“तूँ तँ तमसा गेलह। आब जखन तूँ कहिते छह तखन सभ बात कहिए दैत छिअह। कलिंग देशमे स्वयंवर भए रहल छैक। ओहि ठामक राजा स्वयंवरक लेल देश-विदेशक राजासभकेँ आमंत्रित केलनि अछि। हमरो बजाओल गेल अछि। हम ओहि कन्याक सौंदर्यक बारेमे बहुत किछु सुनि चुकल छी। हमर इच्छा अछि जे ओकरासँ बिआह करी।”

“एहिमे चिंता करबाक कोन बात छैक?हमरा रहैत तोरा छोड़ि केओ आर ओहि स्वयंवरकेँ नहि जिति सकैत अछि। तूँ निश्चिंत रहह।”

कर्णपर दुर्योधनकेँ बहुत विश्वास छलनि। एक बेर ओ जखन आश्वासन दए देलखिन तँ बात बनि गेल। दुर्योधन आब स्वयंवरमे जएबाक लेल तैयारीमे

लागि गेलाह। नव-नव राजकीय वस्त्रक व्यवस्था कएल गेल। कर्ण सेहो अपना भरि तैयारीमे लागि गेलाह। हुनका संगे दुर्योधनक आर भाए लोकनि सेहो तैयारीमे लागि गेलाह।

आखिर ओ दिन आबि गेल। दुर्योधन,कर्ण आ हुनकर परिवारक अन्य गणमान्य लोकनि कलिंग देशमे आयोजित भए रहल स्वयंवरमे सामिल होएबाक लेल बिदा भेलाह।

कलिंग देशक राजधानी उत्सवक रंगमे सराबोर छल। राजमहलक प्रांगण सुवर्णक तोरण, रत्नजड़ित सिंहासन आ पुष्पवृष्टि सँ एहन सजल छल जेना स्वर्गक द्वार पृथ्वी पर उतरि गेल होअए। ओहि दिव्य मंच पर कलिंग राजाक कन्या—कणिकादेवीक स्वयंवरक आयोजन छल।

कणिकादेवी—राजवंशक गौरव, सौंदर्यक प्रतिमूर्ति आ बुद्धिक तेजसिनी—अपन जीवनसंगीक चयन करबाक लेल मंच पर आबि चुकल छलीह। भारतक कोन-कोन सँ वीर, राजकुमार आ महारथी सभ ओहि सभा मे उपस्थित छलाह—अपन-अपन सामर्थ्य आ सौंदर्यक प्रदर्शन करबाक लेल।

शंखध्वनि सँ स्वयंवरक प्रारंभ भेल। राजसभा शंखनादक गूँजसँ गमकि उठल। सभक दृष्टि ओहि दिव्य राजकन्या पर टिकल छल। मुदा ओहि भीड़मे एक जोड़ी आँखि छल जे सौंदर्य नहि, मित्रक भविष्य देखि रहल छल—ओ छलाह कर्ण।

कर्ण—अंगराज, दुर्योधनक प्रियतम मित्र। ओ स्वयंवरमे भाग लेबाक अधिकार नहि रखैत छलाह, कारण ओ राजवंशीय नहि रहथि। मुदा हुनकर आत्मगौरव ओतबे प्रखर छल जेना कोनो महारथीक। ओ मंचक एक कोनमे ठाढ़ छलाह—निःशब्द, मुदा सजग।

दुर्योधन—कुरुवंशक युवराज—ओहि स्वयंवरमे अपन राजसी ठाठ-बाट संग उपस्थित छलाह। हुनकर व्यक्तित्व आ सामर्थ्य दर्शनीय छल। मुदा कणिकादेवीक दृष्टि हुनका पर नहि पड़लनि। ओ अपन पसिंदक वरक खोजमे लागल रहलीह। दुर्योधन बुझि गेलथि—ओ हारि रहल छथि। ओ अपन मित्र कर्ण दिस देखलथि। कर्ण बात बुझि गेलथि। हुनकर आँखि मे एकटा ज्वाला प्रज्वलित भेल—सम्मानक, मित्रताक आ प्रतिज्ञाक। तखन दुर्योधन, कर्णक मौन समर्थनसँ, स्वयंवरक परंपरा तोड़ि देलथि। ओ कणिकादेवीकेँ बलपूर्वक उठा अपन रथ पर बैसा लेलथि। सभा स्तब्ध भए गेल। राजा लोकनि क्रोधित भए युद्धक मुद्रा मे आगू बढ़लाह। मुदा कर्ण ओहि रथक आगू ठाढ़ छलाह—धनुष उठेलनि। हुनकर दृष्टि निर्भय छल। जे-जे राजा युद्ध करबाक लेल आगू बढ़लाह, कर्ण असगरे हुनका सभकेँ पराजित कए देलथि। ओ मित्रक सम्मानक लेल वीर योद्धा जकाँ लड़लाह—आ विजयी भेलाह। राजसभा युद्धभूमि बनि गेल। मुदा कर्णक प्रतापक आगू कोनो राजा टिकि नहि सकल। ओ सभकेँ पराजित कए देलथि। कणिकादेवी, दुर्योधन आ कर्ण रथ पर चढ़ि हस्तिनापुरक दिशि प्रस्थान कएलाह।

हस्तिनापुर पहुँचि राजमहलमे धूमधामसँ विवाहक आयोजन भेल। कणिकादेवी आ दुर्योधनक विवाह संपन्न भेल। सभक दृष्टि मे विजेता दुर्योधन छलाह, मुदा सही अर्थमे विजय तँ कर्णक छल। ओहि राति राजमहलमे उत्सव आयोजित भेल। कर्ण सेहो ओहिमे सहभागी भेलाह—हुनकर मोनमे संतोष छल। ओ अपन मित्रक अभिलाषा पूर्ण करबामे सहयोगी बनलाह। एहन मनहान छलाह कर्ण—एहन पवित्र छलनि हुनकर मित्रताक भाव।

"मित्रक विजयमे जे अपन अस्तित्व बिसरि देथि—ओहि सँ पैघ योद्धा के?"

कर्णक मौन मुस्कान ओहि प्रश्नक उत्तर छल।

१४

दुर्योधन कर्णक मित्रता

ओना तँ एहि संसारमे किछु स्थायी नहि होइत अछि,जे अबैत अछि से जाइत अछि,जकर प्रारंभ होइत छैक तकर अंतो निश्चिते अछि। जे उत्थानपर अछि ,तकर पतनो अवश्यंभावी छैक। ई संसारक नियम छैक। मुदा कर्णक संग दुर्यधनक मित्रता एहि अकाट्य नियमक अपवाद छल। समय केहनो प्रतिकूल भेल,मुदा कर्ण दुर्योधनक संग नहि छोड़लथि,अपितु सभ हालमे हुनका संगे चट्टान जकाँ अडिग रहलथि। जखन दुर्योधनक समय अनुकूल छलनि तखन कर्ण हुनका संगे राजसी सुख केलनि। आनन्दक कोनो एहन क्षण नहि छल जखन कि दुर्योधन कर्णक बिना रहि सकथि। हुनका दुनूक प्रेम परस्पर छल,अनन्य छल। दुनिआक कोनो ताकति ओकरा खंडित नहि कए सकल। भगवान कृष्ण स्वयं सेहो से नहि कए सकलथि। तकर कारण अछि जे कर्ण सचमुचकेँ महान छलाह। ओ अद्वितीय योद्धा छलाह। ओहि समयक समस्त शस्त्र आ अस्त्रमे पारंगत छलाह। एतेक गुणक अछैतो अवसर पबितहि समाजक पुरोधा लोकनि हुनका सूतपुत्र कहि कए अपमानित करबासँ नहि चुकैत छलाह,जखन कि ई बात सभ जनैत छलाह जे ओ सूतपुत्र जन्मजात नहि छलाह। अधिरथ आ राधा हुनकर पालन केने छलखिन। एकटा अनाथ शिशु नदीमे फेकि देल गेल छल,कारण हुनकर जैविक माता-पिता अपन पापपर परदा देबए चाहलथि। मुदा पाप तँ डिरिआइत छैक। एतहु सएह भेलैक। कर्णक जैविक माता जीवन भरि पश्चातापक आगिमे जरैत रहि गेलीह। ओ घटना हुनक मोनमे एहन घाव कए देलक जे कहिओ भरि नहि सकल। मुदा कर्ण अपन वीरता आ पुरुषार्थसँ तत्कालीन समाजमे अपन स्थान बनओलथि। हुनके बल आ   मित्रताक बले ओ कहिओ झुकलाह नहि। हुनकर इएह घमंड हुनका लए बैसलनि। ओ कर्णक बले पाण्डव लोकनिकेँ उचित

अधिकारसँ वंचित रखलाह। लोक सही बजैत छथि जे यदि कर्ण नहि रहितथि हुनकर संगे तँ महाभारत होइते नहि। दुर्योधन एहन दुस्साहस केबे केलथि कर्णेक कारण। मुदा कर्णो की करितथि?जखन सभ केओ हुनका अपमानित करबापर लागल रहथि,तखन एक बेर नहि,अनेक बेर दुर्योधने हुनकर सम्मानक रक्षा केलनि। हुनका अंगदेशक राजा बनओलनि जाहिसँ कर्ण पाण्डव लोकनिक सामने सम्मानित अनुभव करथि आ हुनका बराबरीमे ठाढ़ होथि। कर्ण सभ दिन अन्यायक विरुद्ध लड़ैत रहलथि। अंत-अंत धरि ओ एहि प्रयासमे लागल रहलथि। द्रोणाचार्य,परशुराम सभ हुनका संगे अन्याय केलखिन। द्रोणाचार्य सदिखन अर्जुनकेँ आगू करए चाहलथि। कर्णक अर्जुन संगे शत्रुताक कारणेँ इएह छल। जातिक कारण परशुराम कर्णकेँ अपने द्वारा देल गेल ब्रह्मास्त्रसँ वंचित कए देलखिन। हुनका जखने पता लागि गेलनि जे कर्ण ब्राह्मण नहि छथि तखनहि श्राप दए देलखिन जे हुनकर ब्रह्मास्त्र ऐन अवसरपर काज नहि देतनि। एहन -एहन बहुत तरहक अन्याय हुनका संगे होइते रहलनि। तथापि,ओ दृढ़ताक संग अपन कर्तव्यपथपर अडिग रहलथि। कोनो हालतिमे दुर्योधनक संग नहि छोड़लथि।

कर्णक जीवनमे दुर्योधनक मित्रताक अतिरिक्त छलनिहे की?हुनकर प्रसन्नता,दुख,जय-पराजय,लाभ-हानि सभक एक मात्र उद्येश्य छल अपन मित्र दुर्योधन। तकर कारण छल जे हुनकर मोनमे एकटा सन्नाटा छल। एकटा एहन भावनात्मक खधिआ छल जे कहिओ भरल नहि जा सकल,भरलो नहि जा सकैत छल। कहू जे एकटा अबोध शिशु टुकुर-टुकुर तकैत रहि जाइ आ ओकर कुमारि माए अपन लाज बचेबाक लेल ओकरा एकटा बाकसमे राखि दूपहर रातिमे नदीमे बहा दैक?क्रूरताक पराकाष्ठा छलैक ने ओ। ओहि शिशुक अकाल मृत्यु तँ निश्चिते छलैक। सएह सोचि आ से स्वीकार कइए कए हुनकर जन्मदात्री हुनका नदीमे बहा देलखिन। चलू संतान गेल तँ गेल,मुदा लाज तँ बाँचल।

मुदा ईश्वर जकर रक्षा करए चाहैत छथि तकरा सभ व्योंत स्वयं होइत रहैत अछि। जनमितहि कर्णकें कवच-कुण्डल छलनि जाहिसँ हुनकर रक्षा स्वतः होइत रहतनि। नदीमे बहैत काल हुनकर पिता सूर्य सदिखन हुनकापर ध्यान रखलखिन आ ताधरि साँस नहि लेलनि जाधरि ओ बाकस अधिरथक हाथमे ने पहुँचि गेल।

संयोग आ दुर्योगक एहन विलक्षण उदाहरण साइते कतहु आर देखबामे आओत। सएह कर्ण आइ ब्राह्मण आ परशुराम द्वार शापित भए हस्तिनापुर पहुँचि गेल छथि। ओ दुर्योधनक संग अपन मित्रताक रथपर निरंतर सवार छथि। हुनका लेल स्वयंवरसँ कनिआँ छिनि अनलनि अछि। दुर्योधन आनन्दमे छथि। अपन नूतन कनिआक संगे भोग-विलासमे लागि गेल छथि। मुदा कर्ण?दूपहर रातिक एकान्तमे सोचि रहल छथि-

कहाँ छथि जन्मदात्री?
एक्को बेर होइत दर्शन
पूरा होइत अभिलाषा
एहि फरेबी दुनिआकें
देखा दितिऐक
अपन जीवनक सत्य
हमहूँ छी उच्चकुलक संतान
मुदा हम की करू
छी विवश
नहि जनैत छी
अपने जीवनक सत्य

आ जरि रहल छी

अपमानक ज्वालामे

कहल जाइत छी

सूतपुत्र,अधम,अर्धरथी?

ई राज महल,राजसी ठाठ-बाट

सभअछि कष्टकर

अपमानक विषसँ भरल

हम ई सभ सहि

जीबि रहल छी

चुकाबी मित्रताक ऋण

आबी अहाँक काज

हमर जीवनक बस

इएह अछि अर्थ

हम जीवित छी

अहींक लेल

अन्यथा, जीवन आ मृत्यु

सभ व्यर्थ अछि।

मनुक्ख सोचैत अछि किछु होइत छैक किछु। इएह थिक जीवनक रहस्य। कर्ण परशुराम ऋषिक ओहिठाम गेल रहथि कथी लेल? पृथ्वीक सभसँ शक्तिशाली योद्धा बनाबक लेल। यद्यपि हुनकर पालन-पोषण अधिरथ ओहिठाम एकटा अलग परिवेशमे भेलनि,मुदा हुनकर जन्मजात संस्कार

युद्धविद्या सिखबाक लेल स्वतः प्रेरित करैत रहलनि। ओ प्रतिकूल परिस्थितिओमे अपन संस्कारक अनुकूल विद्या प्राप्त करबाक लेल पहिने द्रोणाचार्य आ फेर परशुरामक आश्रममे गेलाह। मुदा भाग्य हुनकर संग नहि देलकनि। द्रोणाचार्य तँ हस्तिनापुरक राजपरिवारक संतानसभक लेल ,ओहूमे विशेषतः अर्जुनक लेल जीबैत छलाह,ओ निष्पक्ष भइए नहि सकैत छलाह। तेँ ओ कर्णकेँ सदति धकिअबैत रहलाह,उचित सम्मान नहि दए सकलाह। ओकर प्रतिभाक सम्मान नहि कए सकलाह। मुदा परशुराम ऋषिक की कहल जाएत? ओ तँ स्वतंत्र छलाह। ओ स्वयं एकटा प्रतिभाशाली विद्यार्थी ताकि रहल छलाह। मुदा ओहो किंतु-परंतुसँ मुक्त नहि छलाह। हुनका चाहैत छलनि ब्राह्मण शिष्य जे हुनके जकाँ अन्यायक प्रतिकार करतनि। ओ सएह सोचि कए कर्णकेँ शिष्यक रूपमे स्वीकार केने रहथि। मुदा परशुराम द्वारा कर्णकेँ सभटा विद्या दान देलाक बादो हुनकर अभिलाषा पूर्ण नहि भेलनि। कारण?कर्ण ब्राह्मण नहि रहथि। परिणाम भेल जे कर्ण हुनका द्वारा शापित भए गेलाह। परशुराम तँ जे केलाह से केलाह,ओ ब्राह्मण कतएसँ आबि गेलाह?किएक कर्णक तीर हुनकर बछरूकेँ लागि गेलैक आ ओकर हत्या भए गेलैक?एहि सभक परिणाम भेल जे कर्ण सभ अस्त्र-शस्त्रमे पारंगत रहितहुँ किछु नहि कए सकलाह।

परशुराम ऋषिक आश्रमसँ कर्ण वापस अपन घर आबि गेलथि। राधा आ अधिरथ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेलथि। हुनका बिना ओ सभ शून्यताक अनुभव कए रहल छलाह। मुदा कर्णकेँ दिन-राति चिंतित देखि ओ सभ परेसान रहथि। हुनकासभकेँ बुझेबे नहि करनि जे सहीमे हुनका संगे की भेलनि?ओ एतेक दुखी किएक रहैत छथि? कर्ण असली बात हुनकासभकेँ कहथिन नहि। मुदा हुनका दुखी,चिंतित देखि अधिरथ बेचेन भए गेलथि । समाधान किछु फुराइन नहि।

कर्ण बेसी काल चुपचाप रहथि। एकदिन एहिना अपन घरक ओसारापर बैसल रहथि कि आँखि लागि गेलनि। ओ सपना देखि रहल छथि-

"ओ परशुराम ऋषिक आशीर्वादसँ ब्रह्मास्त्र सहित ओहि समयक सभ अस्त्र-शस्त्र सिखि चुकल छथि। हुनका आब अर्जुनक पराभव निश्चित बुझा रहल छनि। ओ बस अवसर ताकि रहल छथि। जहिए अर्जुन हुनकासँ सामना करथिन तखनहि हुनकर अंत निश्चित छनि। अर्जुनक गांडीव व्यर्थ भए जेतनि। नहि बँचा सकताह ओ अपन जीवन। अन्यथा रणक्षेत्रसँ भागि जेताह। हम विश्वक सर्वश्रेष्ठ योद्धा साबित भए जाएब।"

ओ ई सभ सपनाइते छलाह कि अधिरथ हुनका बड़बड़ाइत सुनि लेलखिन। हुनका बुझेबे नहि करनि जे कर्ण की सभ बाजि रहल अछि?एतबा जरूर सुनथि-

"सावधान अर्जुन. . .।"

ओ तुरंत अबाज दैत छथि-

"वसुषेण।"

पिताक अबाज सुनि हुनकर निन्न टूटि जाइत छनि। सपनाक व्यर्थतापर ध्यान जाइते ओ आर दुखी भए जाइत छथि।

१५

महाभारत युद्ध पूर्वक घटनाक्रम

पाण्डव लोकनिक गुप्तवास पूर्ण भए चुकल छलनि। आब ओ सभ उम्मीद लगओने छलाह जे दुर्योधन हुनकर इन्द्रप्रस्थक राज लौटा देथिन। मुदा दुर्योधनक मोनमे तँ सदति बैमानी रहैत छलनि। समझौता आ शांतिक समस्त प्रयासकेँ ओ निरंतर ध्वस्त करैत रहलाह। असल समस्या तँ ओकर मोनक ईर्ष्या भाव छलनि। ओ पाण्डव लोकनिक सुख बरदासे नहि कए सकैत

छलाह। भीष्म पितामह सहित अनेक महापुरुष अपना भरि हुनका बुझेबाक प्रयास करैत रहलाह। मुदा ओ दुष्ट शकुनीक सानिध्यमे बरबादे होइत गेलथि। कोनो प्रकारक शुभ भाव हुनकर मोनमे शकुनी उत्पन्ने नहि होमए दैत छल। ओकर बहिन गांधारीक आन्हरसँ जे बिआह भीष्म करबा देलथि तकर बदला ओ हस्तिनापुरक भविष्यकेँ बरबाद कइए कए लेलक। दिन-राति ओ दुर्योधनक कान भरैत रहैत छलनि। कैक बेर गांधारी स्वयं ओकरा मना करथिन। मुदा शकुनी कहाँ छल मानए बला। ओ दुर्योधनकेँ अपना हिसाबे तैयार करैत रहल। परिणाम भेल जे ओ पाण्डव लोकनिकेँ अपन शत्रु बूझए लगलाह।

जीवनमे जय-पराजए होइत रहैत छैक। जखन केओ एक संगे रहत तखन ओहीमे सँ केओ पैघ-छोट प्रारब्धवश होइत रहत। मुदा ई बात दुर्योधन कदापि नहि मानि सकलथि। ओ पाण्डव लोकनिक संगे निरंतर शत्रु भाव राखथि-खेलो मे ओहने व्यवहार करैत रहलथि। कतेको एहन अवसरक निर्माण कए पाण्डव लोकनिक विनाशक षड़यंत्र करैत रहलथि। मुदा पाण्डव सभ किछु सहैत रहलाह। नहि चाहलाह जे आपसमे युद्ध होअए। शकुनीक प्रभावसँ हस्तिनापुरमे जुआमे छलपूर्वक पाण्डव लोकनिक सभ किछु हरण कए लेलकनि। हुनका सभकेँ बारह वर्षक वनबास आ अंतिम एक आओर वर्षक गुप्तवासपर जएबाक लेल विवश कए देलकनि। ततबे नहि,यदि ओ गुप्तवास भंग भए गेल,यदि दुर्योधनकेँ पाण्डव लोकनिक ओहि अवधिमे पता लागि गेलनि,तखन फेर ओ सभ बारह वर्ष धरि वनबासमे रहताह। सोचिऔक जे पाण्डव लोकनिक जीवन केहन कठिन कए देल गेल रहनि?सेहो ओ सभ सहैत रहलाह,मात्र एही उम्मीदमे जे कहिओ-ने-कहिओ हुनको सभक भाग्य जगतनि,हुनको सभक संग न्याय हेतनि। मुदा से संभव नहि छल। दुर्योधन अड़ल रहलाह। भगवान कृष्ण स्वयं शांतिक प्रयासमे हस्तिनापुर गेलाह।

पाण्डव लोकनिक लेल मात्र पाँच गाम चाहैत छलनि। मुदा दुर्योधनक माथपर तँ टिकटिकिआ नाचि रहल छलनि। ओ स्पष्ट कए देलथि-

“बिना युद्धकेँ सूईक नोकोक बरोबरि जमीन ओ पाण्डव लोकनिकेँ नहि देताह। कारण जे पाण्डव लोकनिक गुप्तवास भंग भए चुकल रहनि। ओ सर्तक अनुसार बारह वर्ष फेर वनवासमे रहथु।”

कृष्ण अपना भरि बुझबैत रहि गेलाह जे शांति बहुत मूल्यवान वस्तु होइत अछि। तकरा स्थान देल जएबाक चाही। मुदा दुर्योधन कृष्णेकेँ बंदी बनेबाक प्रयास केलक। मुदा से कहीं संभव होइक?

शांतिक प्रयास असफल भेलाक बाद कृष्ण हस्तिनापुरसँ बिदा होइत काल कर्णकेँ अपना रथपर बैसा लैत छथि। कर्ण हुनकर आग्रहसँ चकित जरूर छथि,मुदा मना नहि करैत छथि। अपितु,मर्यदापूर्वक हुनका संगे बिदा भए जाइत छथि। कृष्ण थोड़े काल तँ कर्ण दिस देखैत रहि जाइत छथि,हुनकर मोनक भाव पढ़बाक प्रयास करैत छथि। फेर कर्णकेँ मुखातिब होइत कहैत छथि-

“कर्ण!एकटा बात कहियह?”

“अबस्स कहू। अहाँकेँ बातक मूल्य के नहि जनैत अछि?अहाँ जे कहबैक से हमर नीके लेल कहबैक।”

“तखन ध्यान सँ सुनह। असलमे तूँ सूतपुत्र नहि छह। तोहर जन्म कुंतीक गर्भसँ भेल छह। सूर्य तोहर पिता छथि। असलमे जखन कुंतीक पेटमे तूँ अएलह तखन ओ कुमारि रहथि। संयोगवश, ऋषि दुर्वासाक देल गेल मंत्रक प्रतापसँ ओ सूर्यकेँ आवाहन कए लेने रहथि। तकरे परिणाम भेल तोहर जन्म। मुदा कुंती लोकलाजवश तोरा अपना संगे नहि राखि सकलथि। भगवान सूर्यक परमर्शसँ ओ तोरा बाकसमे राखि नदीमे बहा देलथि। तोहर पिता सूर्य

ताधरि तोहर रक्षा करैत रहलथि जाधरि अधिरथ ओहि बाकसकेँ छानि कए गंगामे सँ ऊपर नहि कए लेलथि। एहि तरहेँ तूँ अधिरथ आ राधाक संतान मानल जाइत रहलह। से तँ जे भेल से भेल। आब तँ तूँ पैघ भए गेल छह,सभ तरहेँ शक्तिसंपन्न छह। दुनिआमे केओ तोरासँ श्रेष्ठ योद्धा नहि अछि। दुर्योधन तोरे बले कुदि रहल अछि। एहिमे कोनो दू मत नहि अछि जे पाण्डव लोकनि संगे ओ बहुत अन्याय केलक अछि। युधिष्ठिरकेँ शकुनी जुआमे छलपूर्वक हरा देलकनि आ हुनकर राज-पाट सभ किछु हरि लेलकनि। ततबे नहि,बारह वर्ष धरि जंगले-जंगल घुमैत रहबाक लेल विवश कए देलकनि। तकर बाद एक वर्ष गुप्तवास से ओ सभ केलथि। दुर्योधन तकर बादो तँ हुनकर राज्य लौटा दितनि। मुदा ओ से नहि मानलक। जखन संधि आ समझौताक आर कोनो रस्ता नहि रहि गेल तखन हम स्वयं हस्तिनापुर अएलहुँ। हमरा उम्मीद छल जे दुर्योधन पाँच गाम दए पाण्डव लोकनि संग समझौता कए लेत। मुदा ओ किएक से करत? उल्टे हमरे बंदी बनेबाक प्रयास केलक। बात-बातमे हमरा अपमानित करबाक प्रयास केलक। आब तँ युद्ध अवश्यंभावी बुझा रहल अछि। युद्ध विनाशकारी होइत अछि से कहबाक काज नहि। एहिमे ककरो हित नहि होएत। भाइ-भाइ एक-दोसरक हत्या करत। कुलक स्त्रीसभ विधवा हेतीह। चारूकात विनाश आ विध्वंशक राज भए जाएत। सोचहक जे एहनमे के बाँचत?के सुखी रहि सकत?आब जखन तोरा पता लागि चुकल अछि जे तूँ ज्येष्ठ पाण्डव छह,तखनहु दुर्योधनक संग देब उचित नहि होएत। अपितु,तोरा अविलंब पाण्डवक पक्षसँ सम्राटक रूपमे अभिषेक करब उचित अछि। तूँ ज्येष्ठ पाण्डव होएबाक कारण युधिष्ठिर सहित शेष चारू पाण्डवक अग्रज छह। युधिष्ठिर सहर्ष तोरा अपन परिवारमे सामिल कए लेताह। जखने तूँ पाण्डव कुलमे आबि जेबह,ई युद्ध रुकि जाएत। दुर्योधन तोरा बिना ई युद्ध नहि लड़ि सकत। एहि तरहेँ एकटा महाविनाश होएबासँ बचि जाएत। दुनिआमे तोहर

यश पसरि जाएत। पाण्डव लोकनि संगे अंततः न्याय भए सकतनि। बाजह,हम सही कहि रहल छी कि नहि?”

कृष्णक बात सुनि कर्ण जोर-जोरसँ कानए लगलाह। हुनकर आँखिसँ अविरल अश्रुक प्रवाह भए रहल छलनि। हुनकर चित्कारसँ चारू दिशा प्रकंपित भए रहल छल। लगैत छल जेना कर्णक हृदय हाहाकार कए रहल अछि। से सभ देखि कृष्ण चकित छथि,विस्मित छथि। हुनका किछु नहि फुरा रहल छनि,होनि जे कर्णकें बेकारे ई सभ कहलिऐक। मुदा आब तँ तीर हाथसँ निकलि चुकल छल। ओ किछु काल ओहिना कर्णकें छोड़ि दैत छथि। कर्णक करुणक्रंदन क्रमशः शांत भए जाइत छनि। कृष्ण हुनकर मनोदशाकें बुझि रहल छथि। जे प्रतिक्रिया कर्णमे भेलनि से अस्वाभाविक नहि छल,अपितु उचिते छल। एतेक पैघ कुलमे जन्म लेलाक अछैत कर्ण अपन परिचयक मोहताज रहि गेल छथि,अपितु कतेको बेर मात्र एही कारणसँ अपमानित कएल गेल छथि। ओ कदापि एहि अपमानक योग्य नहि छलाह। मुदा से भोगलथि। आब ओ ज्येष्ठ पाण्डव बनिए कए की करितथि? कर्ण क्रमशः शांत होइत छथि। फेर हुनकर आँखि लाल होमए लगैत छनि। भृकुटि चढ़ि जाइत छनि। ओ उत्तेजित भए जाइत छथि। ओ कृष्णकें सधल शब्दमे जबाब दैत छथि-

“हम मानैत छी जे अहाँ जे किछु कहि रहल छी से सत्य अछि,मुदा से बात आब अहाँ किएक कहि रहल छी?किएक ने ई बात माता कुंती तखन बजलथि जखन सभक सामने कृपाचार्य हमरा सूतपुत्र मानि अर्जुन संगे युद्ध करबाक अनुमति नहि देने रहथि। माता कुंती तँ ओहिठाम उपस्थित छलीह। ओ सभक सामने चिकरि कए कहि सकैत छलीह जे हम सूतपुत्र नहि,अपितु हुनके संतान छिअनि। हमहूँ पाण्डवे थिकहुँ। तखने सभटा समस्या समाप्त भए गेल रहैत। हम हुनकर जीवन भरि आभारी रहितिअनि। दुर्योधनकें हमरा राज दए उपकृत करबाक अवसर नहि भेटितैक,ने हम ओकर ऋणसँ दबल रहितहुँ।

मुदा ओ से कहाँ केलथि। अपितु,चुप रहि गेलथि। केहन निर्दयी माए छथि ओ। एकटा जन्मौटी बच्चाकेँ बाकसमे राखि दूपहर रातिमे चुपचाप नदीमे बहा देलनि। हुनकर मातृहृदय तखन किएक ने चित्कार केलकनि?किएक ने ओ समाजक मान्यताक विरुद्ध होइतहुँ हमरा अपन संतान स्वीकार केलनि?यदि से केने रहितथि तँ हमरा भविष्य किछु आर होइत। हमहूँ ससम्मान अपन जिनगी जीबि सकितहुँ। धन्य कही पिता अधिरथ आ माता राधेकेँ जे हमरा सन अनाथक पालन-पोषण केलनि,हमरा अपन परिचय देलनि। हुनकेसभक कृपासँ हम आइ जीबित छी, एहिठाम धरि पहुँचल छी। बात ततबे नहि अछि। हमर बिआह सूतवंशक कन्या लोकनिसँ भेल अछि कारण हम ओहीवंशक संतान मानल जाइत छलहुँ। हुनके लोकनिसँ हमर संतानोसभ जन्म लेलक अछि। हम हुनका लोकनिक संग विश्वासघात कोना कए सकैत छी?कोना हम अधिरथ आ राधाकेँ हमरासँ पिण्डदानक अधिकारसँ वंचित कए सकैत छी?"ई सभ आब असंभव लगैत अछि। एतेकक अछैत यदि हम अहाँक बात मानिए लैत छी,ज्येष्ठ पाण्डव बनिए जाइत छी ,तँ युधिष्ठिर तुरंत हमरा राज्य सिंहासन दए देताह,अपने राजा बनब कदापि स्वीकार नहि करताह। यदि से भेल तखन हम की करब?हम तँ दुर्योधनक ऋणसँ दबल छी,ओकर उपकारक बदला देबासँ विवश छी। हम सहर्ष ओ दुर्योधनक पैरपर राखि देबैक। पाण्डव लोकनि फेरसँ ओहिनाक-ओहिना दरिद्र रहि जेताह। अस्तु,हे देवकीनंदन!हमरा क्षमा करू। हम जहिना छी तहिना रहए दिअ। हमरा दुर्योधनक ऋणसँ मुक्त होमए दिअ। राधा आ अधिरथक अतिरिक्त हमर आब केओ माता-पिता नहि भए सकैत छथि। हमरा लेल ओएह सभ किछु छथि। हमरा लेल राज-पाट,मान-सम्मान सभ व्यर्थ थिक।"

"तात्पर्य जे आब युद्ध होएबे करत? कोनो बात नहि। आब हमरा लोकनिक अगिला भेंट युद्धेमे होएत।"

"हम जनैत छी देवकीनन्दन जे पाण्डव लोकनि युद्ध जीतबे कारताह। कारण जकरा संगे अहाँ स्वयं ठाढ़ रहबैक, तिनकर विजय तँ निश्चित छनिहे,होएबे करतनि। हम ईहो जनैत छी जे ई युद्ध भयाओन होएत आ कौरव पक्षक समस्त योद्धा लोकनि मारल जेताह। भीष्म पितामह,गुरु द्रोण सेहो नहि बँचि सकताह। मुदा पाण्डवो लोकनिक कम क्षति नहि हेतनि। रहल हमर बात। तँ हमर जीवनक एक मात्र लक्ष्य अछि अपन मित्र दुर्योधन सहायता करब,ओकरा संगे ठाढ़ रहब। हमर व्यक्तिगत ने कोनो अभिलाषा अछि ने कोनो महत्वाकांक्षा। हम तँ जनमिते मरि गेल रही,बाकसमे बंद कए नदीमे बहा देल गेल रही। तथापि,हम जीबित रहि गेलहुँ, एखन एहि ठाम अपनेक सम्मुख छी, से स्वयंमे चमत्कार अछि। परिणाम चाहे जे होइक। हम तँ एही बातसँ सुखी छी,खुस छी जे हमरा एहि युद्धमे अर्जुन संग मोकाबिला करबाक स्वर्णिम अवसर भेटत। हमर जीवनक ई चिर अभिलाषा पूर्ण होएत। ई तँ मृत्यु भुवन थिक। एहिठाम लोक अबिते अछि मरि जएबाक लेल। ओहुना क्षत्रियक वीर संतान ओछाओनपर पड़ल-पड़ल मरताह ताहिसँ तँ बहुत नीक होएत जे ओ सभ युद्ध करैत स्वर्ग प्राप्त करथि।"

एतबा बाजि कर्ण मुरी झुका लेलनि। फेर सिसकी पारए लगलाह। कृष्ण बहुत अनुनय-विनयसँ हुनका शांत केलखिनि। आखिर कर्ण कृष्णकेँ प्रणाम कए हुनकर रथसँ उतरि गेलाह। कृष्णक रथ आगू बढ़ि गेल।

१६

कवच-कुण्डल

आब युद्ध होएब निश्चित अछि। पाण्डव आ कौरव,दुनू पक्ष अपन-अपन शक्ति बढ़बएमे लागि गेल छथि। सभ एक-दोसरक मजगूत आ कमजोर पक्षक विश्लेषण कए रहल छथि। दुनू पक्ष एहि व्योंतमे छथि जे कहुना ई युद्ध जिति ली। पाण्डव लोकनिक सभसँ पैघ शक्ति छथि भगवान कृष्ण स्वयं।

अर्जुन अपन समस्त अस्त्र-शस्त्रकेँ पिजा कए रखनहि छथि। तहिना कौरव पक्षमे छथि भीष्म,द्रोण,कृपाचार्य,कर्ण सन-सन महारथी। हुनकर सभक नामे सुनि-सुनि ककरो मोन खराप भए सकैत छैक। मुदा ई सर्वविदित छल जे भीष्म आ द्रोण कोनो हालतिमे पाण्डव लोकनिक हत्या नहि कए सकैत छथि। ओ सभ हुनकर ओतबे प्रियपात्र छथि जतेक की कौरव । मजबूरीमे ओ सभ कौरवक पक्षमे ठाढ़ छथि। ओ सभ नीकसँ जनैत छथि जे न्याय पाण्डव लोकनिक पक्षमे छनि। ओ सभ दुर्योधनक घोर विरोधीओ छथि,मुदा विवश छथि। तेँ दुविधाग्रस्त छथि। चाहिओ कए युद्धमे निर्णायक सिद्ध नहि भए सकैत छथि। मुदा कर्ण?ओ अपन निष्ठा आ भूमिकामे एकदम स्पष्ट छथि। ओ कदापि दुविधामे नहि छथि। अर्जुन संग युद्ध हुनकर जीवनक लक्ष्य छनि। दुर्योधनक प्रतिए हुनकर निष्ठा अविचल छनि।

"प्राण रहए की जाए,मुदा मित्रक रक्षा होअए।"

वाह रे कर्ण!मित्रताक गुण तँ केओ हुनकासँ सीखए। कौरव सोचथि जे जखन कर्ण हमरा संगे छथि तखन विजय होएबे करत। ओमहर पाण्डव लोकनि निरंतर एहि चिंतामे रहथि जे कर्णक सामना कोना कएल जाएत?एही चिंतामे इन्द्र सेहो रहथि। अपन पुत्र अर्जुनक जीवन रक्षाक लेल ओहो बहुत चिंतित रहथि। आखिर हुनका एकटा व्योंत फुरेलनि। ओ छलपूर्वक कर्णक कवच-कुण्डल ओकर देहसँ निकालबाक प्रयत्नमे लागि गेलाह। ई बात तुरंत सूर्यकेँ अपन अलौकिक शक्तिसँ पता चलि गेलनि। ओ सपनामे अर्जुनकेँ सचेत करैत छथि।

" कर्ण!"

"अपने के छी? अर्धरात्रिमे दर्शन देबाक की तात्पर्य अछि?"

“हम छी सूर्य। हमही अहाँक पिता छी। कुंती अहाँक माता छथि। लोकलाजवश हमर आज्ञासँ अहाँकेँ ओ नदीमे बहा देने रहथि। मुदा अहाँक रक्षार्थ जन्महिसँ हम अपन कवच-कुण्डल देने रही। एकरा अछैत केओ अहाँक क्षति नहि कए सकैत अछि।”

“अपने हमर पिता छी?कुंती हमर माता छथि?”

“तूँ सही सुनि रहल छह कर्ण?”

“मुदा अकस्मात अहाँक प्रकट होएबाक कारण?”

“काजे तेहने आबि गेल अछि जे हम रुकि नहि सकलहुँ?”

“की बात?”

“अर्जुनक पिता इन्द्र ब्राह्मणक भेषमे तोरासँ छलपूर्वक कवच-कुण्डल मांगबाक लेल आबि रहल छथि। हुनकर बात हरगिज नहि मानिअह। कवच-कुण्डल तोहर जीवन रक्षक अछि। ओकरा हटि गेलासँ तोहर सुरक्षा मोसकिल भए जाएत।”

“से जे होएत,परंतु हम आगन्तुक ब्राह्मणकेँ मंगलापर दान देबे करबनि। से भने हमर कवच-कुण्डले किएक ने होइक।”

“यदि सएह तोहर इच्छा अछि,तखन एकटा काज जरूर करियह।”

“की?”

“इन्द्रसँ कवच-कुण्डल देलाक बाद हुनकर अमोघ अस्त्र मांगि लिअह। ओ अचूक अछि । ओहिसँ तोहर रक्षा भए सकत।”

“ठीक छैक। हम अपनेक ई बात मानि लेब।”

पिता-पुत्रक संवाद खतम भेल। कर्णक सपना टूटि गेलनि। मुदा ओ ओछाओनपर पड़ल-पड़ल बड़ीकाल धरि एहि विषयमे सोचैत रहि गेलाह।

नित्यप्रति जकाँ आइओ कर्ण भोरे गंगामे स्नान कए भगवान सूर्यक आराधना कए रहल छलाह। भगवान सूर्य आइ उदास लागि रहल छलाह। हुनकर तेज मलिन पड़ि रहल छलनि। कारण? ई देखि रहल छलाह जे ब्राह्मणक भेषमे इन्द्र छलपूर्वक कर्णक कवच-कुण्डल हरण करबाक लेल कर्ण दिस अग्रसर भेल जा रहल छथि। ओ सभ किछु देखि रहल छलाह,बुझि रहल छलाह,मुदा विवश छलाह। अपना भरि कर्णकेँ चेतौनी देने रहथि। मुदा कर्ण अपन प्रतिज्ञापर दृढ़ छथि। सूर्योपासनाक बाद जे ब्राह्मण हुनकासँ दान मांगए अओताह,से वापस नहि जेताह। हुनका वांछित दान भेटबे करतनि। ई बात इन्द्रोकेँ बुझल छलनि। तकरे फएदा उठाबए ओ आबि रहल छलाह। अबितथि कोना नहि? अपन पुत्र अर्जुनक प्राण रक्षार्थ ओ किछु करबाक लेल आतुर छलाह। इएह थिकैक मोह। मनुक्ख आ देवता सभ एहिठाम बेबस छथि।

कर्ण फटकी ठाढ़ ब्राह्मणकेँ देखि मोने-मोन हँसि दैत छथि।

"आबि गेलाह प्रपंची इन्द्र। कोनो बात नहि। देखा चाही ई की चाहैत छथि?"

आब ब्राह्मण हुनकर सामने आबि गेल छथि। कर्ण हुनका देखितहि बाजि उठलाह-

"प्रणाम ब्राह्मण देवता! सूतपुत्र कर्णक लेल की आदेश अछि?"

"हम आदेश की करब?हम तँ याचक छी। मात्र आग्रह कए सकैत छी।"

"अपने एना किएक बाजि रहल छी?अहाँकेँ जे इच्छा होअए से बाजू। हम ओकरा अबस्स पूरा करब। जतेक धन चाही,घर चाही,घरनी चाही सभ किछु तुरंत आबि जाएत।"

“मुदा हमरा से सभ किछु नहि चाही।”

“तखन?”बजिऔक तँ। हमरा अपन सेवाक अवसर तँ देल जाए।”

“हमरा अहाँक कवच-कुण्डल चाही। आर किछु नहि।”

“अहाँ ब्राह्मण छी,ई सभ की करब?फेर ई तँ हमरा संगे जन्मजात अछि। हमर देहक अंग अछि। एकरा देहसँ नोचबाक लेल हमरा अपार कष्ट करए पड़त। अपने हाथे अपन देहक भुजरी करए पड़त। अपने सन ब्राह्मणक लेल से परिस्थिति उत्पन्न करब कतहुसँ न्यायोचित नहि बुझाइत अछि।”

“अहाँ कबाइति नहि पढ़ू। हम तँ पहिनहि स्पष्ट कए चुकल छी। यदि हमरा अहाँ मांगल वस्तु नहि देबए चाहैत छी,तँ कोनो बात नहि। हम वापस चलि जाएब। मुदा अहाँक टाटक दुनिआमे देखार भए जाएत। लोक कहत जे अनेरे ई महादानी बनल फिरि रहल छथि। से सोचि लिअ।”

“अहाँकेँ एना नहि बजबाक चाही। हम अपन नियम कदापि नहि तोड़ब। अहाँकेँ अपन कवच-कुण्डल अबस्स देब।”

से बाजि कर्ण तुरंत कृपाण उठा अपन देहसँ कवच-कुण्डल निकालि ओहि ब्राह्मणक हाथमे राखि दैत छथि। कर्णक संपूर्ण शरीर खूनसँ लथपथ अछि। तथापि,ओ तेजसँ भरल छथि। हुनकर उत्साहमे कनीको कमी नहि छनि। ओ ब्राह्मणकेँ झुकि कए प्रणाम करैत छथि। हुनकर व्यवहारसँ इन्द्र बहुत प्रसन्न छथि। ओ कहैत छथि-

“कर्ण हम अहाँसँ बहुत प्रसन्न छी। एहिठामसँ जएबासँ पहिने अहाँकेँ किछु देबए चाहैत छी। बाजू हम अहाँकेँ की दी?”

“यदि अहाँ हमरा किछु देबहि चाहैत छी तँ अपन अमोघ अस्त्र दिअ।”

कर्णक आग्रह सुनि इन्द्र चिंतामे पड़ि जाइत छथि। फेर कहैत छथि-

“हम अमोघ अस्त्र अहाँकेँ देब जरूर मुदा एक सर्तक संग।”

“कोनो बात नहि। बाजू,की सर्त अछि?”

“सर्त ई अछि जे अहाँ एकर उपयोग एक्के बेर कए सकब ,ओहो तखनहि जखन कि अहाँ लग कोनो आर विकल्प नहि रहि जाएत,जखन युद्धमे अहाँक प्राण संकटमे पड़ि जाएत। अन्यथा ई अहींक प्राण लए लेत। एहन परिस्थितिमे प्रयोगक बाद अमोघ अस्त्र हमरा लग वापस आबि जाएत।”

ब्राह्मण बेसमे इन्द्र कर्णकेँ अमोघ अस्त्र दए हुनकर कवच-कुण्डल लए प्रस्थान कए गेलथि। कर्ण सेहो अमोघ अस्त्र भेटि गेलासँ संतुष्ट रहथि।

“हमरा तँ बस अर्जुनकेँ मारबाक अछि। ताहि लेल ई पर्याप्त अछि।” कवच-कुण्डल रहित लहुलहान भेल कर्ण गंगा कातसँ वापस अपन घर दिस बिदा भए गेलाह। रस्ता भरि ओ इन्द्रक कुटिलता आ छलपूर्ण व्यवहारक बारेमे सोचैत रहि गेलाह।

हमर दुखक नहि अन्त

भाग्यकक एहन खेल

जे जनमितहि

बहा देल गेलहुँ धारमे

निर्दयी माए

सिसकी पारैत रहि गेलीह

हमरा बाकसमे राखि

फेकि देलथि दूपहर रातिमे

आकाशमे टिमटिमाइत

तारामण्डल समेत क्षुव्ध छलाह
कुंतीक क्रूड़ कृत्यपर
वापस चलि गेलीह राजमहल
अपन अक्षत कौमार्यक संग
जकर माता पिता छल महान
तकरा नहि भेटि सकल
अपन कुलक पहिचान
कहबैत रहि गेलहुँ हम सूतपुत्र
के नहि केलक तिरष्कृत?
धन्य कही दुर्योधनकेँ
जे केलक हमरा संपन्न
जे हमहूँ कहा रहल छी महाराज
सम्मानित छी नृपति समाजमे
भीष्म,द्रोणाचार्य,परशुराम ऋषि पर्यन्त
करैत रहलाह प्रताड़ित
जातिक नामपर
जातिप्रथा जे अछि कलंक
समस्त मानवतापर
प्रतिभा,योग्यतासभ व्यर्थ
आब जखन युद्ध

अछि अवश्यंभावी
हम छी दुर्योधनक अभिन्न मित्र
हमरे बले ओ अड़ल अछि
नहि सुनि रहल अछि
भगवान कृष्णोकेँ
सभ जनैत अछि ई बात
नहि लड़ि सकत
ओ हमरा बिना
जे अछि हमर जन्मजात शक्ति
जकरा अछैत
नहि मारि सकत केओ
कवच-कुण्डल लेबाक लेल
इन्द्र आबि रहल छथि
दोष ककरा देबैक?
सभ अछि विवश नियतिवश
खूनसँ लथपथ कर्ण
पहुँचैत छथि अपन महल
द्वारिएपर भेटि गेलथि दुर्योधन
के केलक तोहर ई हाल?
बाजि किएक ने रहल छह?

की अर्जुन भेटि गेल छलह
ओकर ई मजाल
की कृष्ण केलथि षड़यंत्र?
अथवा भेल कोनो दुर्घटना
बजैत किएक नहि छह
मुदा कर्ण छथि शांत
जेना किछु भेले नहि
मुखारविंद चमकि रहल छनि
दुर्योधन छथि परेसान
पुछिते जा रहल छथि
महलसँ बहरेली रुसाली
भोकासी पारि रहल छथि
हे भगवान ई की भेल
के केलकनि ई हाल
आखिर कर्ण तोड़लनि मौन
कहलखिनसभ वृतान्त
एक्के साँसमे
बहुत दुखी छी हम
सुनि कए ई समाचार
निर्दयी,स्वार्थी इन्द्र

केलथि नीचताक पराकाष्ठा
दुर्योधन बजिते जा रहल छथि
चिंता नहि करह मित्र
बिना कवच,कुण्डलोकेँ
हम छी , रहब ओहिना प्रबल
अर्जुन नहि कए सकत मोकाबिला
रणमे तोहार विजय
अछि एकमात्र संकल्प
पर्याप्त अछि अमोघ अस्त्र
इन्द्र देने गेलाह जाइत-जाइत
दुर्योधन भेलथि शांत
नहि जाएत अकारथ तोहर त्याग
हे मित्र कर्ण
तूही छह हमर आश
अमर रहए तोहर कीर्ति
बढ़ैत रहए तोहर पुरुषार्थ

कर्णक समाचार सुनि सकुनी सहित दुर्योधनक अन्य बंधु लोकनिसभ पहुँचि गेलाह। दुर्योधन हस्तिनापुरक श्रेष्ट बैदकेँ बजओलथि। दू-तीन दिनक उपचारक बाद कर्ण ठीक भए गेलथि आ दुगुना उत्साहसँ आगामी युद्धक तैयारीमे लागि गेलथि।

१७

कुंती-कर्ण भेंट

युद्ध अवश्यंभावी लागि रहल अछि। विदुरक कुटीमे कुंतीक समय नहि कटि रहल छलनि। ओ दिन-राति परेसान रहैत छलीह। असलमे कुंतीएटा नहि,पाण्डव पक्षमे सभकेँ कर्णक वीरतासँ डर होइत छलनि । कर्ण असगर हजारपर भारी रहथि। इएह कारण छल जे भगवान कृष्ण स्वयं कर्णकेँ मनेबाक प्रयास केलथि। ओकरा अपन वंशक परिचय देलखिन। ओकरा कहखिन जे ओहो कुंतीनन्दन छथि , ज्येष्ठ पाण्डव छथि, यदि वापस अपन वंशमे सामिल भए जाथि तखन द्रौपदी हुनको पत्नी भए जेथिन,ओएह पाण्डव पक्षसँ हस्तिनापुरक राजा बनताह। मुदा कर्ण एहि सभसँ प्रभावित नहि कएल जा सकलथि। आखिर, कृष्ण उदास खाली हाथ वापस चलि गेलाह।

आब कुंती की करथि?हुनका तँ नीकसँ पता रहनि जे कर्ण हुनकर संतान छथि। एहन परिस्थितिमे सहोदर भाएसभ आपसमे लड़थि-कटथि से हुनका कोना बरदास हेतनि। मुदा उपाय की छल?ओहि राति ओ एकटक जागले रहि गेलथि। कतबो प्रयास करथि ,हुनकर माथासँ कर्णक चित्र हटबे नहि करनि। रहि-रहि कए एतबहि देखाइन जे कर्ण महाभारत युद्धमे लगातार भयाओन अस्त्रसभक वर्षा केने जा रहल छथि। हुनकर पाँचो पुत्रक जीवन संकटमे छनि। ई दृश्य राति भरि हुनका परेसान केने रहलनि। आखिर भोर भेल। ओ उठलथि आ सोझे गंगा कात दिस पैरे-पैरे बिदा भए गेलथि। सूर्य क्रमशः चढ़ल जा रहल छलाह। ओ बुझि रहल छलाह जे कुंती कतए जा रहल छथि। हुनकर उद्येश्य की छनि। हुनका रहि-रहि कए छगुन्ता होइत छलनि,तामसो होइत छलनि हुनकर व्यवहारपर। जखन जे करबाक छल,से ओ केलथि नहि। लोकलाज-लोकलाज चिचिआइत रहि गेलथि। यदि ओ साहस केने रहितथि,कर्णकेँ जनमितहि फेकि नहि देने रहितथि,तँ ई दिन तँ

नहि देखितथि। मुदा फेर ओएह कहबैक जे भावी प्रबल होइत अछि। जे होएबाक अछि सएह होइत अछि।

"कुंती चलि तँ रहल छथि मुदा कथुक सुधि नहि छनि। रहि-रहि कए कर्णक करुण क्रन्दन मोन पड़ि रहल छनि। नवजात संतानकेँ बाकसमे राखि रहल छथि कुंती। लगमे ठाढ़ि छनि दाइ,तथापि स्वयं ओकर ओछाओन सरिआ रहलि छथि,बेर-बेर ओकरा दुलार कए रहल छथि। नोरसँ संपूर्ण वस्त्र भिजि गेल छनि। हुनकर दुनू हाथ थरथर काँपि रहल छनि,हृदय हाहाकार कए रहल छनि। मोनमे अबाज आबि रहल छनि-

"कुंती,साहस कर। नहि फेक एहि अमूल्य निधिकेँ। तूँ माए छह। माएक एकमात्र कर्तव्य थिक संतानक रक्षा। परिवार,समाज सभ किछु पाछू भए जाइत अछि ओकरा आगू। ओ थमकि जाइत छथि। नेनाकेँ बेर-बेर दुलार करैत छथि। सोचैत छथि जे किछु दिनक बाद एकर छठिहार होइतैक। राजकीय वस्त्रमे एकर पिता स्वयं संपूर्ण समाजक सामने एकरा दुलार करितथि, मूल्यवान उपहारसँ लादि दितथि। हमरो लेल की की नहि अनितथि। पिता ओकर छथिहो तेहने महान,प्रतापी। मुदा हमर कमजोरीक आगू ओहो विवश भेल छथि। ओ चमकि रहल छथि आकाशमे,शक्ति संपन्न छथि सभ तरहेँ। हुनकर तेजक सामनाके कए सकैत अछि?ककरा साहस छैक जे हुनका चुनौती देत?मुदा हमही हुनको नचार केने छिअनि। आखिर ओ अपन संतानक रक्षा स्वयं करबाक निश्चय दोहरबैत छथि।"

कुंती सोचिते जा रहल छथि।

"केहन अभागल अछि ई संतान। केहन अभागलि माए छी हम। एक मोन कहैत छनि जे तुरंत एकरा बाकससँ बाहर निकाली आ ओकरा संगे वापस अपन महल चलि जाइ। ओतए चिकरि-चिकरि सभकेँ कहि दिऐक-

“देखू हमर संतानकेँ। आउ ,सामिल होउ एकर छठिहारमे। संपूर्ण इलाकाकेँ भोज-भातक प्रबंध करी। मुदा से सोचिए कए सौंसे देह काँपि रहल छलनि।

“नहि,नहि। ई संभव नहि अछि। की कहताह हमर पिता?की कहतीह हमर माता? समाज तँ दुर्दशा कए देत। छोड़ह मोह एकर। छोड़ि दहक एकरा अपन भाग्यपर।”

इएहसभ सोचैत-सोचैत कुंती गंगा कातमे पहुँचि जाइत छथि। सामने धारक बीचमे कर्ण गायत्री अनुष्ठान संपन्न कए वाहर निकलबाक लेल उद्यत भए रहल छथि।

“ई के छथि?”

“चालिसँ कोनो उच्च कुलक महिला लागि रहल छथि।”

“ओ बेर-बेर हमरे देखि रहल छथि। लगैत अछि जेना कोनो गंभीर चिंतामे छथि।”

कर्ण गंगासँ बाहर होइत छथि। सामनेमे ओ ठाढ़ि छथिन। कर्णकेँ नहि रहि गेलनि। ओ पुछि बैसलथि-

“अहाँ के छी ?एना परेसान किएक छी?”

कुंती एहन परिस्थितिक लेल तैयार नहि छलीह। आब जखन ओ पुछिए देलखिन तखन किछु उत्तर तँ देबेक छलनि।

“हम छी अहाँक जन्मदात्री कुंती।”

कुंतीकेँ एतेक बजबाक छल कि कर्णक मोनपर जेना वज्र खसि पड़लनि । ओ कृष्णसँ अपन जन्मप्रसंग जानि चुकल छलाह। मुदा हुनकर जन्मदात्री एना अचानक सामने आबि जेथिन से ओ कहिओ सोचनो नहि

रहथि। सालक-साल ओ अपन जन्मदात्रीक विषयमे सोचैत रहैत छलथि। हुनकर स्वरुप,स्वभाव,परिवारक कल्पना करैत रहैत छलथि। मुदा ई नहि सोचि सकल रहथि जे हुनकर माए केओ आन नहि ,अपितु हस्तिनापुरक अत्यंत सम्माननीय स्त्री कुंती छलीह। एहिसँ पूर्व की कुंती किछु आर बजितथि,किछु अभ्यर्थना करितथि,कर्ण जोरसँ चिचिआ उठलाह-

"धिक्कार अछि अहाँकेँ। एतेक दिनक बाद आब हम मोन पड़ि रहल छी।ओहि दिन अहाँक मातृत्व कहाँ छल जखन भरल सभामे कृपाचार्य सूतपुत्र कहि हमरा अर्जुनसँ सामना करबासँ रोकि लेने रहथि। कहाँ छल अहाँक मातृत्व जखन कि एकटा जनमौटी बच्चाकेँ अहाँ नदीमे बहा देलहुँ?अहाँ हमरा जन्म देलहुँ तँ साहस रखितहुँ। हमर पालन करितहुँ आ देखितिऐक जे हम कोना समाजक सामना करैत छी। हमर वीरताक आगू अहाँक अपमान करबाक साहस ककरो नहि होइतैक। यदि ओहि सभामे अहाँ चिकरि कए कहि दितिऐक जे कर्ण सूतपुत्र नहि,हमर संतान अछि तखन की दृश्य रहैत?पाण्डव सदा-सर्वदाक लेल निश्चिंत भए राज करितथि। दुर्योधन हमरा अपन उपकारसँ लादि नहि सकैत आ हम ओकर ऋणसँ दबल नहि रहितहुँ। मुदा आब की?आब समय बहुत आगू जा चुकल अछि। हम अपन परिचय नहि बदलि सकैत छी। हम राधेय छी आ सएह रहब,परिणाम जे होअए।"

कर्णक कठोर वचन सुनि कुंती ठामहि खसि पड़लीह। ओ सुनने रहथि जे कर्ण बहुत उदार आ दानी छथि। हुनकर दरबारसँ केओ खाली हाथ नहि जाइत अछि। से बात तखन आर पुष्ट भेल छल जखन कि ओ स्वयं अपना हाथे अपने देहसँ कवच-कुण्डल निकालि ब्राह्मणक बेषमे याचक बनल इन्द्रकेँ थम्हा देने रहथिन। तेँ कुंतीकेँ साहस भेलनि जे ओ ओही समयमे जखन गंगाक कातमे स्नानसँ निवृत भए बाहर आबि रहल छलाह ,भेंट केलखिन। उम्मीद रहनि जे ओहि समयमे हुनकर आग्रह कर्ण मानि लेथिन । ओ पाण्डुकुलमे

सामिल भए जेताह। समाजक सामनेमे कुंतीक छओटा पुत्र आबि जेताह। भारतक इतिहास बदलि जाएत। महाभारत युद्ध रुकि जाएत। कर्णक प्रभावमे युद्धोन्मत्त दुर्योधनक मनोबल टूटि जेतैक। मुदा जखन कर्ण एहन कठोर बातसभ कहलखिन तखन हुनका गंभीर आघात भेलनि। ओ एहन बातसभ नहि सहि सकलीह आ बेहोस भए गेलीह।

कुंतीकैं ओना माटिपर बेहोस पड़ल देखि कर्ण बहुत दुखी भए गेलाह। ओ तुरंत हुनकर पैरपर खसि गेलाह। गंगासँ जल आनि हुनका सिक्त केलनि। तकर बाद कुंती आँखि खोललनि। ओ सामनेमे कर्णकैं बैसल देखि बहुत आश्वस्त भेलीह। प्रेमावेगमे कर्णकैं छातीसँ साटि लेलथि। कर्णकैं जीवनमे पहिल बेर अपन जन्मदात्रीसँ सामिप्य भेटि रहल छलनि। हुनकर आँखिसँ निरंतर नोर खसि रहल छलनि। भगवान सूर्य ऊपरसँ ई दृश्य देखि रहल छलाह। ओ अपन तेजपूर्ण रश्मिसँ कर्ण आ हुनकर जन्मदात्री कुंतीकैं अभिवादन कए रहल छलाह। हुनकर मोन आनन्दसँ गदगद छलनि।

कुंती कर्णकैं बेर-बेर छातीसँ साटि लेथि। कर्णो एहि आनन्दसँ जेना मुर्छित भए गेल रहथि। किछु बाजले नहि होनि। आखिर कुंतीए एहि मौनकैं तोड़ैत बजलीह-

“हम मानि रहल छी जे हमरासँ बहुत भारी गलती भेल छल। हमरा तोरा नहि छोड़बाक चाहैत छल। तोरा ई बुझबाक चाही जे ओहि समयमे हम एकटा कुमारि स्त्री छलहुँ,नियतिवश कही अथवा मानव स्वभावक दुर्वलता कही,हम सूर्यक संपर्कमे आबि गेलहुँ आ संतानवतीओ भए गेलहुँ। हम नहि सोचि सकलहुँ जे अकस्मात उपस्थित भेल एहि परिस्थितिक सामना कोना कएल जाए। तखन तँ जे भेल से सामने अछि। मुदा आब तकर चर्चासँ की फएदा?जे होएबाक छल से भए चुकल। ने हम ने तूँ वापस ओहि घटनाकैं ठीक कए सकैत छी। आब जे संभव छैक,जे उचित छैक जाहि लेल हम

एहिठाम आएल छी,ताहिपर विचार कएल जएबाक चाही। हमरा हिसाबे तोरा पाण्डवकुलमे सामिल भए जएबाक चाही। युधिष्ठिर सहित सभ पाण्डव तोरा स्वागत कए बहुत सुखी हेताह। हमहूँ अपराधबोधसँ मुक्त भए सकब।”

कुंतीक बात सुनितहि कर्ण तामसे लाल भए गेलाह। ओ चिकरि उठैत छथि-

“गंगा भने अपन दिशा बदलि लेथि,सूर्य बेसक पश्चिममे उगनाइ शुरू कए देथि,मुदा हम दुर्योधनक संग नहि छोड़ि सकैत छी। आब जखन युद्ध अवश्यंभावी थिक,अहाँ अपन पुत्रक जीवन रक्षाक लेल व्याकुल छी। अहाँ हमर अनुरागसँ एहिठाम नहि आएल छी। हम ई बात नीकसँ बुझि रहल छी जे अहाँ की चाहैत छी। मुदा हमरो किछु सीमा अछि। हम अहाँकेँ वचन दैत छी जे युद्धमे हम अहाँक अर्जुन छोड़ि शेष चारू पुत्रकेँ नहि मारबनि। जखन युद्ध होएत तकर बादो अहाँक पाँचक-पाँच पुत्र बनल रहताह। अर्जुनकेँ हम नहि छोड़ि सकैत छी। ओकरा संग युद्ध करब हमर जीवनक अभिलाषा अछि। ओही लेल हम जीबि रहल छी। ओहो अपना भरि जे कए सकैत छल,से केनहि अछि। गाण्डीव सहित अनेक अस्त्र-शस्त्र जमा कए चुकल अछि। आब हमर ओकर भाग्यक निर्णय युद्ध क्षेत्रे मे होएत। यदि ओ हमरा मारि देलक तखनो अहाँक पाँचो पुत्र रहबे करताह। अन्यथा यदि हम अर्जुनकेँ मारि सकलहुँ तखन हम अहाँक शेष पुत्रसभक संग चलि आएब। हम दुर्योधनकेँ छोड़ि देबनि। अहाँकेँ पाँचक-पाँच पुत्र बनल रहत। बस,आब क्षमा करू। हमरा अपन कर्तव्यक निर्वाह करए दिअ।”

से कहि कर्ण कुंतीकेँ प्रणाम करैत छथि। कुंती अपन महल दिस बिदा होइत छथि। कर्ण थोड़े काल ओहिना रहि जाइत छथि। एक बेर कुंती तँ एक बेर आकाशमे चमकैत सूर्यकेँ देखैत रहि जाइत छथि।

कर्ण हुनका पुछैत छथि-

"कुंती तँ नवालिग छलीह,दुनिआ-दारीसँ सर्वथा अनभिज्ञ छलीह। मुदा अहाँ सर्वज्ञ,सर्वशक्तिमान छलहुँ। यदि एहन भइए गेलैक तखन हमरा एना अनाथ किएक छोड़ि देलहुँ,पिताक कर्तव्य किएक ने निर्वाह केलहुँ?"

"तोहर दुर्भाग्य कर्ण आर किछु नहि। संसारमे मनुक्ख अपन भाग्येसँ किछु पबैत अछि। कखनहु कोनो वस्तुक अभाव ने छल ने होएत। मुदा ककरा की,कखन कतेक भेटतैक से ओकर भाग्ये पर निर्भर करैत अछि। तोरा इएह लिखल छलह। हम की करितहुँ?"

एतबहिमे अचानक बड़ी जोरक अन्हड़ उठल । आकाश मेघसँ भरि गेल आ भगवान सूर्य अदृश्य भए गेलाह,जेना स्वयं एहिसभसँ लज्जित भए किछु आर कहबाक स्थितिमे नहि रहि कर्णसँ अपनाकेँ नुका लेने होथि।

१८

युद्धक प्रारंभ

कुरुक्षेत्रमे पाण्डव आ कौरवक सेना जमा भए चुकल छथि। पाण्डव दिससँ दृष्टदुम्न आ कौरव दिससँ भीष्म सेनापति नियुक्त भए चुकल छथि। हुनका लोकनिक नेतृत्वमे दुनू पक्षक हजारों राजा आ तिनका संगे लाखो सैनिक अपन-अपन अस्त्र-शस्त्रक संग कुरुक्षेत्र पहुँचि गेल छथि। दुनू दिससँ युद्धक प्रारंभक समर्थनमे शंखनाद भए रहल अछि। दुनू दिसक योद्धासभ उत्साहसँ भरल छथि। भीष्मक आज्ञासँ कर्ण युद्धमे सामिल नहि भए सकल छथि। भीष्म हुनकर योग्यते पर प्रश्न ठाढ़ कए हुनका युद्धक लेल सर्वथा अनुपयुक्त कहि चुकल छथि। हुनका अर्धरथीक उपाधि पर्यंत दए चुकल छथि। एहि सभसँ आहत कर्ण अपन कोठरीमे बैसल युद्धक घोषणा सुनि रहल छथि। हुनकर मोनमे भाव आबि रहल छनि जे तुरंत युद्धमे कुदि जाइ। मुदा मर्यादाक ध्यान अबैत छनि,भीष्मक आदेशक चिंता होइत छनि,सभसँ बेसी अपन अनन्य

मित्र दुर्योधनक विजयक अभिलाषा होइत छनि,तँ शांत भए प्रतीक्षा करब बेसी सही बुझा रहल छनि।

"कहुना युद्ध तँ होउक। दुर्योधन विजयी तँ होथि।"

हुनकर मोनमे बस एक्केटा बात छनि। आर किछु नहि।

युद्ध प्रारंभ होमएसँ पूर्व सालोंसँ दुनू पक्ष एकर तैयारीमे लागल छलाह। पाण्डव सभटा भार अर्जुनपर छोड़ि देने रहथि। ओ आकाश-पाताल एक कए अनेक प्रकारक दिव्यास्त्र सहित अत्यन्त शक्तिशाली अस्त्र-सस्त्रसभ जमा केलथि। गाण्डीवसँ लए कए पशुपतास्त्र धरि हुनका भेटि चुकल रहनि। असलमे पाण्डव लोकनिकेँ नीकसँ बुझल रहनि जे दुर्योधन बिना युद्धकेँ किछु नहि वापस करताह। बातो सएह भेल। भगवान कृष्ण स्वयं प्रयास केलथि जे कौरव लोकनि पाण्डवकेँ पाँचोटा गाम दए देथि आ बात समाप्त होअए। सभ भाइ शांतिसँ जीबथि। मुदा से कहाँ भेल। उल्टे दुर्योधन भगवान कृष्णकेँ बंदी बनेबाक असफल प्रयास केलथि। बस,तखने महाभारत युद्धक निर्णय भए गेल।

आब जखन युद्धक प्रारंभ कोनो क्षण भए सकैत अछि,अर्जुन अपन सारथी कृष्णसँ आग्रह करैत छथि-

"हे देवकीनन्दन !अहाँ हमर रथकेँ दुनू सेनाक बीचमे लए चलू। हम देखी तँ सही जे एहि युद्धमे के सभ सामिल भए रहल छथि? हमरासभकेँ किनका-किनकासँ किनका-किनकासँ युद्ध करबाक अछि।"

हुनकर बात मानि कए कृष्ण रथकेँ कुरुक्षेत्रक बीचमे लए जा कए ठाढ़ कए दैत छथि। हुनकर रथकेँ एना देखि कौरव पक्षक लोक तरह-तरहक अनुमान लगा रहल छथि।

“देखलहक। अर्जुन शुरूएमे डरि गेल। आब संधि करबाक लेल आबि रहल अछि।”

“की पता?ईहो एकर कोनो चालिए होइक। शत्रुसँ कखनहु निश्चिंत नहि होएबाक चाही। युद्ध-युद्ध होइत अछि। कखन के की करत तकर कोन ठेकान?”

“नहि,नहि। से सभ किछु नहि बुझा रहल अछि। ओ तँ युद्धक्षेत्रमे भीष्म,द्रोण सहित अन्य श्रेष्ट लोकनिकेँ प्रणाम कए रहल छथि। फेर उदास भए गाण्डिवकेँ फराक राखि दैत छथि। ई की भए रहल अछि?”

युद्धमे उपस्थित श्रेष्ठ लोकनिकेँ देखितहि अर्जुनक मोनमे तरह-तरहक विषाद उत्पन्न भए रहल छनि। ओ कृष्णकेँ निवेदन करैत छथि-

“मान्यवर। हम ई युद्ध नहि कए सकैत छी। भीष्म पितामह,गुरु द्रोण,कृपाचार्य सहित समस्त वंधु-वांधवकेँ मारि कए यदि हम युद्ध जितिए जाएब तँ कोन नीक काज करब?एहिमे कोनो सक नहि होएबाक चाही जे एकर परिणाम बहुत भयाओन होएत। सभ किछु बरबाद भए जाएत। चलू,चलू,घर वापस चली। हमरा एहन राज्य नहि चाही जे अपना लोकनिक खूनमे सनल होअए।”

“हद भए गेल। आब जखन कि युद्ध सामने अछि,तूँ अकर-बकर बाजि रहल छह। लोक की कहतह?सभ एतबहि बाजत जे तूँ युद्धसँ पराजयक भयसँ भागि गेलह। ई तँ महा अयशकारी होएत। एहन जीवन जीबिए कए की करबह?सोचि लएह अर्जुन। हमरा हिसाबे तँ तोरा अपन कर्तव्य करबाक चाही। परिणामक चिंता नहि करबाक चाही।”

कृष्ण भगवान तरह-तरहसँ अर्जुनक शङ्काक निवारण केलनि। आखिर ओ कृष्णकेँ समर्पित होइत कहलाह-

“हमर मोह आब नष्ट भए गेल। जे अहाँ कहब सएह करब।”

“तखन ताकि की रहल छह?सामनेमे ठाढ़ शत्रुसभक संहार करह,विजय प्राप्त करह आ अनन्त काल धरि राज्यसुख भोगह।”

कृष्णकेँ एतबा कहबाक देरी छलनि कि अर्जुन तुरंत सचेत भए गेलाह आ प्रारंभ भेल महाभारतक युद्ध जे ततेक भयाओन छल जे ओकर विनाशक विभिषिका जुग-जुग धरि मानव समाज भोगैत रहल । अखनहु ओकर प्रतिध्वनि मानव हृदयकेँ उद्वेलित करैत रहैत अछि। महाभारत युद्धसँ पूर्व आ पश्चातक घटना क्रम अविस्मरणीय भए गेल अछि। चाहे वरणावतमे दुर्योधन द्वारा पाण्डव लोकनिकेँ जरा देबाक योजना होइक,चाहे जुआमे धोखा दए युधिष्ठिरकेँ हरा कए पाण्डव लोकनिक सभ किछु हरण कए लेब होइक,कि द्रौपदीक चीर हरण होइक,चाहे कृष्णक शांति प्रयास होइक,आ महाभारत युद्धक एक-एक घटना होइक,ओ सभ अखनहु मानव मोनकेँ उद्वेलित करैत अछि, करिते रहत।

१९

युद्धसँ वंचित कर्ण

कुरुक्षेत्रमे भए रहल शंखनाद सुनि अपन कोठरीक एकांतमे पड़ल कर्ण रोमांचित भए गेलाह। ओ रहि-रहि कए खिड़की लग चल जाथि आ बाहरसँ आबि रहल अनेक प्रकारक ध्वनि सुनि तरह-तरहक कल्पना कए रहल छलाह। ओ कहिआसँ एहि दिनक प्रतीक्षा कए रहल छलाह। आब जखन ओ दिन आबि गेल अछि,जखन हुनका अपन चिर प्रतिद्वंदी अर्जुनसँ सामना करबाक अवसर भेटि सकैत छलनि,हुनका भीष्मक आदेशसँ युद्धमे भाग लेबासँ वंचित कए देल गेल छनि। असलमे भीष्म नहि चाहैत छलाह जे युद्धमे पाण्डव अथवा कौरवमे सँ केओ मारल जाथि। हुनका बुझल रहनि जे यदि कर्ण युद्धमे

सामिल भेलाह तँ कम सँ कम अर्जुनकेँ बहुत मोसकिल भए सकैत छनि। जानो जा सकैत छनि। फेर ओ दुनू पक्षमे युद्धक कहिओ समर्थन नहि केलनि। हुनकर इच्छा रहनि जे थोड़े दिन युद्ध यदि लटकल रहि गेल तखन दुनू पक्ष थाकि जेताह आ युद्ध करबाक अपन-अपन निर्णयपर पुनर्विचार करताह। कोनो-ने-कोनो प्रकारसँ आपसी समझौता भए जेतनि। मुदा यदि कर्ण एहि युद्धमे सामिल रहितथि तखन से सभ किछु नहि होइत। ओ सभ दिनसँ युद्ध करबाक समर्थक छलाह। इएहसभ कारण छल जे सेनापति नियुक्त होएबासँ पूर्व भीष्म कर्णकेँ तरह-तरहसँ अपमानित केलाह ,हुनका सूतपुत्र,अधिरथी धरि घोषित कए देलथि। ओ कोनो हालतिमे कर्णकेँ युद्धमे सामिल नहि करबापर अड़ि गेलाह।

आब युद्ध प्रारंभ भए गेल छल। कर्ण धैर्यपूर्वक युद्धक विषयमे सोचैत रहैत छलाह। आखिर दस दिन धरि भीष्मक नेतृत्वमे युद्ध चलल। युद्धमे लाखो सैनिक मारल गेल। मुदा पाण्डव पाँचो भाए सुरक्षित रहलथि। अंतमे कृष्णक परामर्शपर अर्जुन शिखंडीकेँ सामने राखि छलपूर्वक भीष्मक देहकेँ तीरसँ छलनी कए देलनि। भीष्म सरसय्यापर पड़ि गेलाह। कौरव पक्षमे हाहाकार मचि गेल। दुखी पाण्डवो छलाह। मुदा हुनकासभकेँ कोनो विकल्प नहि रहनि। भीष्मक रहैत हुनकर समस्त सेनाक नाश निश्चित छल। नित्य लाखों सैनिक मारल जा रहल छल। आखिर पाण्डवसभ जीबिए कए की कए लितथि? भीष्मकेँ रहैत पाण्डव युद्ध नहि जिति सकैत छलाह। कर्ण अपन कोठरीए सँ महाभारत युद्धक कल्पना करैत रहैत छलाह। ओ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न छलाह जे आब ओहो युद्धमे सामिल भए सकताह। दुर्योधन स्वयं हुनका युद्धमे सामिल होएबाक लेल आग्रह केलखिन।

“भीष्मक आहत भेलाक बाद हमर सेनाक मनोबल बहुत घटि गेल अछि। आब एकमात्र आशा तोरेसँ अछि। असलमे तोरे बले हम ई युद्ध शुरू

केलहुँ। मुदा भीष्मक जिदक कारण अखन धरि तूँ सामिल नहि भए सकलाह। आब तँ ओ युद्धमे नहि छथि। हम चाहैत छी जे तूँ हमर सेनाक सेनापतिक नेतृत्व करह आ अपन वीरता आ पुरुषार्थसँ पाण्डव लोकनिकेँ परास्त करह।"

"ईहो कोनो कहबाक काज छैक। हमर जीवनक एकमात्र उद्येश्य तोहर विजय थिक। हम तँ शुरूएसँ युद्धमे सामिल होएबाक लेल तैयार छी। मुदा भीष्मक कारण से संभव नहि भए सकल। तूँ व्यर्थ चिंता नहि करह। भीष्म कतबो बली होथि,मुदा भीतरसँ ओ पाण्डवक शुभचिंतक छलाह। एहन व्यक्तिकेँ अपन सेनाध्यक्ष बनएबाक परिणाम सोचल जा सकैत अछि। आब तँ जे होएबाक छल से भेल। मुदा एकटा बात। युद्धमे द्रोणकेँ सहयोग बहुत जरूरी अछि। तेँ हुनके सेनापति बनाओल जाए। हुनका नेतृत्वमे सभ ठामक राजा लोकनि सहर्ष युद्ध करताह। हम तँ तोरा संगे छीहे। सेनापति केओ होथि ओहिसँ कोनो फरक नहि पड़ैत अछि।"

"हम तोहर विचारसँ पूर्ण सहमत छी। हमरा विश्वास अछि जे कुरुक्षेत्रमे तोरा ठाढ़ देखि हमर सेना फेरसँ उत्साहित भए सकत। हमसभ ई युद्ध जल्दीए जिति लेब।"

कर्ण एकर बाद कुरुक्षेत्रमे सरसय्यापर पड़ल भीष्मसँ भेंट करैत छथि। ओ विनम्रतासँ भीष्मक पैर दिस ठाढ़ छथि।

"प्रणाम पितामह!"

"स्वागत अछि कर्ण ।"

"हम नीकसँ जनैत छी जे पाण्डव लोकनि छलपूर्वक अहाँक ई हाल केलनि अछि। मुदा हुनकासभकेँ तकर परिणाम भोगए पड़तनि। अपने आज्ञा दिअ जाहिसँ हम आब एहि युद्धमे सामिल होइ आ एकरा जल्दीए निर्णय धरि पहुँचा सकी।"

"हम तोहर वीरतासँ पूर्ण परिचित छी कर्ण। हम नीकसँ जनैत छी जे अर्जुन अथवा केओ तोहर सामना नहि कए सकैत छथि। यदि तूँ ई युद्धमे रहितह तखन कौरव कखन ने एकरा जिति लितथि। मुदा होइत बहुत अनर्थ।"

"से की?"

"तोरा बुझबाक चाही जे पाण्डव तोहर सहोदर भाए छथि। कुंतीए तोहर जन्मदातृ छथि। तेहनमे यदि तूँ अपन सहोदर लोकनिक हत्या करितह तँ केहन होइत?फेर पाण्डव लोकनि अपन न्यायोचित अधिकारसँ वंचित भए जइतथि। सदा-सर्वदा जंगले-जंगल बौआइत रहितथि। कतेक जुलुम होइत से।"

"आब एहि बातसभमे कोनो दम नहि अछि। यदि अहाँकेँ हमर जन्मक रहस्य बूझल छल तखन ई बात पहिने किएक ने सार्वजनिक केलहुँ? किएक ने हमर जन्मदात्रीकेँ बुझा सकलिअनि जे हमरा मानवोचित अधिकार दितथि। आब जखन सभ किछु समाप्त भइए गेल अछि तखन हम ई बुझिए कए की करब?आब तँ हमर बस एकटा लक्ष्य अछि। हम दुर्योधनक ऋणसँ मुक्त तखने होएब जखन कि पाण्डव लोकनि पराजित होएताह आ दुर्योधन विजयोपरांत हस्तिनापुर सहित समस्त भारतवर्षक राजा रहताह।"

"जे तोहर विचार। जे होएबाक छैक से होएबे करतैक। हम तँ तोरा तोहर जीवनक सत्यक बारेमे परिचित करा रहल छलहुँ जाहिसँ तूँ सहोदरक हत्याक जघन्य अपराधसँ बाँचि सकह। आगू तोहर इच्छा।"

कर्ण एक बेर फेर भीष्मकेँ प्रणाम केलथि आ कुरुक्षेत्र स्थित अपन शिविर दिस चलि गेलथि।

२०

द्रोण वध

पाँच दिन धरि भयानक युद्ध केलाक बाद आखिर द्रोणक हत्या भए गेलनि। एहि समाचारसँ कौरव पाण्डव ,दुनू पक्ष बहुत दुखी छलाह। सभ बेराबेरी हुनका श्रद्धांजलि देलखिन। मुदा अर्जुन बहुत परेसान रहथि,अत्यन्त भाव विह्वल रहथि। ओ दृष्टदुम्नकेँ तकने फिरथि। हुनका नुकाइत-नुकाइत मोसकिल भए गेलनि। अंतमे,कृष्णे हुनका शांत केलखिन।

“तोरा बहुत जल्दी बिसरा जाइत छह। इएह द्रोण तोहर निर्दोष नवालिग संतानक हत्या करबओलनि। हिनका तकर पाप खेलकनि। तूँ अनेरे दृष्टदुम्नपर तमसा रहल छह। हुनकर तँ जन्मे एही लेल भेल छलनि। ओ अवसर भेटितहि अपन काज कए गेलाह। ई युद्धक्षेत्र छैक पार्थ। एहिठाम सब चलैत छैक। साम,दाम दण्ड,भेध सभ अस्त्रे छैक। जखन जे चलि जाए। विजय एकमात्र लक्ष्य थिक युद्धक। आर किछु नहि।”

पिताक छलपूर्वक हत्याक प्रतिशोध लेलथि हुनकर एकमात्र पुत्र अश्वत्थामा जिनका उचित सुख,सुविधाक लेल द्रोण जीवन भरि कौरव लोकनिक गुलामी केलनि,अपन गर्दनिओ कटा देलनि। अन्यथा हुनका महाभारत युद्धमे,ओहो अन्यायीसभक पक्षधर होएबाक कोन काज रहनि?सभ तरहेँ संपन्न ओ चलि जइतथि जंगल,करितथि भजन-भाव। मुदा पुत्रमोह एहन हुनकर कमजोरी छलनि जाहिसँ ओ मुक्त नहि भए सकलाह। चक्रव्यूहक रचना कए वीर वालक अभिमन्युक हत्याक पृष्ठभूमि ओएह रचलनि। जा धरि मानव इतिहास रहत,ताधरि महाभारत युद्धमे द्रोणाचार्यक नेतृत्वमे छओटा महारथी द्वारा वालक अभिमन्युक हत्याक प्रसंग लोककेँ रोमांचित करैत रहत।

दाइ के दाइ
केहन जुलुम भेलै
मारल गेले निर्दोष
अर्जुनक लाल
महाभारत भेलै बदनाम
कर्ण,द्रोण,कृपाचार्य
अश्वत्थामा,बृहतबल,कृतबर्मा
छओटा महारथी मिलि
घोपि देलनि तरुआरि
ओकर करेजामे
ओ चिकरैत रहि गेल
हे हमर महान पिता क्षमा करब
हम जा रहल छी
अहाँक अपूर्ण स्वप्नक संगे
देखू ने
केहन नीचता कए रहल छथि
ई महारथीसभ
अभिमन्य छलाह महावीर
युद्धमे सभकेँ केलनि तबाह
द्रोणाचार्य क्रोधमे पागल

बनओलथि चक्रव्यूह
कोनो हालतिमे मारबाक अछि एकरा
सभ महारथी केलनि
आदेशक पालन
कहाँ गेलनि कर्णक वीरता?
जयद्रथ घेरि लेलक द्वारि
रोकि दलक सहायता
पाण्डव नहि पहुँचि सकलाह
चक्रव्यूहक भीतर
अर्जुन करैत रहलाह हाहाकार
पुत्रक लासपर
हाय केहन छल ओ विकराल समय
आखिर मारल गेल जयद्रथ
अर्जुनक हाथे
द्रोणाचार्य केलनि भयाओन युद्ध
युधिष्ठिर सन सत्यवादी आ धर्मपारायण
बजलथि अर्धसत्य
अश्वत्थामा हतः नरौ वा कुंजरः
छोड़ि देलनि हथियार
पुत्रक शोकसँ

ध्यानस्त भए गेलाह द्रोण

आखिर मारल गेलाह छलपूर्वक

दृष्टदुम्न काटि देलकनि

गला तरुआरिसँ

२१

सेनापति कर्ण

द्रोणक मृत्युक बाद कौरब दल चिंतित छलाह। दुर्योधन पहुँचलाह अपन अनन्य मित्र कर्णक ओहिठाम राखि देलनि अपन मुकुट हुनकर पैरपर।

“ई की कए रहल छी अहाँ?”

“आब हमर लाज अहीं बचा सकैत छी। अहीं छी आब हमरासभक एकमात्र आशा। अन्यथा ई मुकुट गेल घर अछि। ”

“ई कहबाक काज नहि अछि जे हमर एक-एक साँसपर अहाँक अधिकार अछि। हम जीबिए रहल छी ऐही लेल जे अहाँक विजय देखि सकी। देखि सकी अर्जुन वध,अन्यथा हमरा जीवनक की अर्थ अछि? एकटा अहीं छी जे ऐन अवसरपर हमरा सम्मानित केलहुँ,हमरा अंगदेशक राजा घोषित कए हजारों लोकक बीचमे हमरा सम्मानयोग्य बनओलहुँ। हम जे किछु छी,ओहिमे अहाँक गंभीर योगदान अछि।”

“हम अहाँक सिनेहक लेल अपनाकेँ भाग्यवान बुझैत छी। मुदा आब तँ बात नओ-छओपर आबि गेल अछि। हमर सेनाकेँ अहाँक नायकत्वक प्रयोजन छैक। तखनहि हमसभ आगू लड़ि सकैत छी। भीष्म आ द्रोणक रणसँ हटि गेलाक बाद आब कोनो दोसर विकल्प नहि बाँचल अछि। अस्तु,अहाँ हमरासभक सेनापतिक दायित्व स्वीकार करू।”

“हम तँ पहिने कहलहुँ जे हम अहाँक संग सभ तरहेँ तैयार छी। मुदा एक बेर अश्वत्थामोकेँ पुछि लिअनु।”

“हम हुनकासँ परामर्श केलाक बादे अहाँ लग आएल छी। आब अविलंब सेनापति बनू, युद्धमे शत्रुकेँ परास्त करू।”

“चिंता नहि करी मित्र। हम बहुत दिनसँ अर्जुनक लेल हथियार पिजा कए रखने छी। चलू ,आब तकर उपयोग कएल जाए।”

कर्ण सजल-धजल सेनापतिक रूपमे कुरुक्षेत्र पहुँचि गेलथि। पाण्डव लोकनिमे भारी चिंता छलनि। कारण कर्णक वीरता जगजाहिर छल। सभ जनैत छलाह जे कर्णकेँ हराएब अर्जुनोक लेल मोसकिल छनि। भीष्म, आ द्रोणोकेँ पाण्डव लोकनिक लेल किछु-ने -किछु मोह रहनि। भीष्मक तँ ओ सभ संताने छलाह। जहिना कौरव तहिना पाण्डव। तहिना द्रोणक दुनू पक्ष शिष्य छलाह। यदि पुत्रक मोह नहि रहितनि तँ ओ एहि युद्धमे संभवतः कहिओ नहि पड़ितथि। मुदा कर्ण? ओ तँ एहि युद्धमे छलाहे मात्र अपन मित्र दुर्योधनक लेल। दुर्योधनक विजय हुनकर एक मात्र लक्ष्य छलनि। अर्जुन हुनकर निसानापर शुरूए सँ रहथि। देखा चाही आब की होइत अछि?युद्ध केमहर घुमैत अछि?

महाभारत युद्धक पन्द्रह दिन बीति चुकल छल। जाबे भीष्म रहथि,ताधरि तँ युद्ध नियमसँ चलैत रहल। भीष्मक बाद सभ नियम समाप्त भए गेल। अभिमन्युक वध आ द्रोणक हत्या तँ अन्यायक पराकाष्ठा छल। योजनापूर्वक अर्जुनकेँ युद्ध क्षेत्रसँ सुशर्मा फटकी लए गेल आ दिन भरि हुनका ओझरओने रहलनि। कृष्ण कहथिन-

“अर्जुन!एहिमे हमरा भारी षड़यंत्र बुझा रहल अछि।”

“हमर बामा आँखि से फरकि रहल अछि।”

“हम तँ कहबह जे तुरंत वापस चलह। ई समय युधिष्ठिरकेँ असगर छोड़बाक लेल उपयुक्त नहि थिक।”

“हम अहाँक बातक आदर करैत छी। मुदा देखियौक ने ई हमरा कोना ललकारि रहल अछि?एकर ई साहस?हमरा चुनौती देत आ हम वापस चलि जाएब?असंभव।”

“इएह तँ तोरामे गड़बड़ी छह। कोनो बात नहि,जे उचित बुझा से करह।”

कृष्णक बात कटबाक परिणाम ओही दिन साँझमे हुनका भेटि गेलनि। अभिमन्यु मारल गेल। तहिना द्रोण अन्यायपूर्वक मारल गेलाह। द्रोणकेँ मारबाक लेल युधिष्ठिर सन सत्यवादीसँ अर्धसत्य बजाओल गेल। से सुनिओ कए जे अश्वत्थामा मारल गेलाह,ओ युद्ध बंद नहि केलनि।

“ एहिमे कोनो गड़बड़ी जरूर अछि। अश्वत्थामा एना मरिए नहि सकैत अछि। मुदा युधिष्ठिर एहि बातकेँ पुष्ट कए रहल छथि। ओ तँ झूठ नहि बाजत।”

द्रोण दुविधामे पड़ि गेल रहथि। एहने हालतिमे भीम हुनकर खिधांस करए लगलाह-

“देखिअनु एहि बूढ़केँ। ककरा लेल लड़ि रहल छथि?बेटा मारल गेलनि आ ई अड़ल छथि। धिक्कार अछि हिनका।”

भीमक बात सुनि कए द्रोण हथियार फेकि देलनि। चुपचाप ध्यान करए लगलाह। तखने दृष्टद्युम्न हिनकर गला काटि देलथि। आब कर्ण युद्धमे सेनापति छथि। हुनका सामने युधिष्ठिर,भीम,नकुल,सहदेव बेरा-बेरी परास्त भेलखिन,मुदा कर्ण हुनका लोकनिक प्राण बकसि देलखिन। युधिष्ठिर तँ एहि

बातसँ बहुत अपमानित अनुभव केलथि। साँझमे अर्जुनकेँ बहुत फज्झति केलखिन ।अर्जुन हुनका सांत्वना दैत कहलखिन-

"अहाँ चिंता नहि करू। काल्हिक दिन निर्णायक होएत। हम रहब की कर्ण । मुदा दुनू गोटे मे सँ एकटा काल्हिक सूर्यास्त नहि देखि सकब।"

आइ युद्धक सत्तरहम दिन छल। चारूकात भयानक युद्ध भए रहल छल। कौरव दिससँ मायावी अलायुद्ध राक्षस भीमपुत्र घटोत्कचक हाथेँ मारल जा चुकल छल। घटोत्कच रातियो मे भयाओन युद्ध केने जा रहल छल। कौरव पक्षक विनाश लगीच लागि रहल छल। कुरुक्षेत्रमे कौरव पक्षक सभ त्राहि माम् कए रहल छल। हालति काबूसँ बाहर होइत देखि दुर्योधन चिकरल-

"कर्ण तोहर अमोघ अस्त्र धएले रहि जाएत हमसभ मारल जाएब। जखन केओ बचबे नहि करत तखन तूँ अर्जुनकेँ मारिए कए की करबह?ककरा लेल युद्ध करबह?"

कर्ण अमोघ अस्त्रकेँ बहुत जोगा कए रखने छलाह। नित्य ओकर पूजा करथि। हुनका दृढ़ विश्वास छलनि जे ओ अमोघ अस्त्रक प्रयोग कए अर्जुनकेँ मारि सकताह। एहि तरहेँ हुनकर जीवनक एक मात्र संकल्प पूर्ण भए सकतनि। मुदा माहौल तेहन ने भए गेल छल जे आब हुनको माथ काज नहि कए रहल छलनि। हुनका सौंसे घटोत्कचे देखाइत छलनि। हुनका पूर्ण विश्वास भए गेलनि जे ओकर हत्या बहुत जरूरी अछि। यदि ओ जीबैत रहि गेल तखन युद्धक निर्णय आइए पाण्डवक पक्षमे भए जेतनि। अस्तु,ओ अमोघ अस्त्र घटोत्कचपर चला देलथि। घटोत्कच अमोघ अस्त्रसँ खुंडी-खुंडी भए गेल। ओकर मृत्युक समाचार सौंसे कुरुक्षेत्रमे बिजलौका जकाँ पसरि गेल। युधिष्ठिर सहित समस्त पाण्डव लोकनि निराश भए गेलाह। सभ गोटे भोकारि पारि कए कानि रहल छलाह। अर्जुन आ कृष्ण कनी फटकी छलाह। ओहो सभ युधिष्ठिर

दिस बढ़ि रहल छलाह कि अचानक कृष्ण ठहाका पारए लगलाह। अर्जुन हुनकर व्यवहारसँ चकित छलाह।

“हद भए गेल। ईहो समय कोनो हँसबाक छैक?”

“बाते तेहने छैक जे हम अपनाकेँ नहि रोकि पाबि रहल छी।”-से बाजि ओ फेर जोर-जोरसँ ठहाका पारि रहल छलाह।

फेर कहैत छथिन-

“कर्णक अमोघ अस्त्रसँ तोहर जीवनक बहुत खतरा छल। इन्द्र द्वारा कर्णकेँ देल गेल ई अस्त्र अचूक छल। कर्ण एकरा बहुत जोगा कए रखने छल जाहिसँ तोहर हत्या कएल जा सकत। हम दिन-राति एहि बातसँ चिंतित रहैत छलहुँ। मुदा आब समस्याक समाधान स्वतः भए गेल। कर्ण आब तोरा किछु नहि बिगारि सकैत अछि। एहि युद्धमे तोहर विजय आब निश्चित अछि। इएह हमर हँसबाक कारण अछि।”

२२

अश्वत्थामा-कर्ण भेंट

कर्ण द्वारा बेरा बेरी युधिष्टिर,भीम,नकुल,सहदेवकेँ अवसर भेटलाक अछैत बकसि देबाक कारण समस्त कौरब दल आश्चर्यचकित छल। मुदा कर्णकेँ टोकतनि के?ककरो साहस नहि होइक। साँझमे जखन कर्ण अपन शिविरमे विश्राम कए रहल छलाह तखन अश्वत्थामा चुपचाप ओतए पहुँचलथि। द्वारिक बाहर ठाढ़ प्रहरी ई समाद कर्ण धरि पहुँचओलकनि। कर्ण असमयमे हुनकर अएबाक कारण नहि बुझि रहल छलाह। बहुत मोसकिलसँ कनी पलखति पाबि ओ विश्राम कए रहल छलाह,घाव सभपर औषधि लगा रहल छलाह। मुदा कएल की जाए?जखन अश्वत्थामा आबिए गेल छथि तखन हुनकासँ भेंट केनाइए उचित बुझि कर्ण प्रहरीकेँ आदरपूर्वक हुनका भीतर अनबाक लेल

कहलखिन। अश्वत्थामा कर्णक शिविरमे हुनकर सयन कक्षमे प्रवेश करैत छथि। हुनकर मुँह क्रोधसँ लाल भेल छनि । ओ कोनो आशङ्कासँ ग्रसित बुझाइत छथि। युद्धक्षेत्रक थकान हुनकर आननपर स्पष्ट दृष्टिगोचर भए रहल अछि। असलमे ओ कर्णसँ बात परिछएबाक उद्येश्यसँ ओतए आएल छलाह। मुदा हुनकर अवस्था देखितहि ओ मौन भए गेलाह। कर्ण स्वयं खूनसँ भिजल रहथि। देहमे अनेक ठामसँ रक्तस्राव भए रहल छलनि। बैदजी बहुत मोसकिलसँ ओहिसभमे लेप लगा रहल छलाह। एहन हालतिमे अश्वत्थामा की बजितथि?कोना अपन उपराग हुनका दितथिन?आखिर कर्णे हुनका पुछलखिन-

"की बात छैक?एना अकस्मात?"

"की कहू?हम तँ बहुत तामसमे आएल छलहुँ,मुदा अहाँक ई स्थिति देखि किछु फुरा नहि रहल अछि।"

"ई सभ तँ युद्धक प्रसाद थिकैक? अहाँ संकोच नहि करू। अपन मोनक बात निधोक कहू। हम अहाँक सेनापति छी। हमर ई कर्तव्य अछि जे अहाँ लोकनिक शङ्काक समाधान करी,कोनो दुविधामे रहनाइ ठीक नहि।"

"आजुक युद्धमे अहाँ चाहितहुँ तँ चारू पाण्डव मारल जइतथि। हमसभ युद्ध जिति लेने रहितहुँ। दुर्योधनक विजय भेल रहैत। महाभारत युद्ध तखने समाप्त भए जाइत। मुदा अहाँ बेरा-बेरी चारू गोटेकेँ जीबित छोड़ि देलिअनि जखन कि अहाँक सातटा पुत्र पाण्डव द्वारा मारल जा चुकल छलाह। हम एही बातसँ बहुत दुखी छी, चिंतितो छी कारण ई व्यवहार जाहिसँ शत्रुपक्षकेँ साक्षात फएदा भेल अछि,हमर सेनापतिक लेल कदापि उचित नहि कहल जा सकैत अछि।"

"अपना स्थानपर अहाँ सही छी। मुदा हम कोनो मसीन नहि छी जे जकर-तकर गला काटैत रही। जे हमरा उचित बुझाएल से केलहुँ। हम से

किएक केलहुँ तकर कारण अखन स्पष्ट नहि कए सकैत छी। अहाँ लोकनि व्यर्थ चिंता नहि करू। हम युद्ध जीतबे करब,दुर्योधनक विजय होएबे करतनि। कहबाक काज नहि जे हमर जीवनक एकमात्र लक्ष्य अर्जुनकेँ पराजित करब अछि। यदि ओ हारि गेल,युद्धमे हमरा हाथे मारल गेल तखन बाँचिए की जाएत?यदि से नहि भेल,अर्जुन जीबिते रहि गेल तखन शेष चारू पाण्डवक रहनाइ, नहि रहनाइ कोनो माने नहि रखैत अछि। आशा करैत छी जे अहाँक शङ्काक निवारण भए गेल होएत। आब कनी काल हमरा एकान्तमे छोड़ि दिअ जाहिसँ हम अपनाकेँ कल्हुका युद्धक लेल प्रस्तुत कए सकी।"

कर्णक बात सुनि अश्वत्थामा की बजितथि?यद्यपि ओ संतुष्ट नहि रहथि,तथापि,सेनापतिक इच्छाकेँ आज्ञा मानि ओ ओहिठामसँ प्रस्थान कए गेलाह। कर्ण हुनका गेलाक बाद बड़ी काल धरि सोचैत रहि गेलाह-

अश्वत्थामा की जाने गेलाह

हमर विवशता

ने दुर्योधन जनैत छथि

हमर मोनक हाल

पहिने इन्द्र मांगि लेलनि कवच-कुण्डल

बदलामे देलनि अमोघ अस्त्र

सेहो चलि जाइत रहल

आवेशमे

घटोत्कचपर केलहुँ प्रहार

कोनो रस्ता बाँचलो नहि छल

चारूकात छल हाहाकार

कौरवक सर्वनाश हेतनि तत्काल
कृष्ण स्वयं खोलि गेलाह
हमर जन्मक रहस्य
कहि गेलाह जे हमहूँ छी कौंतेय
अंतमे माता स्वयं आबि गेलीह सम्मुख
बिना कोनो संकोचकेँ
कहि देलीह वृतान्त
अपन ओहि दुर्वल क्षणक
जे केलक हमरा सन अभागलक सृजन
ओहो नहि छोड़लीह हमरा साबुत
मांगि लेलनि
अपन चारीटा पुत्रक जीवनदान
अर्जुनटापर बात नहि बनलनि
से दुख छलनि
हम की करितहुँ
अपने वचनसँ कोना लौटि जइतहुँ
हमरा तँ छिन्न-भिन्न कए देलनि बेरा बेरी
इतिहास साक्षी रहत
जे हम सदिखन छी निष्ठावान
अपन मित्र दुर्योधन प्रति

मुदा भावी प्रबल
नहि बदलि सकलहुँ नियतिक रेख
मुदा आशा अखनहु बाँकी अछि
काल्हि अर्जुन रहत
अथवा रहि जाएत
दुर्योधनक मित्र
महाभारत युद्धक अंतिम दृश्य
नहि अछि बेसी दूर
हम रही वा नहि रही
रहि जाएत अवशेष
युद्धक ई वृतान्त।

२३

शल्य प्रकरण

महाभारत युद्धक अंतिम चरणक तैयारी भए रहल अछि। कर्ण अपन निर्णय सुना चुकल छथि। दुर्योधनक इएह तँ चाहिअनि। अर्जुनक विनाश भए जाए,ओ मारल जाए बस एही स्वप्नक संगे ओ एहि दुनिआमे जीबि रहल छथि। कर्णो सएह चाहैत छथि। युद्ध भूमिक लेल प्रस्थान करबाक पूर्व कर्ण दुर्योधनसँ आग्रह करैत छथि-

“मित्र दुर्योधन! सभ किछु तँ ठीक अछि ,मुदा. . .।”

“मुदा की?साफ-साफ बाजह। आब विलंब करबाक समय नहि अछि। आब युद्धक अंत होएबाक चाही।”

“हमहूँ सएह चाहैत छी। मुदा ताहि लेल हमरा लग एकटा कमी अछि। अर्जुनक सारथी छथि भगवान कृष्ण। हमरा लग हुनकर टक्करक कोनो सारथी होएब बहुत जरूरी अछि,अन्यथा मोसकिल भए सकैत अछि।”

“एहि लेल तोरा विचारमे के उपयुक्त छथि?”

“मात्र शल्येटा । यदि ओ हमर सारथी बनबाक लेल तैयार भए जाथि तँ हमरा लोकनिक विजय निश्चित अछि। मुदा ओ छथि पाण्डव लोकनिक अपन मामा। हमर सारथी बनताह से मोसकिल बुझा रहल अछि।”

“बनताह,अबस्स बनताह। ओ हमर शुभचिंतक छथि ,तेँ ने हमरा दिससँ युद्ध करबाक लेल तैयार भए गेलथि। रहल सारथी बनबाक बात,से हम हुनका मना लेबनि। तूँ निश्चिंत रहह। हम चोट्टे हुनका ओहिठाम जा रहल छी।”

दुर्योधन शल्यक शिविरमे पहुँचैत छथि। शल्य युद्धमे सामिल होएबाक लेल तैयार भए रहल छथि। हुनकर सेना से हुनका पाछू चलबाक लेल उद्यत अछि। तरह-तरहक उत्साहवर्धक गीत-नाद भए रहल अछि। एहन माहौलमे अचानक दुर्योधनकेँ आएल देखि शल्य बाजि उठैत छथि-

“अकस्मात् अएबाक कोनो विशेष कारण?”

“आइ महाभारत युद्धक निर्णायक युद्ध होमए बला अछि। एहिमे यदि अहाँक मदति भेटि जाए तँ हमर सभक विजय निश्चित अछि।”

“ई की कहि रहल छी ?हम तँ अहाँक संगे छीहे? जहिए हमर बहिन अपन पतिक संगे जरि मरलीह,तहिए सँ हमर मोन दग्ध भेल अछि। इएह

कारण थिक जे हम पाण्डवकेँ छोड़ि अहाँक संगे युद्ध करबाक निर्णय लेलहुँ अछि। फेर एहिमे दुविधा कतए अछि?"

"कहबामे कनी संकोच भए रहल अछि,तथापि कहि रहल छी। असलमे कर्णकेँ इच्छा छनि जे अहाँ हुनकर सारथी बनिअनि। ओ कहैत छथि जे यदि से अहाँ तैयार भए जाएब तखन ओ निश्चित अर्जुनकेँ पराजित कए देताह।"

दुर्योधनकेँ एतबा बजबाक देरी छल कि शल्य जोर-जोरसँ चिकरए लगलाह-

"निर्लज्ज। तोरा कनीको विचार नहि भेलहु जे की बाजि रहल छी?हम एकटा राजा थिकहुँ,एहि देशक प्रसिद्ध योद्धा थिकहुँ। हम तोरा पक्षमे युद्ध करबाक लेल आएल छी आ एहि लेल तैयारो छी। मुदा कर्ण सन नीच जातिक व्यक्तिक सारथी बनबाक लेल कदापि तैयार नहि छी?तोरा एहन प्रस्ताव हमरा देबाक साहसे केना भेलह?हम आब एक क्षण एहिठाम नहि ठहरि सकैत छी।"

से कहि ओ अपन सेनाकेँ वापस चलबाक आदेश दए देलनि आ वापसी यात्राक लेल रथ सेहो मंगा लेलनि।

आब तँ दुर्योधनक हालति बहुत खराप भए गेलनि। की करथि,किछु फुरेबे नहि करनि। ओ तुरंत शल्यक पैरपर खसि पड़लाह। ओ अत्यंत विनयपूर्वक सभक सामने मे कहलाह-

"मामाजी!

अहाँक प्रताप के नहि जनैत अछि। अहाँ दुनिआमे प्रसिद्ध योद्धा छी। मुदा अर्जुनक सारथी छथि भगवान कृष्ण स्वयं। हुनका टक्कर अहाँ छोड़ि आर के दए सकैत अछि?केओ नहि। तँ हम अपनेसँ ई आग्रह करबाक साहस

केलहुँ। हमर अपराध क्षमा कएल जाए। हम तँ पूर्णतः अहाँक कृपापर निर्भर छी। अहाँ यदि मदति कए देबैक तँ युद्धक परिणामे बदलि जाएत।"

सभक सामने अपन प्रशंसा आ कृष्णक संग तुलनासँ शल्य फुलि कए कुप्पा भए गेलाह। ओ मोंछपर ताओ दैत बजलाह-

"ठीक छैक। यदि हमरा सारथी बनलासँ तोहर विजय होइत अछि तखन हम सेहो करब। मुदा हमर एकटा सर्त कर्णकेँ मानए पड़तैक।"

बनल बात फेर नहि बिगड़ि जाए से सोचि कर्ण स्वयं बाजि उठलाह-

"हमरा अहाँक सभ सर्त स्वीकार अछि।"

"ठीक छैक तँ साफे सुनि लएह। युद्धकालमे हमरा जे मोन होएत से बाजबाक स्वतंत्रता रहत। तखन तूँ ई वा ओ नहि करियह।"

"कोनो बात नहि। अहाँकेँ जे मोन होअए से बाजब। अहाँ सभ तरहेँ आदरणीय छी। अहाँक बात सुनि लेबामे कोनो हरज नहि ।"

एहि तरहेँ शल्य कर्णक सारथी बनबाक लेल तैयार भए गेलाह। कर्णक लेल रथ सजा देल गेल। रथपर सारथीक स्थानपर शल्य बैसि गेलाह। कर्ण तँ पहिनेसँ युद्धक लेल तैयार छलाहे। शल्य रथक घोड़ाकेँ हाँकि देलनि। रथ कुरुक्षेत्र दिस बिदा भेल।

२४

कर्णक अंतिम युद्ध

मनुक्ख सोचैत अछि किछु,होइत छैक किछु। इएह हाल कर्णक संगे युद्धक्षेत्रमे शल्य केने छलनि। ओ बहुत प्रयास कए शल्यकेँ सारथी बनबओने रहथि जाहिसँ ओ अर्जुनकेँ नीकसँ टक्कर दए सकथि। मुदा शल्यो तँ छल बहुत चलाक। भीतरे-भीतर ओ कर्णसँ डाह करैत छल। जखन कखनहु शल्यकेँ

अवसर भेटैक ओ कर्णक मनोबल तोड़बाक प्रयासमे लागि जाइत छल। कुरुक्षेत्रमे ओ बेर-बेर अर्जुनक शक्तिक प्रशंसा करितथि आ कर्णक उपहास करितथि। एहि बातसँ कुपित भए कर्ण हुनका कैक बेर फज्झतिओ केलखिन। मुदा शल्य अपन काजमे लागल रहलथि। आखिर युद्धमे कर्णक सामना अर्जुनसँ भेलनि। कृष्ण अर्जुनकैँ वारंबार सतर्क केलखिन। कहलखिन-

"कर्ण कोनो मामुली योद्धा नहि अछि। ईहो बात सही अछि जे पाण्डव लोकनिमे तूहींटा ओकर सामना कए सकैत छह। मुदा एहि बातक ध्यान रहए जे एहि समयमे कनीकोटा गलती बहुत भारी पड़ि सकैत अछि। अस्तु, कर्णक संगे पूरा सावधानीसँ युद्ध कएल जएबाक चाही।"

कर्ण आ अर्जुनमे भयानक युद्ध भेल। कखनहु अर्जुन तँ कखनहु कर्ण भारी पड़ैत बुझाइत छलाह। युद्ध घमासान भेल जा रहल छल कि अचानक दुर्भाग्यवश कर्णक रथक पहिआ पृथ्वीमे धसि गेलनि। ब्राह्मणक देल गेल श्राप कर्णपर लागू भए गेलनि। ततबे नहि,हुनकर गुरु परशुरामक देल गेल श्रापक अनुसार ओ ब्रह्मास्त्र चलाएब बिसरि गेलाह। करुक्षेत्रमे निहत्था ओ अपन रथक पहिआकैँ पृथ्वीसँ बाहर करबामे व्यस्त छलाह। लाख प्रयासक अछैत रथक पहिआ टस सँ मस नहि होइत छल। एहन परिस्थितिमे कर्ण अर्जुनसँ कहलखिन-

"अर्जुन। तू वीर छह ,पुरुषार्थी छह। तैँ ई तोरा शोभा नहि देत जे एकटा निहत्थापर शस्त्र चलाओल जाए। हमर रथक पहिआ धसि गेल अछि। हम एकरा निकालि लैत छी। फेर तोरा जतेक लड़बाक मोन होअ से लड़ियह।"

कर्णक बात सुनि अर्जुन किंकर्तव्यविमूढ़ भए गेलाह। ओ एहि परिस्थितिमे कर्णपर आक्रमण करबाक पक्षधर नहि रहथि। कृष्ण हुनकर मोनक बात बुझि गेलखिन। ओ तुरंत अर्जुनकैँ सतर्क करैत छथि-

"अर्जुन ताकि की रहल छह। इएह मौका थिक । एकर बातमे नहि आबह। ई स्वयं केहन-केहन काज करैत रहल अछि से नहि बिसरह। दुर्योधनक समस्त कुकर्ममे ई सहभागी रहैत छल। एकरे कहलापर दुर्योधन वरणावतक षड़यंत्र रचने छल। एकरे कहलापर द्यूतक आयोजन भेल छल जाहिमे द्रौपदीक निवस्त्र करबाक प्रयत्न कएल गेल। एकरे कहलापर दुर्योधन युधिष्ठिरक मात्र पाँच गाम देबाक प्रस्ताव नहि मानने छल। कर्ण द्रौपदीकेँ की की ने कहलक। अभिमन्युकेँ निहत्था रहितहुँ छओटा महारथी मिलि कए ओकरा मारि देलनि। ओहिमे ईहो सामिल छल। एकरापर कोनो मात्सर्य करबाक काज नहि थिक। जल्दीसँ जल्दी एकर मृत्यु होइक से व्योंत करह,दुविधामे नहि पड़ह।"

कृष्णक बात सुनि अर्जुनक मोन बदललनि। ओ कर्णपर आक्रमण कए देलनि। जखन कर्ण देखलथि जे अर्जुन रुकि नहि रहल छथि। एहनो हालतिमे हुनकापर आक्रमण केने जा रहल छथि तँ ओ बहुत दुखी भेलाह। गंभीर सोचमे पड़ि गेलाह।

"महाभारत युद्धक आइ सत्तरहम दिन अछि। दुर्योधनक मित्रताक निर्वाह आ ओकर ऋण सधेबाक अंतिम अवसर हमर हाथसँ ससरि रहल अछि। हाय रे हतभाग्य हम!जखन हमर जीवनक सभसँ प्रमुख युद्ध चलि रहल अछि,जखन हमरा अपन प्रमुख प्रतिद्वंदी आ कौरवक लेल सभसँ पैघ संकट अर्जुनक हत्या करबाक अवसर सामने देखा रहल अछि ,हमर अस्त्र-शस्त्र काज केनाइ बंद कए देलक अछि। हमर रथक पहिआ धसि गेल अछि। हम एतेक असहाय जीवनमे कहिओ नहि अनुभव केने रही। हे विधाता! ई की कए रहल छी अहाँ? की सभटा अन्याय हमरे संग कएल जाएत?के सुनत हमर?लगैत अछि जे सभ किछु हमर प्रतिकूल भए गेल अछि। होअए कोना नहि? जकरा अपने गुरु श्राप देने होइक, जे ऐन मौकापर जखन तोरा तकर सभसँ बेसी

काज हेतह,तोरा हमरा द्वारा देल गेल सभटा ज्ञान बिसरा जेतह। ब्राह्मणक श्रापसँ हमर रथक पहिआ धसनाइ शुरू केलक आ धसिते चल जा रहल अछि। आब की होएत?हम छटपटा कए रहि गेलहुँ,मुदा किछु कए नहि पाबि रहल छी। हे विधाता! ई किएक केलहुँ? हमरा एना अनाथ किएक बना देलहुँ। जीवन भरि हम भाग्यसँ लड़ैत रहि गेलहुँ। बिना कोनो दोषकेँ सदति अपमानित होइत रहलहुँ। आर तँ जे भेल,से भेल जन्मदातृ कुंती,जे अविवाहित राजकन्या छलीह,अपन लोकलाज बँचेबाक लेल हमरा गंगामे प्रबाहित कए देलीह। एहन निष्ठुर छलीह ओ। यदि हम आइ जीबैत छी,दुनिआमे किछु कहबैत छी,पृथ्वीपर श्रेष्ठतम योद्धामे गनल जाइत छी तँ ओकर श्रेय माता राधेक छनि। हम सही मानमे राधेय छी आर किछु नहि। आब जखन हमर मृत्यु अवश्यंभावी लागि रहल अछि,हमर जीवनक अंतिम क्षण समीप अछि,हमरा एक्केटा अफसोच अछि जे हम माता राधाक ऋृण नहि चुका सकलहुँ। हुनकर संतान कहेबाक हमर अधिकारपर सेहो ग्रहण लागि गेल अछि। आब एतेक किछु भेलाक बाद जेना-जेना महाभारत युद्ध लगीच आबि रहल छल तेना-तेना कुंतीकेँ हमर माता घोषित करबाक जेना अन्हड़ उठि गेल । मुदा हम की कए सकैत छलहुँ? ई तँ राधाक संग अन्यायक पराकाष्ठा होएत। जीवन भरि जे हमर संग देलथि,पालन-पोषण केलथि,तिनका कोना बिसरि सकैत छलहुँ?केओ कतबो पैघ होअए,हमरा किछु भेटि जाओ,मुदा ओ सभ किछु माता राधाक प्रति सिनेहक आगू व्यर्थ थिक। नहि,नहि। हम आर किछु नहि,बस राधेय मात्र छलहुँ,छी आ रहब।

राधाक ध्यान अबितहि जीवन भरिक दृश्य हमरा स्मृति पटलपर धराधर जीवंत भए गेल अछि। युद्ध क्षेत्रमे ,एहन असमयमे ई सभ किए भए रहल अछि? अर्जुन आ कृष्ण अन्याय करबापर अड़ल बुझाइत छथि आ हम माता राधाक सोचमे पड़ि गेल छी। हे माता राधा! हम साइत अहाँक ऋृण

एहि जन्ममे नहि चुका सकब। हम बस एतबहि अभिलाषा लए एहि दुनिआसँ बिदा लेबए चाहैत छी जे जन्म,जन्म हम अहींक संतान होइ,अहींक कोरामे खेलाइ,हमर पिता अधिरथे होथि। हमरा आर किछु नहि चाही।”

कर्णक स्थिति देखि अर्जुनो धुकचुका रहल छलाह। मुदा पाछूसँ कृष्ण इसरा केलखिन।

“यदि तूँ एखन चुकि गेलह तँ फेर कहिओ कर्णकेँ पराजित नहि कए सकबह। तूँ हमर बात मानह आ बिना विलंबकेँ एकर खेल समाप्त करह।”

आखिर अर्जुन कृष्णक बात मानि मोने-मोन हुनका प्रणाम कए अंझलिकास्त्र कर्णपर चला देलनि। देखिते-देखिते कर्णक मुरी कटि कए पृथ्वीपर खसि पड़ल। चारू कात खूनक धार बहि रहल छल। कर्णक मृत्युक समाचार कुरुक्षेत्रमे बिजलओका जकाँ पसरि गेल। युधिष्ठिर सहित अन्य पाण्डव लोकनि बहुत प्रसन्न भेलथि। सभ अर्जुनक जय-जयकार कए रहल छलाह। ओमहर दुर्योधन ई समाचार भेटितहि मुर्क्षित भए गेलथि। भगवान सूर्य सेहो तुरंत अस्ताचलमे विलीन भए गेलाह। समस्त पृथ्वीपर हाहाकार मचि गेल। चिड़ै-चुनमुन पर्यंत कर्ण सन महावीरक मृत्युपर शोक प्रकट कए रहल छल। समस्त वातावरण दुखी छल आ दुखी छलीह कुंतीओ।

अमर अछि कर्ण सभ दिन!
रक्त रंजित कुरुक्षेत्रमे
पड़ल छथि कर्ण
बाँचल छनि किछु साँस
भीतरसँ अबै छनि अबाज -
नीचता केलह अर्जुन

निहत्था छलहुँ हम
धसल रथ नियतिवश
निष्फल छल अस्त्र-शस्त्र
 ब्रह्मास्त्र पर्यन्त
परशुरामक अभिशापवश
निहोरा केलिऐक-
अर्जुन! कनी सबर कर
धसि गेल अछि रथ
ब्राह्मणक श्रापसँ
ओ थकमकाएल जरूर
आखिर वीर छल,
पुरुषार्थी छल
रणमे निपुण छल
मुदा कृष्ण कहलथि-
अर्जुन! ई समय
 ममताक नहि
नहि बिसर जे इएह
अभिमन्युक वध केलक
छओटा महारथी मिलि
भेसि देलक तरुआरि

ओकर छातीमे

करैत रहि गेल गोहारि

ई कोन न्याय छल?

इएह कहने छल

वैश्या द्रौपदीकेँ

चीरहरणमे छल सामिल

दुर्योधनक समस्त नीच कर्मक

पाछू इएह छल

ठाढ़ चट्टान सन

क्षमाक योग्य नहि अछि

नहि पड़ह एकर मोहमे

इएह थिक अवसर

चलाबह वाण गाण्डीवसँ

अर्जुन चला देलक अंझलिकास्त्र

छोपि देलक गर्दनि

छी मृतप्राय कुरुक्षेत्रमे

सोचिते जा रहल छी

ई अन्यायी संसार

नहि देलक सम्मान

जकर पात्र हम छी

छलहुँ हम सूर्यवंशक
मुदा सूतपुत्र कहि
अपमानित केलक सदिखन
क्रूड़ता केलनि माता पर्यन्त
नहि बूझि सकलथि
हमर दुख ऋषि परशुराम
जे लड़ि रहल छी
अन्यायसँ हुनके जकाँ
असगर,एकदम असगर
मुदा भेल की?
सहलहुँ अन्याय एकतरफा
अकारथ भेल पुरुषार्थ
जे होएबाक छल से भेल
नियतिवश
ई संसार किछु नहि
भाग्यक खेलटा अछि
रहलहुँ भाग्यहीन सभदिन
मारल जा रहल छी छलसँ
मुदा अर्जुन नहि बिसरह
जितिओ कए हारि गेलह

भने हम जा रहल छी
एहि भुवनसँ
मुदा जुग-जुग धरि
लोक गाओत हमर कीर्तिगाथा
अबिते रहत अबाज
कुरुक्षेत्रसँ-
कर्ण तूँ सचमुच महान छह
बेजोड़ दानी, हृदयवान छह
एहन योद्धा ने कहिओ भेल
ने होएत फेर कहिओ
जा धरि रहत वसुधा
अविचल रहत यश
सभ एतबहि कहत
हारल अछि अर्जुन
मरिओ कए मरल नहि
अमर अछि कर्ण सभ दिन।

२५

कर्णक सपना

महाभारत युद्धक एक महत्वपूर्ण अध्यायक पटाक्षेप भए रहल अछि। दर्योधनक अभिन्न मित्र,भारतवर्षक अग्रगण्य योद्धा आ पाण्डव लोकनिक ज्येष्ठ भ्राता कर्णक अंतिम साँस चलि रहल छनि। हुनकर सौंसे देह खूनसँ लथपथ

छनि। ओ अर्धमुर्क्षित छथि। हुनकर आँखि मुना रहल छनि। शरीर सिथिल भेल जा रहल छनि। ओही अवस्थामे ओ जेना सपना देखि रहल छथि। हुनका अचानक लगलनि जेना महाभारतक संपूर्ण परिदृश्य बदलि गेल अछि। ओ चकित छथि जे आखिर ई भेल कोना? जखनसँ हुनकर जन्मदात्री कुंती हुनकासँ एसगरिमे भेंट कए हुनकर असली परिचय देलखिन आ आग्रह केलखिन जे ओ ज्येष्ठ पाण्डवपुत्र होएबाक अपन कर्तव्यक निर्वाह करथि,तखनहिँ ओ बेचेन भए गेल रहथि। एहन बात नहि रहैक जे ओ कुंतीपर तमसेलथि नहि,अपितु बहुत किछु अनट सेहो कहि देलखिन। मुदा आखिर माए तँ माए होइत छथि। कुंतीक आँखिसँ झहरैत नोर हुनकर हृदयकेँ द्रवित कए देलकनि। ओ माताक पैरपर खसि पड़लथि। हुनको आँखिसँ नोर झरि रहल छनि। ओ कोराक बच्चा सन निरंतर कानि रहल छथि, मातासँ अपन उदण्डताक लेल क्षमा मांगि रहल छथि। कहैत छथि-

"माते!हम जे किछु केलहुँ से प्रतिक्रियामे केलहुँ। जेहन-जेहन परिस्थितिक सामना हमरा करए पड़ल ताहिमे केओ उद्वेलित भए सकैत छलाह। मुदा जे भेल से भेल। आब हम सभ किछु बिसरि जएबाक लेल तैयार छी। हम अहींक संतान छी आ रहब। तकर माने ई नहि जे हम राधा आ अधिरथक अपमान करबनि,ने हमर दृष्टिमे हुनकर महत्व कमतर भए जेतनि। ओ हमरा लेल जहिना आदरणीय छलाह,तहिन रहताह। मुदा अहाँ हमर जन्मदात्री छी। अपन खूनसँ हमर निर्माण केने छी तेँ हम ओ ऋृण चुकाएब। अहाँक आज्ञा अबस्स मानब।"

कुंती वापस अपन स्थानपर जा चुकल छथि। आब कर्ण असगरे गंगाक कछारसँ नहु-नहु वापस आबि रहल छथि अपन घर दिस। मुदा ई की? हुनकर पैर अचानक पाण्डव लोकनिक शिविरमे पहुँचि जाइत छनि।

सामने छथि युधिष्ठिर आ हुनकर चारू भाए। ताधरि कुंती सेहो ओतए पहुँचि जाइत छथि। अचानक ओ बाजि उठैत छथि-

"युधिष्ठिर। ताकि की रहल छह? अपन ज्येष्ठ भाएक स्वागत करहुन।ओ तोरेसभसँ भेंट करबाक लेल आएल छथि। "

"अहाँ मुँहे ई की सुनि रहल छी हम?अहाँ स्वस्थ तँ छी ने?"

"एकदम सही सुनि रहल छी। हमही छी हिनको माए। ई सभसँ जेठ छथि। आइसँ इएह हेताह पाण्डुकुलक कर्ता-धर्ता। इएह बनताह हस्तिनापुरक नरेश।"

"मुदा ई भेलैक कोना?यदि ई सत्य अछि तखन हमरासभकेँ एकर जनतब पहिने किएक ने देल गेल?हमसभ हिनका अनेरे अनादृत करैत रहलिअनि। हिनका संगे अनुचित व्यवहार केलिअनि। हम आब ई सभ देखि कोना जीबू?किएक ने जमुनाजीमे जा कए तुरंत प्राणहन्त कए ली?"

"इएह तँ गड़बड़ी अछि अहाँमे। ई नहि बिसरू जे हम एकटा स्त्री छी। अहाँक माए होएबासँ पहिनहु हमर जीवन छल। लोकलाजवश हम एकर चर्चा अहाँ लोकनिक सामने नहि कए सकलहुँ। करबो कोना करितहुँ?"

कुंतीक बात सुनि युधिष्ठिर तुरंत उठैत छथि आ कर्णक पैरपर खसि पड़ैत छथि।

"क्षमा करू ज्येष्ठ पाण्डव। देरीए सँ सही,मुदा अपन लोककक भेंट अतिशय आनन्ददायी होइत अछि। हमसभ अहाँक एहिठाम उपस्थितिसँ बहुत गौरवान्वित छी, अहाँक पाण्डव परिवारमे हृदयसँ स्वागत करैत छी।"

ओहिठाम उपस्थित समस्त पाण्डव परिवारक समक्ष युधिष्ठिर घोषणा करैत छथि-

“आब जखन कर्णक वास्तविक परिचयक जनतब हमरा लोकनिकेँ भए गेल अछि आ ओ पाण्डव परिवारमे सामिल भए गेल छथि, महाभारत युद्धमे ओएह हमरा लोकनिक सेनापति हेताह। ईहो तय अछि जे युद्धमे विजयक बाद ओएह हस्तिनापुरक राजा हेताह। हमसभ शेष पाँचो भाए संपूर्ण शक्तिसँ कर्णक पाछू ठाढ़ रहबनि। हमरासभक दृढ़ विश्वास अछि जे कर्णक नेतृत्वमे हमरा लोकनिक विजय निश्चित अछि। दुर्योधन सहित समस्त कौरव लोकनिक पतन हेतनि। हमरा लोकनिक संग धर्म छथि। तैँ हमरसभक विजय निश्चित अछि। यतोधर्मः ततो जयः।”

युधिष्ठिरक घोषणा सुनि कर्ण एकबेर चिंतित भए जाइत छथि । असलमे हुनका दुर्योधनकेँ देल गेल अपन वचन मोन पड़ि जाइत छनि। होइत छनि जे ओ अपन निर्णयसँ हटि रहल छथि। संयोगसँ भगवान कृष्ण ओहि समयमे ओतए पहुँचि जाइत छथि। हुनका देखितहि कर्ण सहित सभ पाण्डव हुनका प्रणाम करैत छथि। कुंती हुनका देखि अतिशय प्रसन्न होइत बजैत छथि-

“सही समयपर अएलहुँ । अहीं हाथे कर्णक राज्याभिषेक कराओल जाएत।”

“अहाँ एतेक हड़बड़ाएल किएक छी?पहिने युद्धक परिणाम तँ आबए दिऔक।”

“आब जखन कर्णो हमरासभक संगे अछि तखनो युद्ध होएबे करत की?दुर्योधनक मनोबल तँ समाप्त भए चुकल होएत। आब तँ सोझे कर्णक नेतृत्वमे हमरा लोकनिक विजयक घोषणा बाँकी अछि।”

“अहाँकेँ दुर्योधनक स्वभाव नीक जेना बुझल अछि। ओ बहुत जिद्दी अछि। जा धरि ओकर साँस चलैत अछि ओ लड़त,कदापि हारि नहि मनात। फेर ओकरा संग अखनहु एक सँ एक महारथीसभ छथिहे।”

कृष्णक वचन सुनि कए कुंती बहुत चिंतित भए गेलीह। कृष्ण हुनकर चिंताकेँ बुझलखिन। ओ बिना विलंबकेँ कुंतीक कानमे किछु कहलखिन। कुंती एहिसँ बहुत आश्वस्त भेलीह। कृष्ण सहित सभ पाण्डव लोकनि युद्धक तैयारीमे लागि जाइत छथि। कर्णक पक्ष परिवर्तनक सूचना दुर्योधन सहित हुनकर समस्त शुभचिंतककेँ परेसान कए दैत छनि। मुदा भीष्म पितामह भीतरे-भीतर प्रसन्न छथि। ओ दुर्योधनकेँ बुझबैत छथि-

“हम तँ तोरा पहिने कहने रहियह जे कर्णक बलेँ तूँ युद्धमे नहि पड़ह। मुदा हमर बात नहि मानलह। आब भोगह।”

भीष्मक बात सुनितहि दुर्योधनकेँ जेना आगि लागि गेलनि। ओ चिकरि उठलाह-

“पितामह!हम अहाँकेँ बेर-बेर कहि चुकल छी जे अहाँ स्वयं समस्या छी। अहाँ छी हमर सेनापति आ विजयकामना पाण्डवक करैत रहैत छी। हम अपना बले युद्धमे जा रहल छी आ अपने बले एकरा जीतबो करब।”

कर्णक सपना चलिते जा रहल छनि। कर्णक पाण्डव परिवारमे सामिल होएबाक बाद युद्धक क्रममे कर्णक सामना दुर्योधनसँ होइत छनि। कर्ण हुनका देखितहि रथ रोकि दैत छथि आ सभक सामने मे दुर्योधनसँ गला मिलैत छथि। दुर्योधन सेहो हुनका देखि बहुत भावुक भए जाइत छथि।

“हम भने पाण्डव परिवारमे सामिल भए गेल छी,मुदा हम अहाँक मित्र छी आ रहब। मित्रताक ऊपर किछु नहि। हम ई राज अहाँक चरणमे राखि रहल छी।”

“की कहि रहल छी मित्र कर्ण। अहाँ पाण्डवेक नहि हमरो लोकनिक ज्येष्ठ छी। हमहूँसभ अहींकेँ अपन राजा मानैत छी। आब युद्धक कोनो प्रयोजन

नहि अछि। युद्ध तुरंत बंद होएबाक घोषणा कएल जाइत अछि। आब हस्तिनापुरक विभाजन नहि होएत। संपूर्ण हस्तिनापुरक राजा छथि-कर्ण।”

दुर्योधनक एहि घोषणासँ महाभारत युद्ध तत्काल समाप्त भए जाइत अछि। कृष्णक उपस्थितिमे ज्येष्ठ पाण्डव कर्णकेँ हस्तिनापुर नरेश बनाओल जाइत छनि। द्रौपदी हुनकर बाम भागमे विराजित छथिन। युधिष्ठिर सहित सभ पाण्डव,कौरव लोकनि हुनकर दुनू कात ठाढ़ छथि। ब्राह्मण लोकनि मंत्रोच्चार कए रहल छथि। समस्त वातावरण आनन्दमय अछि। हस्तिनापुर नरेश कर्णक जयक नारा चारू कात गुंजित भए रहल अछि। कुंती एहि अनुपम दृश्य देखि बहुत प्रसन्न छथि। एतबहिमे युद्धक्षेत्रमे भीम शंखनाद कए पाण्डवक विजयक घोषणा करैत छथि। कर्णकेँ जोरसँ हिचुकी होइत छनि आ सभ किछु समाप्त भए जाइत अछि।

२६

युधिष्ठिरक श्राप

कर्णक गला कटि चुकल छल। चारू कात शोक मनाओल जा रहल छल। कर्णक मृत्युक बाद दुर्योधन शल्यकेँ सेनापति बनओलथि। ओही दिन ओहो मारल जा चुकल छलाह। भीम गधायुद्धमे दुर्योधनकेँ पराजित कए हुनकर जांघ तोड़ि चुकल छलाह। एहनो हालतिमे ओ अश्वत्थामाकेँ अपन सेनापति बनओलाह। अश्वत्थामा प्रतिशोधक आगिमे जरि रहल छलाह। अपन पिताक हत्याक बदला लेबाक छलनि। रातिए मे पाण्डवक शिविरमे आगि लगा देलनि। पाँचो पाण्डवपुत्र लोकनिक सुतले मे हत्या कए देलनि। बाँचल की?किछु नहि। पाण्डव पाँचो भाए जरूर जीबित छलाह,मुदा युद्धोपरांत कोनो दशामे नहि छलाह। कौरव पक्षसँ मात्र कृपाचार्य,अश्वत्थामा आ कृतवर्मा बाँचि सकलथि। चारूकात हाहाकार मचल छल। जेम्हरे देखू लास भरल पड़ल छल। संपूर्ण कुरुक्षेत्रमे खूनक धार बहि रहल छल। केओ लाससभक अंतिम

संस्कार केनिहार नहि छल। एहन परिस्थितिमे युधिष्ठिर अपन कुल,परिवारक मृत लोकनिकेँ नदीमे पिण्डदान कए रहल छलाह। ओ बेरा-बेरी अपन कुटुम्बसभक पिण्डदान कए लेलथि। आब जलसँ बाहर होइतथि कि कुंती अबाज देलखिन-

"युधिष्ठिर, कर्णक पिण्डदान सेहो कए दहुन।"

"ई की बाजि रहल छी अहाँ? शत्रु पक्षक प्रबल समर्थक सूतपुत्रक पिण्डदान? ई काज हम कोना कए सकैत छी?"

"ओ सूतपुत्र नहि,कौंतेय छल।"

"कौंतेय?"

"हँ,हँ ओ हमर ज्येष्ठपुत्र छल। हम जखन कुमारिए रही,तखनहि दुर्वासा मुनि द्वारा देल गेल मंत्रक प्रभावसँ सूर्य प्रकट भेल रहथि। तखनहि हुनकर सृजन भेलनि। एहि तरहेँ अतिशय तेजस्वी वालकक जन्म भेल। मुदा लोकलाजवश हम हुनका नदीमे बहा देलिअनि। ओ जीबि गेलाह,एतेक पैघ वीर भेलाह आ महाभारत युद्धमे मारल गेलाह,ई सभ भाग्यक खेल छल।"

"यदि ओ हमर ज्येष्ठ भाए छलाह से हमरा पहिनहि किएक नहि कहलहुँ?हम सहर्ष हुनका अपन राज दए दितिअनि। ई युद्ध होएबे नहि करैत। अहाँ एहि बातकेँ हमरासँ गुप्त राखि महान अनर्थ केलहुँ । एहिसँ पैघ अन्याय भइए नहि सकैत अछि। एहि अपराधक लेल हम अहाँकेँ कहिओ क्षमा नहि कए सकैत छी। हे हमरा नहि कहि सकलहुँ,मुदा कर्णेकेँ कहि दितिअनि। तखनहु ई हालति नहि होइत।"

"हम कर्णकेँ ई बात कहलिअनि। मुदा ओ हमरा संगे पाण्डव कुलमे वापस अएबाक लेल तैयार नहि भेलाह। मुदा भावी युद्धमे अर्जुन छोड़ि शेष चारि भाइकेँ प्राणदान देबाक आश्वासन जरूर देलनि।"

कुंतीक बात सुनि कए युधिष्ठिर बहुत दुखी भए गेलाह। हुनका आब बुझा रहल छलनि जे युद्धमे हरा देलाक अछैतो किएक चारू भाएक प्राण कर्ण बकसि देने छलाह। कर्ण सचमुचकेँ महान छलाह। एतेक प्रतिकूल परिस्थितिओमे वचनकेँ पक्का रहलाह। हुनकर स्मृतिमे युधिष्ठिर रहि-रहि कए भोकारि पारि कए कानि रहल छलाह। मोन अफसोचसँ भरल छलनि। कुंतीक प्रतिए हुनका मोनमे बहुत तामस छलनि। ओ समस्त नारी जातिकेँ श्राप दैत छथि-

"आइसँ कोनो स्त्री अपन पेटक बात गुप्त नहि राखि सकत।"

तकर बाद ओ नदीमे कर्णकेँ पिण्डदान करैत छथि। हुनकर आँखिसँ नोर झहरि रहल छनि। कर्ण सहित समस्त मृतात्माकेँ एक बेर फेर प्रणाम कए ओ नदीसँ बाहर होइत छथि।

माता कुंतीक व्यवहारसँ कुपित युधिष्ठिर भने संपूर्ण स्त्री समाजकेँ श्राप दए देलथि,मुदा एहिसँ हुनकर आत्मा शांत नहि भेलनि। चारू कात मचल हाहाकार,विधवा लोकनिक करुण क्रन्दन,लाखों अनाथ बच्चासभक चीत्कार सुनि-सुनि हुनकर हृदय विदीर्ण भए गेल छल। ओ हस्तिनापुरक राजा बनबाक लेल कदापि तैयार नहि रहथि। हुनकर इच्छा रहनि जे सभ किछु छोड़ि कतहु एकान्तमे चलि जाइ। कृष्ण द्वारा बहुत बुझओलापर ओ अंततःराजा बनबाक लेल तैयार भेलथि।

२७

युद्धोपरांत

महाभारत युद्धक विभीषिकासँ संतप्त धृतराष्ट्र,गांधारी,विदुर आ कुंती हस्तिनापुर छोड़ि जंगल चलि जाइत रहलाह। युधिष्टिर कतबो आग्रह केलखिन,कुंती नहि मानलखिन। ओहो हुनकेसभक संगे जंगल चलि

गेलखिन। जंगलोमे हुनकर आत्मा शांत नहि रहनि। रहि-रहि कए कर्णक संग कएल गेल अन्यायक लेल हाहाकार करनि। ओ कतबो प्रयास करथि,मोनमे चैन नहि होनि। एक दिन व्यास मुनि हुनका लोकनिक जंगलमे अवस्थित कुटीपर अएलखिन। संयोगसँ पाण्डव लोकनि सेहो ओहिठाम आएल रहथि। कुंती व्यासकेँ अपन मोनक बात कहलखिन-

"हे मुनिवर! अहाँ सर्वज्ञ छी। अहाँसँ किछु छिपल नहि अछि। जहिआसँ अर्जुन कर्णक हत्या कए देलनि,हम बहुत अशांत छी,दुखी छी। हमरा लगैत रहैत अछि जे कर्णक संग कएल गेल समस्त अन्यायक कारण हमही छी। हमर इच्छा अछि जे कर्णसँ एक बेर भेंट करी। ओकरासँ क्षमा मांगी। तखनहि हमर मोनमे शांति भए सकैत अछि।"

"चिंता नहि करू। अहाँक मनोकामना अबस्स पूरा होएत। आजुक रातिमे अहाँसभ हमरा संगे नदीक कातमे चलू। ओतहि एहि युद्धमे मारल गेल परिवारक सभगोटे भेटि जेताह।"

व्यासक आदेशानुसार सभ गोटे रातिमे नदीक कातमे पहुँचलाह। व्यास मुनि सेहो संगे रहथिन। अर्द्धरात्रिमे नदीक पानिसँ युद्धमे मारल गेल कौरव सहित कर्ण अपन चिर-परिचित भेषमे पानिसँ बेरा-बेरी बाहर भए गेलाह।

कर्णकेँ नदीसँ निकलैत देखि कुंतीक प्रसन्नताक अंते नहि छल। ओ कर्णकेँ हृदयसँ साटि लेलनि। ओ निरंतर कानि रहल छलीह। कर्ण सेहो बहुत सुखी आ संतुष्ट रहथि। माताकेँ सादर प्रणाम केलथि । ओ हुनका शीघ्र स्वर्गलोक अएबाक आग्रह केलखिन। कौरव पाण्डव सभ भाइ एक-दोसरसँ बहुत प्रेमसँ भेंट केलनि। पुरनका बातसभकेँ बिसरि बहुत आनन्दपूर्वक एक-दोसरक हाल-चाल पुछलनि।

युधिष्टिर ज्येष्ठ लोकनिकेँ प्रणाम आ छोटसभकेँ आशीर्वाद देलखिन। कर्णकेँ प्रणाम करैत काल ओ बहुत भावुक भए गेलथि-

“अहाँ हमर ज्येष्ठ भाए छी। हमरा से नहि बुझल छल। अज्ञानतामे,तामसमे हम कतेको बेर अहाँकेँ अनुचित बात कहलहुँ। ई सभ हमर माताक कारण भेल। हुनका ई बातसभ पहिने कहबाक चाहैत छलनि। यदि ओ से करितथि तँ भारतक भविष्य किछु आर रहैत। हम लाख प्रयास करैत छी,हमर मोन शांते नहि होइत अछि। हम दिन-राति इएह बात सभ सोचैत रहैत छी। हमरा अहाँ एहि अपराधक लेल क्षमा करू।”

“अहाँ बेसी नहि सोचू। भाग्य बहुत प्रबल होइत अछि। जे हमरा भाग्यमे छल से भेल। केओ तकरा बदलि नहि सकैत छल। आब ताहि बातकेँ मोन पाड़ि-पाड़ि अहाँ दुखी नहि होउ। बीतल बातसभकेँ बिसरि अपन राज-काजमे लागू। जन कल्याण करू। हमहूँसभ स्वर्गलोकमे बहुत सुखी छी। उचित समय अएलापर ओतहि अहूँक आगमनक प्रतीक्षा करब।”

आब भोर भए रहल छल। कर्ण सहित समस्त मृतात्मा वापस स्वर्ग लोक चलि जाइत रहलाह। कुंती,गांधारी,धृतराष्ट्र अपन कुटीपर चलि जाइत रहलाह। युधिष्ठिर सहित हुनकर चारू भाए हस्तिनापुर लौटि गेलाह। युधिष्ठिर रस्ता भरि कर्णक बारेमे सोचैत रहि गेलाह।

२८

भाग्य आ पुरुषार्थ

कर्णक जीवन भाग्य आ पुरुषार्थक बीच निरंतर संघर्षक कथा अछि। जन्मसँ मृत्यु धरि हुनकर जीवन यात्रा कंटकाकीर्ण रहल, मुदा ओ कखनहु हारि नहि मानलाह। यद्यपि हुनकर भाग्य सदिखन प्रतिकूले होइत गेलनि,मुदा ओ तकरा वीरतापूर्वक सामना केलनि। अपन निश्चयसँ कखनहु नहि हटलथि। द्रोणाचार्य हुनका शिक्षा देबामे पक्षपात केलखिन। परशुराम हुनकर जाति जानि हुनका श्रापे दए देलखिन। हुनकर दुर्भाग्य एतहि समाप्त नहि भेलनि । संयोगवश भेल बछरूक हत्याक कारण ब्राह्मण से हुनका श्राप दए देलखिन। मुदा ओ एहिसभसँ विचलित नहि भेलाह। अपन पुरुषार्थपर निरंतर विश्वास केलनि। ओ अंत-अंत धरि अपन मित्र दुर्योधनक प्रति निष्ठावान बनल रहलाह। यद्यपि हुनका पहिने कृष्ण आ बादमे कुंती अपन जन्म प्रसंग बता कए पक्ष बदलबाक बहुत प्रयास केलनि। मुदा ओ अडिग रहलाह। जीवन भरि ओ अपन सिद्धांत संग जीलाह आ तकरे रक्षार्थ मरिओ गेलाह। ओ कुंतीकेँ वचन देलखिन जे हुनकर चारिटा पुत्रकेँ युद्धमे नहि मारथिन तँ से नहि मारलखिन। युद्धमे अवसर अएलाक बादो हुनका सभक प्राण हरण नहि केलखिन,जखन कि भीम हुनकर सातटा पुत्रकेँ मारि चुकल रहथि। कहाँ भेटत एहन उदाहरण?

कर्ण जेहने वीर छलाह,तेहने दानीओ रहथि। ई जनितहु जे इन्द्र हुनका संगे छल कए रहल छलखिन,ओ अपन देहसँ कवच-कुंडल निकालि ब्राह्मण भेषधारी इन्द्रकेँ दान कए देलखिन।

कर्णक मृत्यु एक युगांतक कथा अछि—जाहिमे भाग्य, सामाजिक विडंबना आ आत्मबलक अद्भुत समागम देखाइत अछि। हुनकर जीवन एक प्रश्न बनि कए रहि जाइत अछि—की ओ सूतपुत्र छलाह, की सूर्यपुत्र? की ओ

शत्रु छलाह, की भ्राता? मुदा एक बात निर्विवाद अछि—ओ एक महान आत्मा छलाह, जे जीवन भरि अपन वचन, धर्म आ स्वाभिमानक रक्षा केलनि। कर्ण सन महान आत्मा एहि पृथ्वीपर साइते अबैत छथि, अपन कृत्यसँ जुग-जुग धरि मोन राखल जाइत छथि। हजारों वर्ष बीति गेलाक बादो ओ मानव मोनकेँ ओहिना झंकृत करैत छथि,सोचबाक लेल विवश करैत छथि,जेना कि ई घटनासभ तुरंते घटित भेल होइक। कर्ण सरपहु अमर छथि। वीरता, त्याग आ निष्ठाक अमर प्रतीक बनि ओ जुग-जुग धरि स्मृतिमे बनल रहताह।

२९

श्रद्धांजलि हे महापुरुष!

कर्ण छलथि महावीर
शौर्य, पुरुषार्थसँ परिपूर्ण
मुदा रहथि भाग्यहीन
जन्मसँ मृत्यु धरि
संग नहि देलकनि भाग्य
राजकुलमे जनमिओक
कहबथि सूतपुत्र
अपमानित भेला जीवन भरि
छलपूर्वक लेलथि कवच-कुणडल
अर्जुनक पिता इन्द्र
सेहो दए देलथि
बिना अफसोचकेँ
जीवन भरि तकैत रहलाह जननीकेँ
जखन युद्ध होइतै प्रारंभ
पाण्डव छलाह चिंतित
कर्णक शौर्य आ पुरुषार्थसँ
कृष्ण ,फेर कुंती स्वयं
खोलि देलखिन रहस्य

जे तूँ छह कौंतेय

नहि,नहि ,

हम छी राधेय

बस राधेयटा

आर किछु नहि

तैओ देलखिन आश्वासन

नहि वापस केलखिन

खाली हाथ कुंतीकेँ

बनल रहतीह सदिखन

पाँच पुत्रक माए

मरब हम वा अर्जुन

भावी युद्धमे

निष्ठावान मित्र

चुकबैत रहलाह जीवन भरि

उपकारक ऋण

मनोबल तोड़बाक षड़यंत्रमे

सामिल छलाह शल्य

करैत रहलथि हतोत्साहित

युद्धक बीचमे

ब्राह्मण, परशुरामक श्राप

भए गेल सक्रिय
फँसल रथ माटिमे
ब्रह्मास्त्रो छल फेल
कृष्णक परामर्शपर अर्जुन,
चला देलनि अंझलिकास्त्र
निहत्था कर्णपर
छोपि देलनि गला
भेलै बहुत अन्याय
मुदा की करबै
सभ छलै भाग्यक खेल
कर्ण बेसक मारल गेलाह
मुदा छथि जीबित अखनहुँ
लोकक हृदयमे
हजारों साल बादो
करै अछि यशगान
एहन वीर ने भेल
ने फेर संभव
ओ छथि अमर
सतत् आदरणीय महावीरकँ !
अर्पित अछि विनम्र श्रद्धांजलि!

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

दीप जरैत रहए(उपन्यास)

https://t.ly/nU_E.

ठेहा परक मौलाएल गाछ(उपन्यास)

https://bit.ly/4ogK2jQ

पटाक्षेप(उपन्यास)

https://bit.ly/4qAZ99l

जयतु जानकी(उपन्यास)

https://bit.ly/3LLCXq7

यज्ञसेनी(उपन्यास)

https://bit.ly/4oLqnZl

सूर्यपुत्र(उपन्यास)

https://bit.ly/3JG4oUL

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.

Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

The Ganges Whispers (Novel)

https://store.pothi.com/book/rabindra-narayan-mishra-ganges-whispers/

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।